

हास्त्री रामचञ्च दीनानाप तथा श्रावक कचरानाइ गोपालदास या ग्रथ मने १७६७ मा २५ मा खानट ममाणे रजिष्टर कराज्यों छे ता १७-११-१७ए० सबत १ए४७ ना कारिक श्रुटि ५ ॥ वराग्यरताकर भाग १ किम्मत् रु (एक रुपियो) उपादी प्रसिद्ध प्रतमार

y, apagagagan, ng paggang pagg वि व to ~ हें हो ण ए 1 중 젊. E V ty 下信 **の** 9 क क W V 學學 ww मम ० त 南河 उ रा ∞ ा उ र ज 刘 P 72 शास्त्री ರಾ ವಾ * 40 HD G फ पा 标 FY ¥ कि स क क ॥अथ 15 <u>ത</u> क ज (0) ho v to w थि जी त न र्भ क ह ह হ অ र ज क्र ह 15 m 巨可 TO 3

			a and ha	1 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10
A 4. 82 4 8 46	* . \$ 3 3 5 5 5 5	(2 4 4 45 136)	ark British	1 A. W CAL
	₽₹	## ## =	ho (C.	Fo Er
	heo 🕶	1. 1.	to the	
	15.4 m	ह इ	म्ये ज	H =
==	hay	इंड	E he	HD 图
le →0	[D -∞	क्र दु	too to	too le
	Moo		HU	त्र स
ल- ची	600	E T	مط معا	य म
रेड गज	***	× ×	pour profit	hr :-
	नश्चरत १००१	ह द	किय क्रिय	申期
रू खे	क्र इस		wo to	te F
15 10		五五	'ভা 'মা	H F
48 m	अय १२	क्र है	15° 16'	HE E
156 206	द्धि वा	ह दु	ণ্ন খ্বা	कि ह
	के या	品和	Do to	मृत्यु कृतम्
कि ना	lug Cas	日本	ण्या प्व	를 귀
医壁	क व	স সা	של מינא	
कि क		to at	এ গ্ৰ	를 되
	5 5	to w	₽º ÞÞ	15 L
क्र स	医夏	कि ज्	कि फ	新
H F 20	# 北	प च	कि कि	क्षे वार

<u>የተትኞኞች</u>ችላቸችላቸች የተጀም አንግ የሚያው የተመቋም ነው።

وساؤه فالوساؤه مرالاساليد مجارات		jaganjanjanjan jaganjanjanjan	424-5/525-5/63/53/63/63/63/63/63/63/63/63/63/63/63/63/63	**********
मुं देव	104 5	म ही	रंग हुन	प् र
वंश	温息	न व	जिस्ली	एय ज्य
当上	्य हुन	= =	िक कि	明明
च स	ब्रंच	वि ज्यो	D(以 = =	एम ण्स
ग्यं	संस्	ेवं च्ला		= =
न हा	(4) 4:1 (4) 4:1	न्द्र मिं _।	শ্ব হা	10 kg
==	= =	लेय श्य	= = hvo kg	ह्य
न ज	त्व छ	नुं रेजा	his to	==
च स	軍軍	न स	ह्य = =	प म् न्य
= = tr []	स स	म् द	स्र ह	क्य भूस
देव कप्त	मं स	नं मा	फ्य	भ भ्य
रूप	januari general	= =	= =	= =
मू भू	स्य व	भ ज	न्न ह	स्म मल
द्वा	ज ह	म् स	मिट है	ह्म क्ल हम्
r				<u> </u>

الاسلام ليام وميان الانامساد	and a branch	Server Server Ser	164 9 9 7 7 4:	Karanita nast.	
हे ह	ho 5	pa R	वह	き	
her la	র ম	क्र व्यास	¥ #	五百	
म डा	==	har by	==	될권	
R R	म स	्रें स	मं	==	
म स	ब हो	सं द्या	H H		
	म स	संस् स	न न	च छ	
अ अ			न पु	इ ध	
मम	च छ	n e	##	瓦	
इ इ	न्न न	न्त्र स	न न		
म ज	ध्य	स स	¥ কা	日本	
∄ু আ	===	A SA	==	चु अव	
स स	া স	haz gar	is a	इ स	
±	臣官	कि क्र	H H	स ह	
H H	E E	he E	in I	स्य	
= =		ha E			
4 9	FE	to E	B B	to E	
on the design a more is a construction to a title the best of the state.					

				marie de
~~~~~~~~~~~	tropology tobe	foliate foliate foliate	<u> </u>	14000000000
TA F	to c F	S &	拼音	D E
KE	general leader spiriture square	य ह	1 3	tw E
gistine seed seed	te, 贵	15° K	12 E	D F
री ना	리 제	general grade	galledis - garder Spilose - Marin	to t
य श	日日	न छ	# # =	to E
世	मुं प्	祖 智	# S	및 및
च ह	百百	**************************************	व हा	E E
च हा	य च		ta te	EE
त्र हा	==	TE		
18. E.	莊岸	रूक्त <u>ी</u> स्वरंग	is f	= =
4 3	म म	in in	4 年	व व
<b>#</b>	î ë	स्यो भ	अ हा	当時
= = =		e e	E #	श्यक्य
44 1344444	aforaforafordje aforago da	4444444	ni dininina	
m				

李莽等等	4.7.	22,444.7	FRESTAND NO	4 KA6A 4 KA6A 4	********
Ħ		मुख्य		जोड्र	
6	H C	<b>25</b>		राखी है	
P	सर्व	# # F		पैताज रा	
स्ख	माय	证言		do	
Ħ	सुद	百百	12. E	किम्मत् फुक्त १	
I	Ħ	E E	he g	कम्मत्	Ĭ
=	=	EE	he g	定	*
K	भूत	五年	म स	ग्यान्यो हे १ सेवो	
B	E,	म स	he t	ज़ुदो <i>ठ</i> याञ मगावी सेवो	
	44	मद्य	및 패		1
व्य	यन्य	व ह	he p	गानो कक्षो मारे त्याथी	

# 4

100

to E

PA 5.

प्रतिषक नावमां वर्तेंडुं, ते असार हे. अने आ आखा ग्रंथमां पए तेज वातनो विस्तार वारंवार ज्ञान्यों है. अने आ आखा ग्रंथमां पए तेज वातनो विस्तार वारंवार ज्ञान्यों है. अने सार एंडे संसार है विशेषण ने मुक्छं है, ते वर्णन करना योग्य एगा वैराग्य है विस्तार वारंवार व्या है स्वाहीए ठीए. जेने विषे सार नथी. ते असार कहीए. आ संसारमां करना करीने आदिकना शरीरमां आत्मा न होय तो, ते समें असार वह एंडे, सी, एच, परिवारादिक सपछं ठेते पए, जो सी अनंहज्ञान अनंहह्मन अनंहह्मन अनंहह्मन अनंहह्म असार कहार है। असे ते असार के कारण के पराहें है। सार कहार के सार है। सार है। सार है। सार के सार है। अयोत् सार बस्तुनी अपेद्यायेज असार नहाने हैं, गी है ! ते बुध्सिमान पुरुपे तो अवश्य जाएाबी जोहए. ते हं के आत्मनावने विषे वर्ततुं, तेज सार हे. अने जे परनाव गाथाना पहेलाज पद्मां र्रस्तावना योहामां नाएवा योग्य तो, एटलुन हे के, ने जान्त्र ने सुन्धिमान इतिलिक त्रावमां नुरुष् थिरि वयारे प्रताश जलाय, बली जेम जेम चंद्रमानी समीपे किम जेम समुद्रनी समीपे जहए, तेम तेम वैमी हवा वयारे संसारीम असारे" या सर्व ससार यसारज हे. इ या सर्व ग्रंथनो यानेमाय ग्रंथकारे पोतेन, , तेम तेम तिमा त्या : सार बस्तु ने भी है।

( जेम आत्मस्तातानी र शीवलवा

नड़प्, तेम तेम वगरो झवशांति जायाप खने जेम जेम तेथी (आत्मगुराधी) वेदु यनाय, एटते परना-पेताय, तेर तेम वगरो थाशांति शाप, माटे आत्म गुण तो अवस्य मनट करवा जोड़प्प पटाडी जेम जेम आत्याना झानादिक गुणोत छे एम जा छाटउन याजाश है, एम समने है जम मनतर, चरहतु, समती, यनत पदी, यहापद जीशेषी पए आत्पाना नथी सेमज रत्न मले, त्यारे र त्यारे वैशो ग्रहें में मीति जनस्ती जाय, जैम के, कोइनी पास चिंतामणि रत्न समान सो ज्यारमगुण E प्रात्ममुणीनो थत कोइथी कही शकाय तेष नथी जेम जेम ज पद्मी, पोताना यलाक्टे जेन्छा याकावमा कडल नथी नेमज निवामी बत प्रमाण टर्ल डे, अने Į, अनेक महारमा आधि तेमज हपियों मत्त्र, श्रात्महात तम छन्मश वज्ञ कीत पावानी पाखना महब्रे करण ते कांश्र कवण् नथी ते पूरें रहेलु सपनु धन मून्त्र कोड् कठएा नथी/ मांटे जिल एए पनट करवाने माटेज सर्व क्षिया अनुशान करारी पडे हो गा है, परतु ते सर्नन पण, आकाश अपारचे अपार असारक्ष व पामी शरातो नथी माटे सवापार STATE OF ' पकी ए मर्षे पकी महेगाप है, E तेमज पार्श्वमीए। मत्त्र, जगायि तेषे करीने जा समार जात्मगुण् प्रनट थाप काशनो यत कीड़ पक्षीयी पासी गरपगुण मकट करवाने माटेज , स्वारेज आत्माल बज्ज न नि तथी उत्तर यने गरs 在在在外面的 4 全 表演教授的教育教育的 - 如如香香的香香的含化一口 吃了 cd : गियपए। ते आत्मगुए। यकर कर्यानो ज्यम विलकुल करतो नथी. ने कदापि करे छे, तो देहने पीतानुं रूप

शिजाने परस्पर संबंध रहेलो हे. एटले मोक्नमां जनार पुरुषने पूर्वोक्त यहाँ पदायों नुं सपूर्ण बल जोड्ए. परंतु गनीने करे हे, एउले मनावा पूजावादिकनी लालचे करे हे. माटे ते आत्मगुण शी रीते पकट थाप रे परंहु ते प्रात्मगुणों तो,क्यारे पकट खाय रे के,ज्यारे आ संतारने विपे देहादिक सर्वे पदार्थने असारक्ष जाणे त्यारेज लनार पुरुषने तो,वैराग्य पगने ठेकाऐ छे, ज्ञान बद्यने ठेकाऐ डे,अने धर्म माथाने ठेकाऐ डे.तीयपए। प प्रात्मगुण प्रकट थाय छे. अर्थात् वैराज्य पास्या विना आत्मगुण पकट थायज नही. माटे मोक्त मार्गमां

तेमां पथम पगते, बेल बरोबर जोइए; केम के, पगविना चाली बकातु नथी. एटलाज माटे वैराग्यनुं चल दृढ नोइए, ते वैराग्यने जागृत करनार एवो आ वैराग्यशतक नामनो ग्रंथ पथम स्थापन करयो छे. कि यहुना.

॥ श्री रंनामंजरी नाटिका. जैनी. ॥

( श्री नपचंदम् रि कत.

विद्यानोंने ययक्य यांचक योग्य हे. किम्मत मात्र ६०--६-० हे. जोइए तेम्पो बाखी रांमचंद्र दीनानाथने मूल मागथी अने टीका संस्कृत जापामां हे. अने तेमां आला ग्रंयना मागथी गञ्दानो कीश हे. आ ग्रंय

यांथी मंगानी लेगे.

뒮 वली ज्या ययना बोजा नागोमा पण जेवा के, बेराग्य म्हपलता, ख्रध्पारम ह्रस्रोयल वीश फारमनो प्रयम जाम,झाखर सूर्यामा पए, यती, जो माहकोनी मरजी वीजा मयोना एडजे 0-2-0 नयहान, प्रशमरति ( हरी प्रसिद्ध करवामा व्यावशे तेनी किम्मत् पण, यहरा फरनाना मु ध्यमदावाद 'चाय, बली आयथनी १ थी एए नक्षन राखनार गरसन्यम मोकन्रवामा मण्डाम्य मगामनारं टपात खरचना र पाहको थवायी सत्य पद्मे, सामटी १०० गरित्र इत्यादिकना बात्ताववीप शतक, इप्रापद्भा, सङ्ग्रना अने र नेप्रापवामां द्यावश टीवामा धावश ला नघलु पाचरों । ता मयो । रामचङ् दानानाथ तेम पण पट्ट शकशे परत ते र श्यान, जखबु –चल पाहकाए याद राख्य के. या ररेकनी एक रूपिया प्रमाणे । ायनारने,शेंकडे दश नक्षल नागना हीसाबयीज लेबाम हप्रकाश,तया त्रश्वशताक शास्त्री भ पोतान् नाम, १

વેતુ ગુવરગાળી ભાગાતર અમે કહ્યું છે તેમાં મિલસન દિવાકરે વિકમાગનો, પાદવિમાચાવેના શિષ્ય નાગાનીત શાનિવાકનગળને, ગાગનાચાર્ધના ગાઇ ધનપાયે બેન્જરાખને, ન્ય કેમ્લોન કેમાં મુખ્ય જેના કરમાં તેના મલિગ્ન છે. નિવામ, તથા પ્લર-જૂર્યા માદીને વસ્તુપાસ તેમપાસ અમા ન્ ભાવના રાખચીની થનુકમે દરિવાસ તથા માં પદામ પ્ હિલને બોજગળની આપે થયે કો ગુમક મળાદ, લેવા મહા. મેપિ મળિવાય અને આ ૧૫ તિમ વિશેર્યા જન્મ ગરિવ, આખાં सामाय, मेलाना मापेषा महिमायमा वजे छड्ड, भा રાજસ્પાન તમા ઘર્ગમ સાફેએ સમ્તમાની થયે પણ કો ઉત્તમ અભિપામી થયેલા છે ઉત્તમ અભિપામી થયેલા છે ॥ औं प्रवन्धिचन्तामणिः॥ માર્ગી. સમયત દીનાનાય. માંકેડીમેરી અભિલિમીયાલ. 3-0-A મેરફત સરિત-બ્યાપેલફ બેશ્કો તેમણે નિર્ધા મસ્તાનેમા મગાતી હતું. denting 122 વિચાર પ્રમુખ પ્રકર્ણામાંથી, અને લોક મુટ્ટ કરો, વ્યાલ છવાને યુખે ભાવ શત્ર કરીને ઉદ્દેશ કરે કરવાન તથા દરેક જેન્નરેક્રોમા અભાવ વવાને આતે થાડી કિમ્મતમાં ઘષ્ટું જાણ પણ કર્યા છે, તેની કિચિત વિશામાત દેખાપ્લ આ ગા. '... તેની કિચિત વિશામાત દેખાપ્લ મા મથમાં ઘણ સિલાંતામાંથી, છમ (૩૨૦)પ્રથમ પ્યનાવવામાં આવશે. પૂર્ક પૃધ્ધ પાસેથી રેઝ રૂં ૦ ૮૦ લેવામાં આવ્ક થનાર અને પાછત્રથી તો, અમારી મરૂછ મુજૂળ ॥ श्री जैन बोलविचार संग्रह ॥ હે.આ મુશુમા જાહેર ખુખર જેવા રાઈપથી માને આવા (ખીસ્ગામાં રહે તેવા) કંદ મા માટે, આ મંથને અને તે ખાલ દાખલ કર્યા લેવામાં આવશે. માલક થતારે નીરોના કિંા. રનામે પત્ર લખવા, શામતા, રામથવ તૈના. નાય. માંકડીયેશ જાળની પાળ,

अमहावाह,

****** **然于"我们" 我永安中 都在教社的一个心会不是** कटलाज माटे ज्या प्रथमु नाम

॥ श्री वेराग्यरताकर

25000

4 24-4:

なならなってか

॥ डी औ बीतराणाय नम

नाम र जो

आ देराग्य रताकरक नामना प्रथना यहण नाम, छचनम बलदाभी मक्ट थनाना छै तमा माये करीने नेसम्यज्ञातकस्यास्य १ नापा टीकानुसारिषी ॥१॥ त्रक्षम्य प्रसात्मान । बातवोषाय जिख्यते ॥

-----

रेताम्य दक्षानेन गुष्ट करनार ग्रयोनी समानेग्र करनामो आवदो तेवा स्ना प्रथम जानमो भी पुर्वानार्थे महारा र्मित्यी छन्तार करीने वैरात्प्यतक नामनो ग्रथ रूपो हे अस तेनी रीरा सनत १६४७ ना वर्षमा खरतर स्मिरेना राज्यमां थएला श्री गुण्णिनयनामा खानाचें करी वे ततावरोष करवो है जमें एवीज रीतना प्रथी पण वीना जागोपी जावशे '

श्री वेतान्य रत्नाकत् राखरामां आच्य न

```
310
   ॥ आयोद्यम ॥
```

जिएदेसियं धन्मं ॥ १॥ . सहं वाहिवेत्रपापनरे ॥ जाएंतो इह जीवो । न कृषाइ संसार्भि श्रसारे

संबंधि डःख, अर्थ-(ज्रासार के॰) सार रहित एवो, अने (बाहि के॰) ज्यायि, एटले श्ररीर र

3,एटले आ असार संसारमां कांड् पण सुख नयी. एनी रीते ज्या जीव जाणे ठे, देखे छे, यने

श्रनुनवे ठे; तोयपए। ग्रा मूढ जीन! जिन परमारमाना कहेजा धर्मने केम नथी करतो !!

नावाये-जनेक प्रकारना जापि, ज्यापि, जने छपापि तेले करीने जा संसार नरेलो

(नकुणड़केंं) नयी करतो! ॥१॥

के0) जिनराजना प्ररूपेला (धम्मं के0) थर्मने (

पे, (इह के॰) था (संसारीमें के॰) संसारने विपे (सुहं के॰) सुर (जाएंतों के॰) ए प्रकारे जाणतो एवो (जीवो के॰) जीव जे ते (

अथवा नरेलो एवो, (इह केंं) या

निधि केंं) नथी. (

या प्रथम गायामा एम कह्य के, आ जीव सत्सारतु अतारपणु जाऐ डे, तोषपण श्री जनप्रणीत धर्मने नभी करतो, एतु कह्यु परतु त्हानी उत्मरवाला अने तेज नवने विषे गोक्त जनारा छाने शी वीरजगवाननी देशना फकत् एकजवार सान्ततवाथी दढ वैराग्यवान् पएडा, एटबुज नही पख ते ससारना झसारपणा सबपी मातापिता साथे प्रखुचर करी, ठेवटे मता पितानी आङ्गा लेड् जेणे बाल्पावस्थामा दीह्ना अगीकार करी एवा श्री षातिमुक्तक कुमात्तु छनात श्री खतगढदशाग छाने नगवत्यादि सूत्रने अनुसारे नीचे प्रमाणे जाण्यु

पोलासबुर नगरने विषे विजय नामे राजा, तेनी श्री नामनी पहरेबी एटाजे पटराणी कथा

ते वे ज्यानो आतिमुक्तक एवे नामे पुत्र हतो ।ते पुत्र वहु उद्यमे करीने महोटो पपो, अनु-क्रमे करीने उपपेनो थ्रपो, ते श्ववसरे नगरने बहार श्री वीरस्वामी समोत्तरता एटले पपास्या

सार पठी ज्ञानवत एवा गीतम गणपर,त्री वीरस्वामीने पूठीने निव्हा लेवाने झर्षे नगर मध्ये झाव्या, ते श्रवसरे टीकराडीती सगाथे रसतो एगे श्रतिमुक्तक कुमार, गोतमस्रामिने

र्हें मच्चे झावपा, ते खवसरे ठाकराठीता स्माप रमता एग खातभुक्क कुमार, गातमर गाम है देखीने ए प्रकार पृठतो हवी के, तमे कोण ठो ? छाने केम फरो डो ? एम पूछे सते गातमस्या-

ं भीए कहाँ के अमे अमता बीए, अने निकाने अये परीए बीए, त्यारे कुमर बोल्यो, हे पूल्य! आवो, हुँ तमने निक्या अपावुँ. एम कहीने ते कुमार गीतमस्वामीनी आंगलीए बलगीने पोताने केर लाज्यो. ते अवस्तरे श्रीदेवी वणी खुशी थइ सती नाकिये करीने गीतमस्वामीने गिए. एवं कहां, ते अवसरे ते कुमर बोल्यो. हे स्वामिन्! तमारी साथे श्री वीरस्वामीने वं- क्र इन करवा माटे हुं आवं? त्यार पनी भौतमस्वामी कहेता हवा. यथासुखं देवानुत्रिय एटले हैं देवतानेने वहान! जेम तने सुख उपजे तेम. त्यार पनी गौतमस्वामीनी साथे आवीने नमस्कार करीने प्रतिलानती हवी. एटले थाहार पाणी आप्यो. त्यार पठी आतिमुक्तक हैं कुमार फरीने ए प्रकारे पूछतो हवो. के, तमे क्यां रहो ठो? त्यार पठी गीतमस्वामी कहेता हैं हवा. हे नड़! जे उद्यानमां अमारा धर्माचार्य भी बर्धमानस्वामी वसे छे त्यां अमे वसीए अतिमुक्तक कुमार नगवंतने वंदन करतो हवो. त्यार पठी नगवंते धर्मनो जपदेश दीधो, ते श्वता गपदेशे सांजातीने प्रतिबोध पाम्यो एवो श्रातिमुक्तक कुमार, दीह्या ग्रहण करवाने इहि सतो मातापितानी भनुका लेवाने अये घेर आवीने माता पिताने ए प्रकारे कहेतो है है अंब! है तात! में आज श्री वीरस्वामीजीनी पाते धर्म सांजल्यो. ते धर्म, मने उ प्रिय एरु, धाने प्रथम कोई दहाडो न सामलेखु एरु, ते कुमारतु वचन सानधीने तरकाल होकना समूह प्रये पामी एटले शोकातुर थह धाने दीन धाने उदास एवा. मने करीने, वकी नय पामेलो ए गे थयोह ते कारण माटे तमारी झनुझाए करीने एटले रजाए करी. विषे एटले घरना आण-ने श्री वीरमजुजीनी समीपे प्रज्ञज्या ग्रहण करवाने इज्युद्ध, पत्रु कह्यु, त्यार पठी ते कुमार-रीने ससारना नये करीने छाद्वेम एटले छपराद्या मनवाली एवा थाने जनममरखना जय नी माता थ्रानिट फहेता बल्लन नहीं एडु, खने खकात कहेता आएगमतु एडु, गोकना समूह प्रत्ये पामी एटले बोकातुर षड् छाने दीन अने सहित हे मूख हे जेतु एगी थृड् सत्ती, मूडा पामीने अगणतलने ।

गामा धसती

चचल एवाः हे अंव! तमारुं कहेवुं सत्य हे. परंतु आ मनुष्यनो नव, अनेक जन्म जरा मरणरूप, तथा शरीर अने मन संबंधि आतिशे डःखनुं वेदवुं एटले नोगवबुं ते रूप, छपच्चे करीने परा-मनोज्ञ, झने प्रिय कहेतां प्रियकारी एवो, अने आनराणना करंिनया समान, एटले अमू-स्य रत्न तुल्य एवो, अने हृदयने आनंद उत्पन्न करनार एवो, झने छंबराना फूलनी पेठे इलिन एवो, तुं आमारे हुं. एज काराण माटे कृणा मात्र पण तारा विज्ञोगने अमे सहन करवाने समर्थ नयी. ते कारण माटे हे जात! ज्यां सूधी अमे जीवीए त्यां सूथी तुं घरमां रहे. पठी सुखे करीने प्रबज्या ग्रहण करजे. एटले दीका क्षेजे. त्यार पठी ते कुमार कहेतो हवो. ते कलश्ना मुख श्रकी, नीकबतुं एवं शीतल अने निर्मल एवं जल तेनी धारानुए करीने एटले ते पाएति धारानुए करीने शींची, एटले नांटी, अने करयों ने ताहा बायरानो अप-नाद्जांना रंग वार ते जेने एवी थड़ सती चेतना पामीने विलाप करती थकी पुत्र प्रत्ये ए प्रकारे कहेती कितां हवी. हे जात! तुं ग्रमारे एकज पुत्र तुं. यने अमने इष्ट कहेतां वल्लन, यने कांत व एवो, अने अधुव कहेतां अशायत एवो, अने संन्यासमयना एवा, अमे जलना परपोटा सर्खा 识,

्रा ठ व स्वनाव ते जेनो श्चात्र प ह पुत्र महता 5हता नाज्ञ पामव्यू । एवे । जकर त धने सदी जा_{रै,}।पदी,जबु, मध्यं काण त्यार पत्री

514

तकए =हापप करव

기원

ग् कुमारनां ; आदि पोताने वश्य एवं प्रधान इञ्य हे. जे संबंधि श्रीर, खलु कहेतां निश्चे डाखनंज स्थानक वस्तारवत पडी जवं, झने त्यागवा ति कुमारे कह्युं. त्यार पती . बापदादाथी ज्यावेलुं एबुं अने हाडकांरूप त्य . शैक पामे ? प्रथम अथवा पर्वा सड़ो लम आ ताहारा आ शारीर, ब्धिवन अरीरमां रंजित नज थाय. ए करीने व्याप्त मारा, मोती, शंख प्रवालां, र कारण मांटे आवा श्रारीरमां कोण एवु, अने नसाजाले करीने हवां. हे पुत्र! कह्युं ते मन्ष्य

र्हे धर्म नाम खनाव ते जेनो

. अशुचिना

थन

**उ**त्पन्न

तमे श्ररीरतुं स्वरूप

oi?

W . सहग्र रूप लावएयादि एवं हे. राम एटल खुटा न जाय

पाताना मनना

त्रमाणं रुदं प्रकार

ह्मय न थाय

माड्यु प्या

नानवा

ड्रव्य ने प्रत्ये

योगे

. मांडधुं थने

लोकोने आपवा

एटले गरिव

दिकन्।

चूधी, ज्यतिशे

डब्य सात

रति, म

कनक,

ह्य

पंता फरान

ज्य<u>ा</u>

पुरुष

प्रकारनु

ने कारण माटे ए

सार सबाध जोगसुख, नोगवीने । हे तात ! तमे जे इच्यादिकन थन मसारमा व्यारमार एटले अचोग्यास गुरुकुन पड्डा तमा मनुष्य सवाय कामनाग पता अशोचे एटले अपवित्र एया, अने गायन एवा, अने वात, पिन, कम, शुक्र कहेता वीयं अने शोष्यित कहेता रुपिर । ोप कहेता बिष्टा । पठी जरूर त्यागमा योग्प पश् **अतमय** । पासे रहेतु नयी अने अधुव कहेता पित्त, कप्त, शुक्र, प्राथयंकारी एन्। ससार १ एवा हे उज्ञास आने निश्वास ह्वो, हे आव श्रने प्रथम ध्रथवा ज़ा, एटज बात, । काइ निरतर रहेतु नथी श्रमे प्रथम पड़रो तथा मनुष्य सवाधि कामनोग ाठी दीक्षा केज्यो स्पार पत्नी कुमार ब तजकन्यात्र परधीने तेमनी सापे काइ एक जाएनी त्म अमन 504 लह्प कह्य

। ते कुमार-फल रूप हे विषाक ते जेमनो, एटले अंते डर्गतिना फलने आपनार एवा पोताना जीवितने। पुरुष होय ते नज करे. आ रीते कुमारे उत्तर आप्यो, त्यार पढी प्टलं नारजुत ए कामनोग कहेवे करीने तेना आध जाएवां, ते गृरीर पूर्वे कहें एटले ते कामनोगोने झुर्थे व अनुकृत नां माता पिता, ए प्रकारे विषयने

एवा बहु वचनोए करीने ते कुमारने लोनाव-वां, अने संजमना जगने हेन्स र एवा,

तमन

कारण माटे

एवा, अने कड्यां

नेग्धं प्रवचनं कहेतां वीतरागनुं कहेलुं वांतरागनां आकृानां पालनार एवाज जावा जनशासनम अने अनुत्तर कहेतां प्रधान निवाण

। शत्य,

माया

कहता

गुष्ट कहेतां दोप राहित हे. अने शल्यकत्तेन

वचनोए करीने आ प्रकारे कहेतां हवां. हे पुत्र!

र प्रतिकृत

विषयने

पती

वाने असमर्थ थयां.

कहेतां साचुं हे.

. शासन ते सत्य छे.

संज्ञात अथवा

ते प्रवचनमां अने मुक्ति

कहेलुं प्रवचन हे.

करनार एवं वीतरा

ड़:खन

भीवो

एवाज

ए त्रण शत्यनुं नाश करनारं हे.

थनं मिध्यात

करवातु थे, श्रुशक्य थे, पटले भे प्टान प्र 'चाववानी 13 कहता तहाद भन मुखमा उत्पन्न पएलो सहन स रहित थाय हे परतु खा प्रवचन रटते जैम खब्गादि, ज्हेता शुपा 巨 सर्व कमें ब नना

हमणांज प्रबच्या ले-प्टल संजमनुं डफरपणु जागे हे. पण खनु कहेता कातर पुरुषान फरीने कहेतां हवां. हे बात! आटलो हठ तुं मानी बेठेला तेवानेने, अने परलोकथी अवला मुखवाला एवा पुरुषने डप्कर नथी. ते माता प्रतिवंधवाला तने आज्ञा नही आपीए, त्यार पढी कुमार कहेती हवो, हे अंब। हे तात! पालबुं कवण नथी. ते कारण माटे हुं तमारी आङ्गाए करीने लोकोने, अने थएला बोलेठे ? त्यारे ते कुमर गुजाए समजे हे ? त्यारे आतिमुक्तक कुमार माह्य पूर्व कहेला एवा लोकोने त्ततारना नययी एटले परलाकना इच्हुतु. त्यार पढी ते माता ाकमांज मुख ननी इष्करता देख एवा लाकान

जरूर मरबुं छे. परंतु ।

बेसीने नाना प्रकारना वाजित्रनो शब्द थए सते ज्यारे नगर मध्ये पड़ने निकलतो हवो, त्यारे पण्ण घ्व्यना द्यपि नहादि बोको, मनोङ्ग वाणीए करीने था प्रकारे खाशिष् देता हवा के, हे राजकुमार[।] तु धर्मे करीने छाने वली तपे करीने कर्मेरुपी शृष्टु प्रत्ये जीतो व-ब्रया किया स्थानमा मरवे? ब्ययवा केवे प्रकारे मरवे? अयवा केटले काले मरवे? ए हु नशे जाएतो तथा हु नथी जाएतो के, किया कमोए करीने नरकादिकने विषे जीवो करता हवा ते ख्रायसरे ख्रतिमुक्तक कुमार स्नाम कहेता नहारु, ख्राने रिलेपन कहेता शरीरे बदनादिकनो लेप करवी, खने चक्ष खानरणादिकोए करीने शोनाब्यु हे शरीर ते जेणे प ती हे जगतने ख्रानदना करनार [।] तहारु कत्याख थानु चन्नी तु उत्तम कहेता प्रथान एवा प्रत्ये जीतो थने थमीकार करेलो उरपन्न थाय हे १ पए। आटल जाणुहु के, पोताना करेला कमोए करीने जीव नरकादि-कोमा छत्पन्न थाप हे ए रीते कुमारे छत्तर आप्यो स्वार पही तेना माता पिताझे ते कुम-ो,झने माता पितादिक बहु परिवारे करीने परिवरेखो एवो, महोटी शिकिमा(पालखीमा, स्तु सजमने विषे स्थर प्रिम जाषीने महोटा यामनरे करीने निरुतवानो महोटो ध क्वान दशेम चारित्रोए करीने न जीतेला ए*गा इ*ष्टियो ! 至

部

व्य D , जमारे।

ताल किति रिहित वे बली का कुमार ससारमा नथे किति विद्यम थयों सती एटले वि-रूक मनवाली थयो सतो आपनी पासे दीक्स लेवाने इंबे वे ने कारण माटे अमे आपने का बित्य रूप निक्षा प्रत्ये आपीए ठीए आप पण का शिप्यरूप निक्शा प्रत्ये अमीकार करो स्वारित कह्य, है देवाद्यियों। जैम तमने सुख वपने तेम, याप प्रतिवय कर शो नही एटले ममता करतो नही स्वार पत्री आिसकक कुमार नगवततु चन्त सान-है तुने बिक्री प्रयो सत्तो नगयत प्रत्ये आप प्रवृद्धिणा करीने प्रते नमस्कार करीने उत्तर से मुक्ती हवो तु उच्चे ईनान कृष्णमा जड़ने पोतानी मेलेल आनरणा सिक्ष अलकार प्र-से मुक्ती हवो ते अवस्ते मता, उच्चल वले करीने आनरपणांदिक प्रत्ये बहुण करीने आलो पक्ती आस मुक्ती पक्ती खितसुक्क कुमारने ए प्रकार कहेती हु है गुत्र। पानेला एवा सजम लोगोने विषे तहारे प्रचल करवी छने व पानेला

आसो पक्षी आसु मूकती पक्षी आतिमुक्क कुमारने ए प्रकारे कहेती हुंधी हुं युत्र| पामेदा एवा सजम जोगोने विषे तहारे प्रयत्न करवी अने न पामेदा एवा सजम जोगोने पामवाने अर्थे घटना एटले रचना करवी वह्यी प्रचच्या पाह्यवोने विषे पोताना पुरुषण्एाानो अभिमान सफ्त करवो अने प्रमाद तो करवोज नहीं ए प्रकारे

210 नेइने बहार निकल्यो, त्यां जलनो प्रवाह बहेतो हेत्यीने वाल अवस्थाना वश थकी माटीए हनो. ते अवसरे स्थिवर मुनियो तेनी ते अतिशे अपटित चेटा देखीने ते साधु प्रत्ये हांशी रमतो दहाडो महोटी बृष्टि पडे सते एटले घणो बरसाद पडे सते काखने विषे पात्रु आने रजोहरण त्यार पठी अतिमुक्तक कुमार, श्री वीरस्वामी समीपे ज्यावीने वंदनादि करीने प्रवर्जित त्यार पठी श्री वीरस्वामीए पण पंचमहाबत यहण कराववा पूर्वक एटले पंचमहाबत करता होय ने शुं जेम! एम नगवत् समीपे आवीने नगवंतने ए प्रकारे पूठता हवा. स्वामिन! आपनो थतेवासी अतिमुक्तक नामे कुमार श्रमण, केटला नवोए करीने ि विषद्ने वरशे? त्यारे नगवंते कह्यं, हे आयों! महारो अंतेवासी आतिमुक्तक साधु, ए करीने पाल बांधीने जेम नावनो चलावनार नाव प्रत्ये चलावे छे, तेम झा आतिमुक्तक भ ही प्रकृतिए करीने नड्क एवो, अने विनीत एवो, अतिमुक्तक नामे कुमार अमण, पाएीमां चतावतो सतो शीखवाने अर्थे गीतार्थ एवा स्थिवर मुनियोने सुंप्यो गत्राने, आ महारी नाव हे, ए प्रकारे कल्पना करीने ते

महण करावीने किया कतापादि ः

अतिमुक्तक कुमार अमणनी त्व

वरशे. ते कारण माटे हे रूडा पुरुषो

एटले आ एने ठेजु शरीर छे ए रीते ते ज्ञानवत स्वार पठी ते स्थविर मुनियो नगवतने वदन नम निदा न करगो थ्राने मने करीने लोकनी समस्र गहाँ न करगो अपने तेनी श्रवज्ञा न कर-ग्रो यनी टे वेबानुप्रियो। ए थ्रतिमुक्तक साधुने अखेदे करीने अगीकार करों अपे अ-लंदे करीने तेनी सहाव्य करों तथा नात पाएं। लाबी आपवारूप विनय करीने एनी चे-एवा स्प्रीयर मुनियोने जगवते कह्यू स्थार पठों ते स्पविर मुनियो जगवतने वदन नम स्कार करीने जगवतता यचनने विनय पूर्वक छगीकार करीने छतिमुक्तक कुमार अमण प्रसे छावेदे करीने छगीकार करता हवा जावत् चैयावच्च प्रते करता हवा स्थार पठी ज्ञतिमुक्तक मुनि जे ते पण्य पने च्यालोदीने नाता प्रकारनी तपथयांदिके करीने सजम प्रत्ये सम्यक्प्रकारे आराष्ट्रम करीने थते अतकृत केवजी पड् सिटि प्रत्ये जता ह्या याने तेने डाचित सेवा न करवे करीने यावज्ञ करी जे कारण माटे था मुनि, नवनों खत करनारज हे एटले सत्तारनो ठाडेव रनारज हे थों चरम शरीरवालों है एटले खा एने हैज़ शरीर हे ए रीते ते ज्ञानर डीते अतिमुक्तक मुनित् हवात जाण्यु इहा अतिमुक्तक कुमारने उ वर्षनी डम्मरमा जात्यादिकने चघाडवा थकी हीजना न करशो

त्रवत् हिर अथवा (कझं केंं) काल्य चिंतवे हे. ए = 3 = D एटले तेथी पण अन्ति। \$00 121 चितात प्सार कं0) प्रारंब. 新品品 यिं, काल्य महा एम विचार व वंचार करंग नया **Pa** कृण क्ष नाश पामता एवा, पाताना पहांति कें, 50 मनमा H ययोत् आज महार एटले धन । (प्रारमा कं) पुरुष. क्रा

. अथवा परार

क्ष 6a)

11311 डेक्नेंड कें ) विस्तव न करो महों के । हरीज एम । यहविग्यो हु १ नावार्य-हे जन्य जीयो। श्रुष्-हे प्र (तके छ)

पटतु होप,

तांनयी!! एटले सेहानुरामे करीने गाढपणे कंयायेलाने परस्पर विज्ञाग नषडयो जोड्ष,। नावाथ-ही इति खेदे!! ग्रहहः!!! ग्रहो! ग्रा संसारनो रयो खनाव हे? के, जेना ख-थायेला हे, तेवा स्वजनादिक पए जे प्रातःकाले दीरा होष, तेना तेज, स्वजनादिक सांजे देखा. नावनो विचार करतां तरतज खेद जलक थायठे!! केम के,जे परस्पर प्रेमवंथने करीने गाडा वं-मने, (ही के०) वाणी खेद थाय हे. केम के, (जे के०) जे (नेहाणुरायरनावि के०) स्तेहना अनुरागे करीने रक्त एवा पण, अर्थात् प्रेम बंदाने करी बंधायेता एवा पण, स्वजनादिक जेते | (पुनाले केए) प्रातःकालने विषे (दिना केए) दीवा, (ते के०) तेन (ग्रवाले केए) सांने अर्थ-(संसार सहावं चरियं के०) संसारनो जे स्वनाव, तेतुं जे झाचरण, तेने देखीने ने प्रवर्ण है । जबरएहे न दोसित ॥४॥ ही संसारसहावं,चरियं नेहाणुरायरनावि॥ (न दीसीत के०) नथी देखाता!! ॥४॥

मा दीतु, ते गीजा क्षणमा तेगुने तेव नधी पद्य थया करे हे।धा 肾 नहिं पण स्थेत 줐 जागवाने त्रतान 22000 (अब के) ಪ संसारनो एगे स्वनाव हे मा सम्बह माटे तेमनो । **अ**रे-हे लोको। तिशि निशि खान, जामच

प्रमाद न 4 धम् न संड रहा घाह के०)

34 Pro 4 (04) 114 E जार नास 100

F 3

जेनी पासे धन अने नासवानी जग्याए वेसी न रहेबुं, नावार्य-हे धर्मार्थि जीवो! जेम आ वेकाणे जोकोक्ति एवी वे के

ज्यने विषे प्रमाद न करवों. अने नासवा योग्य एवो जे संसार तेमां वेसी मृत्यु ए त्रण डरमनो तमारी कालरहह नमाडात करणांमा सावधान रहा

900 अछ जीवनुं ( अर्थ-(चंदाइम् के०) चंद्र सूयं

दिवस निसा घाडे-

(बड़ला केंग) बतार जे ते (

चद्।५घव५ध्ना

अल्परहट

(मोतितं के)

माज्या रूपा

देवस राजि

करवे हे, ॥६॥

श्रथं-हे नव्य जीती!(काज सप्पेष के॰) काल रूपी सर्पे (स्वज्ञाति के॰) खाया माडेली काल रूप रहेटने फेरने है, माटे हे नन्य प्राधियों | छानु नजरे जोइने पण तमने सता-र छपर्यो छदास नाव केम नर्यो पती? ॥६॥ एवी (काया के०) वेह जे ते (जेष के०) जेषे करीने (परिज्जहके०) घरण करीए, अपोत्त रहा करीए, (सा के०) ते अपोत् तेषी (कजा के०) बहोतेर कला माहिजी कोड़ पण कगा (नडि के०) नयी (त के०) ते अपोत् तेरी (उसह के०) ब्रोप्प (नडि के०) नयी (त किंपि के ) काइ पए (विन्नाण के ) विज्ञान अर्थात् शिल्प चातुरी नानार्थ-चड् ने सूर्यं ए रूप योतो ने रातो एवा पणा बलवान् वे बलद,ते दिवस ने रा-नीयोनु खावखा रूप पाणीने छलेची नाखवाने (जाइके०) पारण करीए, इ ार्गा ११ १५ १३ १४ असह त निज्ञ किपि विश्वाणा। खडाति कातसच्पेण न्नि रूपी योला ने काला घडानी सेधियोबडे, स् क अ थ ११ सानिक कलातिनिधि धारेज्ज काया। र्वे (नदि के०) नयी (त के हैं| के०) ते छार्थात् तेतु (वि (निच्च के०) नथी. अर्थात् पढता शरीरनी रहा करे, एवी कोइ पए। वस्तु नथी. ॥॥॥ R आषय नयाः तया जगतमां अनंक प्रकारनी शिल्प चातुरी ठे, पण कोइ शिल एवुं नयी के, नेयी काल हपी सर्पेनुं फेर लागेज नहीः माटे हे नन्य प्राणियो यथत मयानं केर जनारवा 雷 एटले या पणी लेंद्र कारक वानी है. तेने पथाताप वर्णो थाय हे. (काल नमरो के०) काल हभी पुर्विषयमे ॥त॥ तंक जेवानी काची कायानो रवो नहसो ? माटे शाघपऐ धर्म कत्य करी |द्सामहदावा<u>त्</u>वे समर्थ पुरुपोनां वज्ज समान श्रीरने पए काल रूपी सर्प गली कोइ पण कला नयी. तया काल रूपी सपे मरोली क । माहे अरंकतर औषय नथीः तथा जगतमां अनेक प्रकारनी पीं यइ कालनम्रा दीहरमाधिदनाले । म शित के अर्थ-(न केंग)

नमर

हैं जेनु है माटे ते वार्नांनी विचार करता जन्य प्राणियोंने तो द्याना अधिक प्रणामयी कि पार्त हुव्या विना खेंच नहीं । जैम के, कालक्ष्य असतीयों एक नमरों हे ते पृष्यी-हैं कर कमजमायी जो कर्कण तमाम रसते 'क्यायि बेदनारूप करवणु वायरीने चुड़ी से हैं । एटने कोड़ माणसने ते काल नक्षण करवा विना खेतोंच नथी- इहा पृष्यीरूप कमवानु हैं । नावार्य-डोकमा एवी प्रासिटि हे के, नमरो कमलमायी एवी रीते रस छे के, जेथी करीने ते कमलने सगर मात्र इजा न थाय, तेती रीते पोताने खप जेटलोज मधुर स्थरे गोलीने योदो रात से हे, परतु आ जम्याए तो तेनाथी तमाम छलटी रीते जाणवा हैं बगी पृष्वीने शेपनामें मापा उपर उपाड़ी लीधीं हे बली ए पृष्वी रूपी कमलमा पर्वती, हिन्हों के छ) विशाहर हे महोटा पत्र ते जेने विषे एबु (पुहवि पत्र में हेछ) एवी हप कमनने हिया केसर के०) महिया एटले पर्वत ते रूप हे केसरा ते जेने विषे एवं, ने (विसा मह निरे(जणमगरद के०)जनहप मकरदने ष्राथात् लोक रूपी रसने (पीजह के०)पीए हे ॥ ।।।। (दीहर के 0) दीये एटजे महोट (फिएकनाजे के 0) श्रेषनाम रूप ने नाज ते जेतु एतु, ने (म

গ্ৰ ते केसराने ठेकाले ठे. ने दश दिशायों ते महोटां महोटां पांनडांने ठेकाले ठे. आवा महोटा क्यार (ता के०) ते हेत् सूधी पए हम थयो नथी; ने यतो नमाः, यमाद होडीने छयम करो !! ॥६॥ एवो (कालो केण) काल जेते, पासं केंग था भाग रूपी जमराना गयामिसेण कांनी। सयवजीत्र्याणं ग्लं गवेसंतो॥ । ज्यमं क्षाह् ॥ए॥ त्रुव । नयी मूकतो. सयतजीश्राएं के 🏻 ) बजने (गवेसंतो केण गवेषणा करतो । वि केण) कोइ प्रकारे पए (न मुंचइ केण) म्मलनो रस निरंतर पीतां पण कालरूप जमरो खाज पए। नयी, अने यशे पए। नहीं. माटे हे नन्य प्रािपयों अवाय, एवा आत्म स्वरूपने पामवाना साध म व त ए ए पासं कहिति न मुंचइ। ) श्रीरनी गयाने मिषे ( (उद्यमं केष) श्रालया धमने कि अर्थ-(वतं केंग)

एवी बांहाये निरतर ठायाने मिपे पकडवाने माटे आपणे काइ पण धर्म साधन करी जल,ते कोड़ प्रकारे पए। प मतना पामे के, एने हु पकडी सेंड, ए

पि, ज्या सुधी कालना फपाटामा ब-म्राज्या, त्या सूर्यामा काइ पण प्रयत्न करी त्यो क्या नहीं।

<u>-</u> वेहकम्मवसमाता के०) नाना प्रकारना कर्मने वड़ा थएला कालचक्रने (कातामि के॰) ) आदि राहित एवा श्रमणाईप कात्नीमें

) जे (सविहाण के

किए (ज केंग)

(न सन्तवड् के०)

ज्ति शह चूक्य तंनवे हे.॥१ ग्नामाटे बेचाथी लीया. हिक जेद ए जीवने थएला प्त तम् करता करत शकाय प्रा गया; यावत् ज्यम यया त्यारे तो तमने न्हानां ाधंडा पए थयां हो, कूतरा पए। थया हो, तेज तमे, याज गंव गाहुकार तंनां किंग) ते नथी. ज्यर्थात् सर्वे

हैं। डार्थ-(सों के॰) सर्व एवा (बधवा के॰) वाथव (सिहिणों के॰) सुहर एटरो मित्रों तथा (पिडामाया के॰) माता पिता (पुनजाित्यां के॰) पुत्र तथा स्ती, ते सर्व जे ते, मर्री गयेला मनुप प्रत्ये (सिलिलजाल के॰) पाणीनी अञ्चलीने (वाज्य के॰) ड्यापीने (पेडा-वणाझ के॰) इमदाान थको (निष्यताित के॰) पांबा घेर ड्यावे हें पण मरेला मनुष्यनी तथाथे कोडपण मनुष्य जता नथी ॥ ११ ॥

नावारी-हे जीर। द्या सपला देहना सर्रापे हे पण एकोड तहारु सबयी नपी के, मके, सजन तथा मित्रो, माता, पिता, धुत्र, अने स्ता ए कोड माणस तहारा सगा तथी हेमके, जे देहनी सगाये तेमने सवय हतो, ते देहने बाली कूटीने, पढी पाणीनी खजजी

थापीने छार्थात् ते फरीपी पाठा घेर छाववाना नथीं एपी छाड़ा। सूक्षेत्रे इमझान पकी गोत पोताना स्वार्थने सनारता पाठा पोत पोताने घेर जायेठे पण तेमानु कोड़ वहाजु स्पु

ने जीवनी साथे जत् नथी ॥११॥

वियोग विज्ञाग थाय ठ. एज क्यारे पण (न विहेड्ड केंग्र) (य केण) बली ( रांचि के०) । (सुद्धा के ) पुत्र तथा पुत्रीयो (बंधवा केण) वहन्नहा य एटले तेनो गय हे. तेज रीते। । एक ( (इम्रो केंग) अयोत् स्वजनना पण ) हे अज्ञानी ज थाय है, । धर्म जे विहडंति सञ्जा (र जीव केंग)

'कहवि केत )

विना कार्ट पण सहार्यकारा नथा

*इतां हे एवं संवोधनः

गमतो नयां.॥ ११॥

र्म भ मकीने तु Ē, कोए हैं । वने साच सगपण गवार्य-हे मुग्य जीव ! तु.विचार कर्य के, व्या ससारमा तहारु न गहा नसारचारए ठाइ नया यता अडकम्मयासब्ध H+45/2 अर्थ-रे आत्मन "やないないないないない

संसार ह्रपी बंधिरवानाना घरमां पड्यो हुं. तोपण तेमां मिथ्या सुख मानी बेठो हुं, पण तेमांथी निकलयानो उद्यम नथी करतो, पण ज्यारे त्यारे, तेमांथी निकलबानो उद्यम क-रीने ज्यारे झाउ कमें ह्रपी पासने तोडीश; त्यारेज हुं मोक् मंदिरमां जड़ेश. पण ते वि-नावाथे-हे जीव! तुं विचार करव के, ज्या जगत्मां एक पास वहे वंधायेलो मनुष्य पण मूकाइ शकतो नथी, तो, तुंतो आठ कमें रूपी आठ पास वहे वंधायेला हुं, ने तेमां वली प्रातमा ने ते (सिवमंदिरे केए) मोक् मंदिरने विषे (गड़ केए) रहे हे. एटले एक समयमां (जीनो केए) प्राणी जे ने (संसारचारए के०) संसार हभी वंधिखानाने विषे (गड़ के०) हि हे. ने (अडकम्मपासमुक्तो केण) आव कर्म ह्रपी पासथी मूकाएदो एवो (आया केण) हेत्रने न स्पर्ग करतो मोहने पामे हे. ॥१ १॥

विसयमुहाइ विवासिकाले आई।

निलिए।दिलग्गयोलिर।जललवपरिचंचलं सर्वे

विह्यां संजाणसंगा

अविनाशी सुख क्यारे, पण मलवातुं नथी.॥१ श।

नाय हे Ę Ŕ ख़समों के 0) माता. 9 यू क नहात् भूम त संध्यों जे ते, तथा, न्या (विद्यास केण) ए न केण (S) कालमा 201 HB क्षा । नव्यक्त वाय्पी प मिने नेम ने त् रहेतु एवं (क अयीत् अत्प नावार्थ--ग्रह ব্ৰুল ঠ तया ता, ना माह केंग्रे ( तरीत

ボギャルオア オイドボ

IIR XII

विपे तु गु आसक

おと かかかみ みんしょう

D

```
eg
り
```

.च \$0) 99 もの 04

100

e e

वीतुं, न

90

品

| अया तेने छंडी करो, केमके, तमे गमे तेटलु ख्व्याकिकनु खरच करीने ग्रारित्ती साचवणी करो, तोपण ते शरीरत्ती जवानी कदि काले तेवीने तेवी रहेवानी नरी माटे जेनी सेवा निष्कत न जाय, एवा धर्मनी सेवामा तरपर थाछ। ॥१५॥ (जीयो केट) जीव जे ते (नवनयर केट) सत्तारह्मी नगरना (चठप्पहेंसु केट) ची-विषे अर्थात ज्यार गति रूप चौदाने विषे (विविहान केट) अनेक प्रकारनी ड ख श्रपांत् ज्यार गति रूप चौटाने विपे (विविहान के०) अनेक प्रकारनी ड ख (विमन्त्रणान्न के०) विटयनाने (पावड़ के०) पामे हे ए हेतु माटे (इन्ज के०) ए ससारने विषे (से के॰) ने प्राचीने (को के॰) कीण (सरएएके॰) रख्एा करनार हे⁹ थ्र-ग्रर्थ-(षणकम्मपासबद्दो के०) निविद कमें रूप पासाए एटजे गावशीए व्यापेली घएकम्मपासवयो । जवनयरचछप्यहेस् विविहार्ग ॥ पावइ विम्बर्धाा

*******

र्थात् कोइ पए। नयी

खनो के हैं। अन्तीवार (वसित के ह) खेलों हैं जाती के हासने जाती जाने प्रतियों अनंती नासे केंं) गर्नवासने कि (कमाणुनावेण केए) गुजागुन कर्मना प्रजावे कराने (अपांत के०) अस्तु मिलो एवो, ने (बीजाडे के०) बीजता, कहेतां कमकमाट नरेतो एवो (गप्त-केमां रहेला प्रव्यमे (पहायोंनो) ममूह ने हाप (जंबाल केए) काद्य नेते करोने (असूह अर्थ-(अनो-केए) जीव लेति (वोसी केए)वोर एटले नवानक एवो (कडामान केए) ं मंधनादि ह्य विटंबनाने पाने के त्यां तेने रहण करवा कोण समर्थ के ? अपनिते जीय-ह नाहे रूप संसारना नोगानमां (नीटामां) अनेक प्रकारनी ग्रहीरने तथा मनने डिलाहायक। जावाथ-हे प्राणित्। जा जीव वाणां कमे रूप पासकंग्यी कंगयेजो एको सतो ज्यार नेतित अणंतिलुनो । जीने कस्माणुनानेण ॥१ आ श्रीरंभि गघवासे। कलमलजंबालञ्जसुर्वामंत्रे॥

ब पणुज इ.ख पड्यु होय, ते जग्याए फ्रीभी न जाय पण आ बीवनोतो एवो अवलो हर हैं जाव हे के, तेज जग्याए वाररार जवाय एवो ज्याय करता करे हे पण ते थकी विराम न- के पा पामतो होने जोइने हानी पुरुप ठपवेश करे हे के, गर्नावासमा पणुज कर हे के, जेतु हैं वर्णन पामतो होने जोइने हानी पुरुप ठपवेश करे हे के, गर्नावासमा पणुज कर है के, जेतु हैं वर्णन पण वर्णवर पर्ड शवतु नभी तोयपण इहां यत्तिकित् कहांए ठीप ते गर्नावास है अनेक प्रकारता मलमूजनी ड्योथी जरपूर है के, जेमा सारी हवा आववानोतों लेगे हैं मात्र रस्तोज नभी ने अनेक प्रकारना सूक्ष्म जतुचे ते गर्नेना कोमल श्रुरीरने घणी वेबना है प्रचाल है है ते ते त्तिने नाशी जवानी जग्या नभी मलती, तेभी वारवार मूहांखाइ तेनी है बार गर्नोबासमा छ ख मोगवडु पहे, एवु कत्य करे हे परतु फरीपी गर्नोबासमा न आवडु है पहे, एवो छयम नयी करती ए घणु छाम्बर्य है। ॥१ ॥। ने वेदना सहन करे हे वही त्यां झतेक प्रकारनी रूपण थायठे तेनी वेदना, तथा जठरा-प्रेयी पयेती उच्च वेषना, इत्याविक कमकमाट नरेली श्रनेक वेदनानुने सहन करतो उथे माये सवसास सुपी टटझतो हतो माटे हे जीव। ते ड खना दिवस तें आनतीवार नोगन्या नावार्य-हे महामुम्पप्राणिन्!! य्या सतारमा सारा माणसनी एवी रीत हे के, जे जग्पाए

भू पामवाना चपाय शंच गेपण तुं केम जूली जाय हे?

श्रीकद्रन (जांधांसं कंग) कि0) प्रमुख पमुह कंध) ज़िंग केंग) (0 (b)

कर् 9 उत्पन्न र क्व)

वा जोनीने विषे अनेक प्रकारना हेदन नेदनना छ ख, तें आनती-12021 ग्राब्योतु ने, नेतेजी

नावार्थ–हे जीव! आ जगत्मां रहेता सर्वे जंतु कदाचित् तहारुं पालण पोषण क-रवा माटे, माता, पिता तथा बंधु रूपे थयां हे, ने तेमणे करीने छा। सर्वे लोक पूरेली हे. परंतु ते सर्वेथी पण छाज सूधी तहारुं रक्षा थड़ शक्युं नथी. माटे ते तहारे शरण करवा वोग्य पण नथी. कारण के, संसारना महा इःखरूप प्रवाहमां खेंचाता प्राणियोने, जेमां जे ते (निद्यले कें) जल राहित प्रदेशने विषे (सफरो इव कें) माग्रलानी पेठे (तदप्फडई अर्थ-(वाहि के0)ज्याधिये करीने(विजुत्तो के0) उपड्व वालो एवो (जीवो के0) जीव के0) तहफड़े हे. एटले खाकुल व्याकुल थाय हे. ते प्रकारना रोगे करीने पींडाता प्राणीने तारो कर्णधार (नावनो चलावनार) हे, एवी नौका (नाव) रूप जिनधर्म जे तेज, शरण माता पितादिक श्ररण करवा योग्य नथी.। सको वेष्यणाविगमे ॥१०॥ निचले तडप्फडई॥ सफरो इव सयलो वि जपो पिन्नइ। को स करवा योग्य तथा महण करवा योग्य हे, पण 1 जीवो वाहिविल्तो

नन्त्राज तु धर्मनु शरण करण कारण के नोगवतु पदे नहीं,माटे तेवा ध्यमें नावार्य-झा सीब झानेक प्रकारना क्यापि वहे मस्त थाइने ज्यारे जलाविनाना मा-ग्रानी पेठे तदफ्डे ठे, ते चलत 5 मां । 5 गए।। इत्यादिक लामाने झानेशे करणा ठ-लघ याप एवा पोकार करे हे, त्यारे तेनी वेदनाने लेशमात्र ठंडी करवाने कोइ पण समर्थ यतु नथी छत्त्वा तेना मनने थोजी वेदना छत्तत्र थाय, एवी रीतना करुणा नरेला शब्दो बापरीने छने छोपथादिकना घणा त्यरचमा नात्तीने खने खात्सोमा खासु क्षावीने, इन्द्रा तेने (सपतो वि के॰) सकत एवी पए (जणी के॰) जन एटले लोक जेते (पिज्ञड़ के॰) देखे हो परत से जीवनी (वेडाणानिगमे के॰) वेदनानो नाश करवाने विषे (को के॰) कोण पुरुष होड़पी काइ पण ड खं लड़ सकातु नपी माटे हे जीव बयारे गनरामधामा नाखे ठे खने पोते ज्यारे निराज्ञ पाय ठे, त्यारे निसासा मुकीने नि धर्मेतु शरण बताबे छे पण तेमाथी कोइथी काड पण छ ख स्व सह क्राकान स्थी माने हे ल तको के0) समर्थ होय ? खिपतु कोइ पण समर्थ न होय ॥१०॥ ज पढे हे, तो प्रयमयीज |पी एतु छ खि नोगवतु प**दे**ः गर्मन् शरधतो

होडे बंगन हे. मे बंगने ते पम जाता हे के, एकी महारे सुख यहो, परंतु नेजी करि पण के होने कि महे कि महि ताल जाता में ताल को कि महि पण के होने कि गाँद जाति राखवाणी नरक कि महि पण के होने कि गाँद जाति राखवाणी नरक कि महि पण के होने कि गाँद पण कार्त नता. कारण के, होने कि गाँद पण कार्त नता. को जनाए करता एवा जीतो (एवं केए) ए एत कराजाहिक ने तेल, उत्तरा (निज्यं को जनाए करता एवा जीतो (एवं केए) बंगन को थायते. ॥११॥ केए) अतिये गढ एवा (बंगणे केए) बंगन को थायते. ॥११॥ जानाथे-अरे रे जीव! तहारी की जिपरीत मुचि पड़ हें ? के, जे डि: पतं कारण हे, अफे-(जीय केए) हे प्राणित्। (प्रकलानाइ के०) एज तया को इत्याहिक जे ने आफे-(जीय केए) हे प्राणित्। (प्रकलानाइ के०) एज तया को इत्याहिक को ने (मन्न के०) महारे (महहेजक०) मुख्ते कारण यहो. एम (तुमं के०) हे (मा जाणित के०) न जाणीया. केम के, (संसार केण) संसारने थिय (संसरंताणं केण) नरक तिथेय इत्यादि ६ अ के तुमं। पुत्तकतात मन्न मुहहेता। रह रेष रेण में । संसारे संसर्ताणं ॥११॥

गुगववाना श्रवतार ायेढा कूतरादिकना नि शकपणे विषय युत्र इत्यादिक ममत्वनाव करवापी एटजे एक जाया के कम्मवसा केंग) ग्रनेक प्रकारना ड ख कम्मवस् देवस गयो, सपा झाज वर्षा । विचार तु कंम तीबोनी (आणवज्ञा के॰) क्र माता ज जषाषी जायइ जाया केंग) ससारने । अपावज्ञा ससार पहें अने त्या त्या हे तथा तियँच गतिने विषे ग साधन कर्धु " एवो <u>क</u>ाल इ ŝ

(जाया के ) स्त्री जे ते, जवांतरे (माया के ) मातारूपे. अने (य के ) वजी (पिया के ) पिता के ), जवांतरे (पुत्तो के ) पुत्ररूपे पंण (जायह के ) थाय हे. अर्थात् आ जीवनी रहेतु नथी. एज संसारनो विषम स्वज्ञाव हे. कारण के, जे माता है, ते जवांतरे मातारूपेज नथी थती, परंतु तेज माता खीरूपे थायहे. अने जे स्वी एटले पोतानी नायों हे ते जवांतरे मातारूपे थायहे. पण नार्यारूपे डत्पन्न नथी थती. अने जे पिता हे, ते नवांतरे पितारू गमावे हे. पण एम विचार नथी करतो के, एज महारां केटलीएक वखत शञ्ज थड़ने तेनुए मने हेदन, नेदन, ताडनतर्जन, घातपातादिक खत्यंत वेदना जपजावी हशे. तोपण हुं तेना उपर सरागत्रावे करीने उत्तटो रात्रि दिवस तेनीज चिंतामां रहीने महारुं धर्मध्यान मूकीने एखीने तहारो बधो जन्मारो तेनुंज जरणा पोष्ण करवामां, पशुनी पेठे खा मनुष्यनवने एले पेज उत्पन्न नथी थतो, परंतु पुत्रक्षे पण उत्पन्न थायहे. माटे जेना उपर तुं आज प्रीति नावार्थ-हे जीव! संसारमां सवें जीव कर्मने वश् हे. माटे तेमनुं स्वरूप सदाकाल एकरूपे मुं करवा खराब घउं हु १ एवो विचार हुं लेशमात्र पण करतो नथी. कारण के, हुं एक सरखी स्थिति नथी रहेती. इत्यादि अनवस्था जाणवी. ॥११॥

Ħ, 12 23 हममा सुख नथी हवान नद्य न्कर्त, . प्रकारना संबंध ध भवात जन्मारी तेमने माटे त अन्य म धन न्सु परतु इ

) रहता । कथा 進 नयुरा नगरीने

गोडी दूर करवान 43

E,

P Po

दिवस सूधी ध एक जातानु

ह तक पए सते, शोर्चपुर नगरे थावां त्या स्नान करवाने धर्षं आवेलां एवा वे शेठना पुत्रों हैं ने फेटने ध्रापती देखीने, तत्काल लेटने एकजां तेनी मध्ये एक बासक धाने वालिकाने हैं ने फेटने ध्रापती देखीने, तत्काल लेटने एक वाला धाने वीजों पुत्रोंने खर्षि हता, होते वालिका पुत्रोंने खर्षि हता, होते वालिका तीथी ए प्रकारे हे एक गलक लेटने पोत पोतानी खर्मि आप्य प्रकार को मुस्किमांन लिखा श्राप्टराने ध्राप्टराने होते गांच पात्रों है होते वालकों सराह करा पात्री है को मुस्किमां करीने महोटा प्रया पात्री है को मुस्किमां करीने नोचन ध्रावस्था पात्र्या त्यारे ते वे वालकोंतु सराह करा वाणीने, ए वे धा- धर्मुक्रमें करीने नोचन ध्रावस्था पात्र्या त्यारे ते वे वालकोंतु सराह करा वाणीने, ए वे धा- हुकारों ते वे जपनों माहों माहे माहे पार्थी प्रवृक्षित करता हवा एटले लप्टने उत्तर है हि करारे हो। स्थार पार्टी है करारे ते हा तारा वाजी समया वेटा ते खरारे कु बेरदनता हाययकी ते नामाकित मुख्कि कोङ्क प्रकारे निकलीने, कुमेरदनानी आगल पडी । यार पढी तेलीए ते मझ्कि गोनानी निकलीने, कुमेरदनानी आगल पडी । लाकडानी पेटीमा ते के जाधने माही मूकीने सप्या समये यमुना_नदीना प्रवाहने विषे ते हां कहानी पेटीमा ते वे जायने माही मूकीने सच्या समये यमुना नदीना प्रवाहन ।वष-त पेटीने बहेती मूकी दीपी त्यार पड़ी ते पेटी जालामा बहेती पकी छातुक्रमें करीने विवसनों इस पए सी, शोर्यपुर नगरे छावी त्या स्नान करवाने छर्पे छावेला एवा वे रोठना पुत्रो हे नेदर पए सी, शोर्यपुर नगरे छावी त्या स्नान करवाने छर्पे छावेला के योलाकाने हे नेदरीने छावती हेखीने, तत्काल लेड़ने एकज्ये तेनी मध्ये एक बालक छाने वालिकाने हैं जेड़ने: तेमनी मध्ये चे पुत्रनो छर्पि हतो, तेष्ठे लीयों छाने बीजो पुत्रीनो छापि हतो है जेड़ने: तेमनी मध्ये चे पुत्रनो छर्पि हतो, तेष्ठे उन्हे लीच जनकी ख्रीने छात्यु प

Av

R

**必次次次次次次次** न्न ह्मेरदनने पोतानो जाई ल माट तमार जावानो तमार खबराबान थयः कन्या थाने तेना वृचात कह्यं. त्यार मातानुए ते वे बगड्युं नयीं. जे का गुए।वाला तमने जा। H रटले था मातान पादवा धनम्ता हायमां घाली. ते ख सरवा पूरवं ते खवतारे तेमनी मनने । 小公 गमां घडेली, अने सरखा नामबाली एवी बेखीने श्रमन कता । निवारवान कहवा वव हिन स्वक्ष कहवा करबुं ? त्यारे पाताना श्रमन मत्य 11 करपाडन प त्व 以公 माता प्यांहिं.

तमारु बचन महारे प्रमाण्डे परतु हुमणा ती हु व्यापार कर ताने माटे परदेश जवानी हु हुग राखु हु ए काराण माटे मने आहा आपो त्यार पढ़ी ते ते हे ते तण्डा आपी हु हुग राखु हु ए काराण माटे मने आहा आपो त्यार पढ़ी ते ते हे ते हे तान पोतानी बहैनने कहीं में पणारु कियाणा होड़ने, टेन्योग पर्की पी ताने डापित स्थानक एवं मधुरा नगरीये गयो त्या ते निस्तर पोताने उचिन व्यापार करतो सतो, एक दहाड़ो कोइक मावा कमेना जोगपकी अदचुतरूप करीने हो नाज्यान पहुं एवं। पातानी माता कुमेरसेना येश्याने देखींने, कामे पीहित पयो सतो, ते वेश्याने वहु एवं। प्राचान माताना मुख्यकी एवं या आहरूरोने तेने एक पुत्र पयो हुवं होरिएन विपे हे हुनेरण्या, माताना मुख्यकी एवं या आहरूरोने तेने एक पुत्र पयो हुवं होरिएन विपे हे हुनेरण्या, माताना मुख्यकी प्राचान पाताना मुख्यकी स्थान पर सते दीहा आहाण करींने, तरकाल वेशाय प्राप प्राचे हाथीं (साधी) ने स्थान पर सते दीहा आहाण करींने, यणा महोदा तप करींने, विशु इ आप्य तसायों, आयो पीहां हे यही पोडा कालमाज, तेषींप ख़बाधे हान उत्पन्न करधु त्यार पठी ते साधी, आविश्वान के लान करान करधे हिसायों है साधी, आविश्वान हाथी हान उत्पन्न करधे त्यार पठी ते साधी, आविश्वान के लान सगापे तागेलो एयो, अने पुत्र सिहित एतो, तेने देखीने कर्मनी गतिने धिकार करती ए तता बले करीने पोतामा माईनु स्वरूप जोती सठी मथुरा नगरीने विषे पोतानी माता

॥ए॥ छाने महारो सत्तरो पण हे . आश्रयं पाम्यो सतो, ते वहाउडी ॥३॥ महारो जरतार है ॥४॥ महारो पुत्र है न्त्या ने तहारी माता है, ते महारी माता है॥१ म्हादो कुनेरदन तेनुं यचन सानालीने

जुक्तु गु बोलो ठो ' त्यारे साध्वी कहेती हवी हु झ' ट्या बालक एक मातापण्णा पकी नाई ठे, पटले तेनी ॥१॥ थ्यने महारा नरता ठ सवय दर ॥श॥ अने महारा नरतारतो नहानो नाई छे, मारे शाक्यना त्यार पत्री एक दहादा कुनरपन तत्रु नन्मः हेसो हवो हे झायें। वारतार ब्रावु अजुस्तु शु बीलो हो? त्यारे र जक्क नथी बोलती जे कारण माटे खा वालक एक मातापणा जक्क नथी बोलती जे कारण माटे खा वालक एक मातापणा जुक्तु नयी बोलती जे कारण माटे ष्या वालक एक । ग्रुने महारी एक माता हे तेथी महारो नाई थाय हे महारो पुत्र याय है

॥५॥ छाने महारा नाईनी बीजी स्री यह, माटे महारी गोक्य यह ॥६॥ ए रीते छा बाल-कनी माता कुबेरतेना बेरयानी साथे पोताना उ संबंध देखाङ्याः ए प्रकारे आ अहार सं-स्री थड़, माटे महारी वहु थड़ ॥॥॥ अने महारा नरतारनी माता थड़, तेथी महारी सासु यड़ अने महारी एक माता हे. माटे जाड़ बायहे ॥१॥ अने महारा मातानो नरतार थयो, तेथी र ॥ अने प्रथम मने परएयो हे, माटे महारो नरतार थाय हे ॥ ध॥ अने महारी श्राय, माटे महारो ससरो हे ॥६॥—ए प्रकारे वालकना पिता कुंबेरड्ननी साथे पोताना . संबंध कहीने, बली कहेती हवी. जे आ वालकनी माता हे, ते मने पण जातानारी हे, माटे अने महारा नाईनी स्वीथड, तेथी महारी नोजाइ थाय हे ॥३॥ अने महारी शोक्यना पुत्रनी पिता थाय हे ॥ १ ॥ अने महारा काकानो पिता थयो, तेथी महारो वडाइड थयो महारी पए माता हे ॥१॥ छने महारा काकानी माता हे, तेथी महारी दादी लागे हे॥१॥ शिक्यनो पुत्र थायठे, माटे महारो पुत्र पण थाय हे।। ए।। धने

राखेली गोतानी वींटी कुबेरड्चने आपती हवी. त्यार पजी कुबेरइन पण ते वींटी

व्यं कहीने ते साध्वी, ते संबंधोनी खातरी करवाने भयें, पोते बत यहण करधें

पैत् हडी गतिमा गया ए प्रकारे घाडार समय छपर कुवेरदचतु द्यात कह्यु ख्या एक नमने आभीने समय देखाच्या धानेक नवती ध्यपेक्षामा तो प्रापे करीने साव्यव-सरे सबयनु विरुद्धणु जाणीने, तत्काब बैराग्य पासीने, पोतानी निदा करतो हवो तथा कु ती ग्रोप्डने टार्पे, चारित्र शर्षण करतो हवो ट्यने वली महा तप करतो हवो तथा कु रेरसेना *वेर्या* पण ते प्रद्यति सान्नववा थकी प्रतिवोध पासी सती प्रावरुनो पर्न हारी जीनोने एकएक सत्रय पण आनतीयार पया है ते प्रकारे श्री नगवती सुत्रना कुरेरदचा साध्वी, ए प्रकारे तेमनो छन्डार पोतानी गुरुषी पासे गठ अनममे 'करीने ग म्यामान आराधन करीने सदगतिना त्यार पड़ी कुनेर १ गइ एटले पीत सम्पक् प्रकारे २ गया ए प्रकारे ह नगवत था जाव । प्रगतिंनी पासे गइ बारमा शतकना सातमा । गेतानो धर्म

हरीने, वातकपा करीने एटले मारनारपा करीने, अने ताडन करनारपा करीने, प्रत्यनी-न्पषे करीने एटले प्रतिकृजपषो करीने, अने कार्यना जप्यातपषे करीने, एटले अमित्रस-अनेकवार अथवा अनंतीवार ज्ञा जीव सर्व जीवोनी माता पर्ड, पिता धयो, नाई धयो, ए रीते छपर कह्या प्रमाणे पूर्वे सर्व संबंध करी च्क्यो हे. एज प्रकारे सर्व जीवो पण थ्या जीवना मातादिकपणे करीने, अनेकवार, तथा अनंतीवार पूर्वे छत्पन्न थया हे. ए रीते सर्व जीवोने ग़यीपणे करीने राजापणे करीने, जुबराजपणे करीने, यावत् सार्थवाहपणे करीने, दास-मांहोमांहि सर्व संवंय यह चूक्या हे. इति संसारनी अनवस्यां उपर कुवेरसेना गिषिकानुं थयों हे ! ए रीते गीतमस्वामीए नगवंतने पूठ्युं. त्यारे नगवंत कहेता हवा. हे गीतम। हा! ज्तकप्रों करीने एटले इकालादिकने विपे अञ्चार लियेलो तेप्रों करीने, कर्पणादि वली कला शीखववा जोग्यपएो करीने, अने वजी हेप करवा जोग्यपएो करीने पूर्वे जत्पन्न लानना नाग ग्राहकपछे करीने, अन्य पुरुषोए उपाजेन करेला अर्थना नोगकारी नरपछे करीने ाणे करीने, एटले घरनी दासीना युत्रपणे करीने, प्रेप्यपणे करीने एटले चाकरपणे करीने

हछांत तथा श्री सगवती सूत्रना पाठनो श्रर्थ जाएानो.

・本ないなみなべいかかっ श्रर्थं —(जञ्ज के०) ज्या (सबे के०) सर्व (जीवा के०) जीव जे ते (श्रणतत्तों के०)त्र नतीवार (न जाया के०) नथी ग्रस्त थया तथा (न मुद्रा के०) नथी मरण पान्या, प्वी (सा के०) ते श्र्यात तेवी कोइ (जाई के०) जाति जे ते (न के०) नथी श्रुने (सा के०) ते श्र्यात तेनी कोइ (जोणी के०) योति जे ते (न के०) नथी श्रुने (त के०) ते श्र्यात तेवु कोई (वाण् के०) स्थान जेते (न के०) नथी श्रुने (त के०) ते श्र्यात तेवु कोइ (क्रुल के०) जाएवानी मरजी होय तो, श्री नगवती सुञ्जना वारमा ातु हष्टात जोड़ सेज्यो साधा १० १४ ११ १३ १४ १५ १६ १० १० १७ न जीवा श्यणतसो । ॥ अनुदूष्ट्रंचम् ॥ जड़ा। सब ज वाकडानु द्यात वती आ अधिकारने विशेषे ः ५ ६ ७ [।] न जाया न मुर्आ शतकता सातमा उद्गाम

यावा

II B G II

(मुह इस परंपरं के (मंभेर) वातम (बालाम के किंचित मात्र प्ला ( (जीया केंं) जीव जे ते ( (बहुसी केंग) पर्णायार (न पत्ता केंग) लोकने प्रतिनाग मात्र पण, ग्रथ (जार भेर) ने स्थानने विषे ( कार्ड पता अर्थ-(जहा केए)

नीयोने अनंतो काल पड़ गयो हे. माटे ने जीवोने जह झाल्यों हे.॥१४॥

いる

5

टेह जांग। तुषम गियार के, नोगगी आब्यो तुपण कीइ ursnesn सारी सारी जातिमा तथा सारी सारी योनिमाँ छएन्न थयो हु अने सारा सारा स्थानमा तथा प्ए हे निष्पना सुख ने झनतीवार मोगवीने बमन करया है, तीषप्ए तेने तेज हच्या, हजु सूर्धा जसी नथी परतु नु एम बाड़ा राखेड़े के,हु सारी सारी जाति ब्याविकमा जड़ने सारा ह हारा सारा हुलमा छत्यत्र वयो हु अने तु त्या आनेक प्रकारे जन्म मरण् पाम्यो हु रोगवीने काइ हप्त पबातु नथी पछ, छताटी तेनी तुष्णा जैम बतता व्यप्रिमा गायानो नेगो नावार्य हे ऽरेलाने खानारो) हम थाय हे १ वली नेनी ज्याता बृष्टि पामे, तेम विषय तृष्णा नृष्टि षामशे, माटे हे जी 1 एवु विचारीने विषय सुखथी। यन्य, खानर, श्रामर, झानरूप, मुखरूप खाने सत्तारूप एवु ठे र सर्र ठेकाणे जड़ने सर्र जातिना मुख छ ख थनतीवार । तमस्वरूपना अविनाशी सुखमा मग्न भा आ वे वे परनायमा आसक पट्ने पच प्रकारना निषयः जारो नपी जड़ झाल्यो एम नयी नोगनी इद्या राखोने वाताशी(बमन ष ₹)

## ॥ आयोष्टित्तम्.॥

20

निहान पास्य,। रदांन केंग) जो(श्रप्पाता क॰)ग्रात्मान वराम पाम्य अधात त्यणासंबंधा के०) स्वजन सर्व एवी (सबान केंग) अर्थ-(संसारे केण) संसारने विषे याश एवा प्रा ते कारण माट( संबेधि के०) सर्व। (मोकेंग)

विषे अनादि कालधी च्रमण करतां आ जीवे देव म-तेज बंधन हे,तथा जे विषयसाल हे,तेज विषहे. १, पोताना माता पिता नाई घटतो नथी. राखवा संसारन वनं स्थानक हे. तथा जे बंधुजन हो, जावार्थ-हे

```
(एमो के॰) एकतोज
                                                                                                                                                                                                                                                   (न्थ के॰) बधन अने (मरण के॰) प्राणनो वि
                           मटे एक पोताना आत्म राह्पतुज साबु सुख मानीने, ते कृद्धि, राजन, इत्यादिकतु क
ए प्रकारे जे तहारा श्रञ्ज के,तेनेज तु मित्र जाणीने तेने विषे मोह राखीने बेठी हु ते कारण
                                                                                                                                                                                               अर्थ-(एगो के०) एकझे अर्थात् सहाय्य रहित एगे जीन जे ते (कम्म के०)
                                                           112411
                                                                                                                                                              एमझित्र कम्मवेजवित्र ॥१६॥
                                                   हिपत सुख मानीने अर्थात् तेने इ खरूप जाणीने ते सर्व पकी निद्यति पाम्प
                                                                                                                                                                                                                                                                                विसहडके०) सहन करे हे वही (
                                                                                                                                                                                                                                                                                                              सतो (नर्गाम के॰)
                                                                                                                      एगो वधइ कम्म। एगो वहवधमरणवसणाइ
                                                                                                                                                                                                                             (मथड् केण) झात्मानी समाये बाये हे तया।
                                                                                                                                                         विसह्द नवीम नमडइ।
                                                                                                                                                                                                                                                                                      अने (वसचाइकेण) आपित तेमने।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                   फमबेलिखि केंग)
                                                                                                                                                                                                                                                                  नगतरने विषे (बह के॰) ताडन
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                   112411
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             (नमडइ के ०) नमे हे
                                                                                                                                                                                                                                    नापरणीयादि कमैने
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       क्क्नोज आ
```

i) m हतोज कष्ट मोगवीश. ग्राथीत् तहारां करेलां कत्यने तुंज जोगवीश, पण ते कष्ट नोगव-हनानो नाण नेवाने आवशे नहीं. एवीज रीते बीजा नवोमां पण कर्मवडे गगयेलो तुं, ए-एकवानेज सहन करवी पड़के; पए जेने अये एटले देहने अये, खीने अये, पुत्रने अये, तथा संबंधीने अये में अनेक प्रकारनां पाप करवां हे, परंतु तेमांनु कोड़ पण तहारी वे-पण ते बखत तहार ड:ख मटाडवाने माटे, तने कोइए सहाय्य करी नहीं. अने जे विषे जर्ड्स, त्यारे त्यांनी वेदना पए, तहारे नायाथे-हे जीव! जे वखत तहारो जन्म थयो, ते वखत तें एकलेज वण्ज कट सहन रखते तुं मरण पामीश, ते बखते ते मरणनी वेइना पण, तहारे एकजानेज सहन करवी अप्पा करेड नह अत्रो॥ ता कास दाणमुह्म ॥२॥ अत्रो न क्षाइ यहियं। हियंपि ाडगे. अने पठी ज्यारे नरकादिक नवांतरने ि गाने बीजो कोड़ पए खावशे नही ॥१६॥

अप्पन्य सुहंडक

द्यर्प-हे प्रापान्।(श्रत्नो के०) स्नन्य ने ते (स्रिहिय के०)श्राहेत(स्रिनिष्ठ)ने (न कुष्ठड (हियाप के०) हितने पण, ते (ज्यप्पा के०) ्न के ) हिते , 0) खन्य मेह (नहु के ) ने ए) खास्मानु केंचु ने (महन् माहे तु (मे पड़न, वीजा कह्यु ठे के, व वीशमा अध्ययनमा परत आत्माज करे हे, थाने।) ) करे हे पण (थाजी केण) सूत्रना वली श्री छनराष्ट्रयक कें) नथी करतो । देखें है ? ह

<u>데</u> 제

पए। ज्ञा थात्मा ने

गडनार

210 तया देव-SHIP. वली आ आतमा कोइ अपेकाये आत्मा हे. अने कामधेनु गायने पमाडनारो पण आ आत्मा हे. अने नंदनवन 40 डःखनो कता मत्व एज रीते। तया श्रीमेत्र पण शातमान हे. हे, खने कोइ खपेहाये खकनाँ

राग हेप करवो नहीं. ॥१७॥ आत्माल हे. एम जाणीने कोइना उपर

THI

जीव

पिता, नाड्, खीं. पुत्राहिक 112011 हे गाणिन्। (सयपागपा क जीव केंग

(बहुजार्गन विनं के०) ध

| तिरस्कार करीने, तथा मेहेणा मारीने, थने छानेक प्रकारनी युक्तिवडे करीने, पटले घद स्ती पेठे फूकी फूकीने तेच खाइ जाय हे छथाँत थोले दहांढे नरणा शेहेरमा ते लजनादिक चोर, तने लूटी लेडे छने ते यन घरार्जन करता जे पाप थुयु, तेना फलने तो नरकादिकने विभे, तु एक्तोल मोगवीहा यण बीजु कोई नोमयवा छावको नहीं माटे हे नज्य प्राणिन।'' हाङ्क विचार करीने न्यायथी धन छपार्जन करीने तेने काङ्क तो सारा मार्गमा वापरघ'॥१८॥ के।) ते ज्यारने करीने उत्पन्न थयु एनु, जे (पावकम्म के।) पाप कर्म, तेने (तुम चेव के।) र एकतोज (अणुहवासि के०) अनुनव करीश अर्थात् नरकादिकने विषेते पापनु फज त नमीने, तथा लडाड अमुखमा मरखात कट माथे लेइने, तथा पोताना स्वथर्मनी पण स्थान हरीने, तथा सीत्र दिनस शरीरमु सुख पण न गणीने, धन छपाजन कर्छ, परतु ते धनने स्कन तथा ज्ञाति आदिक लोक, तहारो ठपकार न गणता, छलटा तने दवाबीने, तथा तने टलाक ग्रुनये करी, तथा नीच सेवादिक षणा अकर्तन्य करी, तथा श्रमेक प्रकारे परदेशमा नावार्य-हे जीव।ते छनेक प्रकारे जीव हिसा तथा हुडकपट उतनेद प्रपवादिक के

ति हे मूर्व। तने केटलो उपको देइए! एटले ते थोडो पए आत्मानो विचार नयी . के, महारा आत्मानी शी गति थशे? एवो विचार लगार मात्र पण तुं करतो नथी.॥ १ए॥ नावार्थ-हे जीव! तुं मोहने वश पड़ने रात्रि दिवस पारकी चिंता करधा करे है. के, अल्ला करे हे, परंतु (तह केण) तेवी रीते, ते (आप्पा केल) आत्मा जे ते (थोवीपे असे सम्पत्न किलिनिन केण) नथी चिनवन करवी. माटे तने (कि मिषिमो केण) ग्रे (ार्रजाइ के०) ग्रा (तह के०) (जुस्कियाइ के 0) महारां वालक जूरुयां हे. एम (चिंतिआइ के 0) ते बालकोनुं तुं र (डांक्याइ केंग) अह इकिआइ तह मु।कियाइ जह मितिआइ मिनाइ॥ ग्रर्थ-(जीव केo) हे जीव! तुं मोहने वश थइने (जह केo) जेम ( ग्हारां वालक जे ते. 'एटले महारां ठोकरां जे ते (ग्रह केo) हवे (डिसिंग् (न विचितित केण) नयी चितवन करयो. माटे तने। ं हे. एटले टाहाड्यमां नेढवा पायरवादिक वस्त्र नयी, तेथी । तह योवंपि न अप्पा। योदो परा (

***** 1 तेमने अञ्च नाहा पामवाना ो, हाषा है, तथा 113 011 7 बासक, तथा आ महारो १ 20 किम्मवस Mr.

P

कम्मवसा के०) कर्मना आधिनपणायी शरीरनी साथे (संबंधो के०) संयोग थयो हे. माटे (इच के०) ए गरीरने विपे (तुप्र के०) तहारे (को के०) श्यो (निन्नंयो के०) अनुवंध हे? एटजे र् श्रिरने विषे तहारे शी मूजी वे ? ॥३०॥

नावार्थ-हे जीव! तुं अनेय, अनेय, अजर, अमर, ध्रव, अनंत ज्ञानमय, अनंत गीयंमय; ज्योतिःस्वरूप, पवित्र, अतिंग, अञ्चल, नि-

ड्डांघ, ने विजीत्स (विहामणी) एवी वस्तुए जरेला चामडाना कोथला रूप था शरीर हे. तेना शरीरने विषे हे जीव! तुं कर्मना वर्श्यकी वंत्राएतो हुं. तेने विषे महाराषणु मानी ले-इने, एटले चार श्रीर ते हुं हुं. एम धारीने तेना उपर ममत्वनाव राखीने शुं करवा मित्या हाडकों उपर रहेजी चामडी, अने मज्जा एटजे हाडकामां रहेजु मांस, अने मल मूत्र, ने द्रोनमय, आनंत चारित्रमय, आनंत वायमय; ज्यातिःस्वरूप, पावत्र, आतम, अ०५७,।नि लेप, निरंजन, अने आनंदमय एवा तुं निश्चे नय मते तुं. परंतु आनादि कालयी कर्मना वशे हरीने, अनित्य, अने अशायत एवं, अने त्वचा, मांस, हाडकां, रुधिर, नसो, मेद एटजे

ह्यांत लखीए ठीए. - जेम कोइ पुरुषे सरकारनो अपराध करयो होष, तेले करीने तेने स-श्रीर नपरयी मूझी उतरवाने माटे, विचारवा जेवुं एक

हेरान थाय हे १ इहां प्रसंगान्सारे ३

महा ड ख़बाइ बधीखानामा, अमुक वर्षनी टीप मारीने पूर्यो । ग सिंगहुना⁹ आ अ । जोड लेवु ॥३०॥ ब्र मात्रज मालम तुप्त . क्रेंब ते कियो १ कह त्यागड इत्यादिक कस्मित I एगं ममले पारए है। है। है। सर्व कल्पना आ महारा कह चांलय m तु एम नथी विचारतो के, सेव? एम स्वरी के कह श्राय श्यमुन्नपि ताना रग, कालो मजूरी साथे,

(कह आयं के०) क्यांथी आव्युं ने ?

होइ देवलोकमांथी, एम सड सडनी गतिमांथी आवीने नेगां थयां हे. तेड पोत पोताना कुटुंचरूप सर्वे लोक पण, कोड़ नारकीमांथी, कोड़ तिर्यंचमांथी, कोड़ मनुष्यमांथी अने

तेम थोडा कालमा नाश पामे एनो (मणुश्रनवे के॰) मनुष्य जवने विषे कुटुम हे, पए। ते बस्तुगते ग़िक खारमगुण है ॥११॥ ो, स्री खाचारामजी सूत्रना प्रथम सु-ट्यर्थ-हे द्यात्मन्। (सपाजगुरे के॰) क्षण कृष्मा नाश पामतु एव (सरीरे के॰) गरीर सते, तथा (ट्यप्रपम्तन सारिडो के॰) मेघना समूह जेगे, एडले जेम वापराथी मेघ शीप्र कमंने खतुसारे सुख ड स नोगवीने, पोत पोताना करेला रुत्यने झतुसारे, चात्या जाय हे रत्तु तेमने राख्याने माटे तु खनेक प्रकारना छपाय करीक़ा, तीयपण ते रही शकवाना न ज कीरड़ सीहणों धम्मो ॥३ गृ॥ । मणुत्रमनं यप्रपम्लसारि 113 611 री. ते कारण माटे तेमने तु एम मानी बेठो बु के, आ महारू तस्क्यमा प्रथम ख्यथ्ययनना, प्रथम उद्देशामा जोई लेज्यो कुटुवडोज नही परतृतहारु सायु कुटुवतो इ श्रा श्रापिकारने विशेष जाखवानी मरजी । खणनगुरे सरीरे। सारं इतियमेत नाश् पामे हे,

(अं केण) ने (मोहाएों केण) सारो. एटले पांच आश्वयथी विराम पामवा रूप(धम्मो केण) जिन्नेपाति धर्म से ते (कीरइकेण) करीए. (इतियमिनं केण) एटलु मात्रज (सारं केण) सारवे. देवादिक नवनी अपेकाए योडा काल रहे एवो, आ मनुष्य भित् या संसारमां जेटलुं धर्म साधन थाय हे, एटलुंज सार हे. ॥३१॥ नावार्थ-हे नन्य जीव!

- कराज़, एटलोज वार तहारो मनुष्यनव जाएावो. अने वाकीन

पगु हे, ते आहार, जंध अने मेंथुन

जाणवां. ॥ ३१॥

। मनुष्य नव लेखानो हे. जेम कोइ घर बलतुं होय,

तेवा क्राणिक शरीर वहे, जेटली घाडे तं

नव है. तेमां वली आ शरीर कृषे कृषे नाश पामे तेवुं हे. अर्थात

गड़ेला घर जेबुं आ शरीर हे.

वारनांज तहारो

सामान कादी ध

त्मानु साथन

113311 ॥ सनुदर्भन्ति॥ ज्नमडकं जराइक

ज्यरी-(ब्रहो के

जति खाभवी एटले खा वात

भरता

प्यट्रण

ऋर्थात् सर्वे प ्या ससारमा

जे छ ख़्रायक न होप डिस्म कें

Hell !

डिस

, a

जरा छास्त्र य

उच्चमा अनेक प्रकार गाड ख प्राप्त थाय हे

ावत पणुन 5 सि पायने

कें) बली

100

(국 추야) 유척 र थाय हे

पटल श्र

श्रनेक ऽ

(e)

श्व षड़ होय, ते वेदना मटाडवाना छपचारने बदले, जलटी तेने वधारे वेदना थाय; तेवा अप-ताना योनी यंत्रमांथी निकलतां, माताने तथा पोताने, अतुल बेदना थाय हे. तेवी शीते मरणतुं डःख पण जाणी बेवुं. हवे जन्म अने मरण ए बे डःखोनी मध्ये, रहेला डःखोतुं वर्णन करीए ठीए. बास्यावस्थाने विषे, ते बालकने बोलतां न आवडवाथी, तेने जे वेदना नावार्थ-हे आत्मन्! तुं विचार करव के, च्या जीव ज्यांथी जन्मे हे, त्यांथी ते मरण प्रत केवल डःखमांज वर्ते हे. केम के, जन्मती वरकते डःख घणु पढे हे. ते विषे शास्त्र-मां कह्ये हे के, अधि बढे तपावीते, लालचोत करेती साडात्रण क्रोंड सोयो, शरीरमां वेदमा गर्नीने विषे थाय हे. तथा जन्मती वखतनी वेदना तो, कांड कही शकाय तेवी नथी; जेम जतरडामां घालेला सोना रुपाना तारने, जेम बलात्कारे खेंची कांटे हे, ए हधांते मा-हिली एवी साडात्रण कोटि रोमराय, तेने विषे चांपतां जेटली वेदना थाय, तेथी खावगुणी के0) क्रेश पामे हे, ते (संसारो के0) संसार जे ते (डाको के0) केवान डा. व हपज हे. अपरि चार करवामां आवे हे. जेम के, ते बालकने मांधु डःखनुं होय, च्या संसारमां कांड पण सुख नथी. ॥३३॥

वीजा वे ड ख छना थाय है जेम कोड़ वस्तुनी पढ़ी करवा मादे, ायो, चोमासामा छसन्न षएला छाश्रोरे दश पदर देडका सेइ, बह्मी जवानीमा एटले मानी लिपेली १ गाप्ति यती नयी -कदापि पराखे एक ह भवस्यामा पए, ससारना समस्त सुखनी प्राप्ति । प्राप्ति पाप हे, तेवामा बीजा बे ड ख छना थाय डखतु मटाडबानो छपचार करे हे इत्यावि

ग्रहरणादक बथा सुख नोगावानी इज्ञा करे डोचेतु महाकट छावी पढे ठे जेम के, पु. मी जाय, बली कोना सुखनी इज्ञा करवा हरे हे, तेगामा ते पड़ो, काइक नुझे थवाथी केवामा यीजु एक देडकु छेवा बे देहका कूदी जाय है यही वेने पकडवा जाय है, तेयामा चार जतार खे जाय, बली घर समु कराववा जाय, एटलामा र द्यातनु सिन्धात ए ने के, खी, थन, पुत्र, निरोगीपणु जगन्मा मान्यपुष्ट, तथा जाय हे, एरतामा इन्य नाज़ षद्द जाय, गत्ती पराणे कदापि ख्व्य मन्धु, तो ज़रीरे । ग्रय,कदापि शरीरे साजो षयो, तो षर वती जाय,बती षर सम् कराववा जाय,एरट अनुक्तपण् इत्पादिक वया हे, तेवामा तेमाथीन छाण्णारषु छाणचितन्यु, जिच्हा महा त्रना सुखनी इन्डा करवा जाय हे, तेवामा खो मरी जाप, ः हवेलीचे, छाने स्वजनाविकनु ह

नामें हे, तुरे हे छाने फाटे हे. बली मुखेयी बराबर चोकुं बोली शकातुं नथी. छाने लोकने म्यांथीज नोगवाय ? केम के, सर्व सुख नोगववानुं मुख्य साधन एवं जे शरीर, ते निर्वेल, हाली उठे हे. तथा पडी पए जाय हे. तथा खांसी, थास अने शरीर मुं निर्वाल वये हे. अंग अवस्या राखीने सुख नोगववा जाय, तोपण नागवी शकातु नयी. तो स्वावस्यामां तो आंखे पूरे देखातुं नथी. काने पूरे संनलातुं नथी. नाकमांथी लींट नितरे ठे. ने दांत पण तेमी, कड्यु यह जाव हे तेमज शास्त्रमां कह्युं हे के,हाया पग विगरे, अंग यरयर धने हे. तथा

तया यहालो पुत्र थने पुत्री विगरे,ते नोसाने तिरस्कार करीने एम कहे ठे के,तमे बानामा-ना खाटलामां पड्या रहोने! नकामो लवारो गुं करवा करो ठो! तमारुं हेच्यु फूटी गयुं ठे, पण कांइ थमारुं फुटी गयुं नथी के,तमारु कह्यु करीए!! यली परना खुणाने विषे खांशी खातो नतुं थतुं जाय हे.तोयपण यया काममां महापण मोहोजवा घणो जाय हे, त्यारे पोतानी खी पृणा ज्यनादर करवा जोग्य,तथा हांसी करवा जोग्य थाय हे. तथादिवसे दिवसे नान पण

खातो एक तूटमूट खाटलीमां पड्यो रहे हे. बली जवानी अयस्थामां पुत्रादिकने पालन पोष-

ण करेतां, ते एवी आशाए के, तेन कृवाबस्थामां महारी वाकरी करते, तायपण ते खी,

Î. परानव करे हे-ज्ञाने बली गड है। एक धना नाम माथनाह हनो ह स्ं जप तीर्वाती नमरीने तिष प्रह्णा धनताज्ञा

धन, डाख्यातां यंधुनन, तथा खनन,

गापर्युं. त्यार पठी ते थनो, कालना

रही. अने सर्वे अंग कंपवा लाग्यां. अने नेत्रादिकमांथी पाणी गलवा मांडचुं. त्यारे इलवे हलवे ते सीयादि-कोए, ते इन्दनी चाकरी घटाडवा मांडी. केमके, इन्द्रपणुं तो वथवा लाग्युं माटे. यली ते हन्द, चिन्तना अनि-

मीसानुं वर्हतर क्टनानुं ने अमारा कर्ममां क्यां सूभी यात्नी पुक्छं इंगे? ते कांट मालम पहतुं नयी. त्यारे तेमना लामीज एटले ते मोसाना पुत्रो, बली ते स्वीयोने समजावीने मोसानी चानरीमां बलगाडे छे, त्यार पत्री एक दिवस ते सर्वे श्रीयो, मेप करीने पांत पांतामा जरतारने एष करें हे के, तमारा पितानी अमे घली घली चाकरी

गन बंडे करीने, रुद्धावलाना डालक्ष समुद्यमां पन्यो. नली ते कृष्टना दीकरानी सीयो एम कहे डे के, आ

ने स्नान करावतुं, तथा जांत्रन करावतुं इत्यादिक जे काले जेम करां घटे, ते तेम निरंतर करती इती. तेम करतां करतां केटलाएक दिवम गया, पत्री हत्वपणुं हन्दि पांग्युं. एटले आखा शरीरनी इंडियो स्वाथीन न

हता पठी कोई कार्य प्रसंगे, ते छन्दनी खोयो पोताना सामीनी चाकरी करती हती. तेमां पए। शरीर चोत्ती-

अग्रेसर करवा हे. तथा तेषणे अमारो बहु जवकार करपो हे. ए रीतेपोतानुं मान कुजीनपणुं,ते पुत्रो जापायता

तीयपुण ते पुत्रो एम बोले डे के, अमने आ पितात्रीएन आवी मुद्र अवस्थाने प्याज्या डे. तथा सर्वे लोकना

तलामां कुशल इता. अने मंसार संबंधि सघला कामनी चिंतानो ज्ञार, तेणे ते पुत्रो उपरत्न नांक्यों इतो.

ारिपाकपणायी छन्द अनुसाने पांम्यो. ने तेना सघला पुत्रो, तेनुं सारी रीते पालन पोपण करवानी योग्य

्फलेज नाना मकारना जपाये करीने, थन जपार्भन कर्छ. ने ते सघलु ' ाया मित्र, तथा ख़ी, अने जाई आदिक सर्वे संबंधीतना जोगने अर्थे

do.

करीए डीए, तांयपए। हे बृद्धपएएमां बुद्धिनी विकलतापी, झपारी करेली चाकरीना जसने परेले, उतरों अ-

रृष्टात्रसातु ड ॥ जाएत् संसरान अभ (A) मानता, पए। ह्व ३ माकरी थाय है। त्यार है। लगम नथ E

पासे ने मासानी

गानवामों न ३

गाटे तपने जो अपार कत्यु ।

एनस आऐ है

1

दिनमें १

नस्य है, ते नखीए बाजु काव्य, टाकामा विधानम वर्ती ते ह्यावस्थाना इ खना

द्याष्ट्रभंग्यति स्पमेव हमते, वक्तं च लालायते॥ , दन्ताश नाश गता न जयपत ॥ शाद्रजानिकी डिनइतम्.॥

म्कियं नैय कर्गोति यान्यवजनः पत्नी प्ण विकल थाय हे, अये-इ.जावस्यामा

मकवा धार्या एटले ज्यां पग 1

मरीरे करचोलींच बले हे. याने हाय, त्या न मुकाना बीज ठकाण

मुक्ड जाय हे. छाने दांत पण पडी जाय हे. छाने छांले पण फांख छाववायी बराबर दे-मुखमाया लाल चूए ठे. वली खातुं नथी. अने रूप पण दिवसे दिवसे परतुं जाय हे. अने ह कम क, पुत्र पण

मारे ए स्वप्णानुं जीवनुं, ते केबल कष्टरूप

E/

परणेली स्री पण, सेवा करती न्यी. माट

明明

। करीने परानव पामेला पुरुपने थिकार

गियवज्ञन पण, ते छन्दनु कह्यु करता नयी, अने

पूर्वे एटले जगनी खन्स्यामाध्यमें कस्यो हतो,तेथी केटलाएक लोक ते नूहनो निर्वाह करता हता, ते पण आ युन्धास्थामा,तेतु इ ख नाश कर गाने समये यहा नया जोम कोड़ माणस वदनान् ड स अत्यत जाएव ्वाठे हे, पए क्रोड जीवो मर्नु, इन्नता नृपी ामा हे नीका नर इरिया वच्चे नागी जाय, त्यारे जलक थाय है,,तया जे दृद्ने जोवार्थ बुहने पूर्ण सहाय्यता न मजवाथी मी थाय हे इत्यादि विस्तार ा १११ स्ट्रीस्थनप्रमान्धाः बती आसमा कहा ने के. गए कहणा छत्पन्न थाय, तेरो ते बृद्ध मन्त्रे जीवारि इस्रोति । सर्थ-पूर्व व्दारस्थान ने इ क गणमोने, नेम इ ख थाय माटज गास्त्रमा कह्य वे के, २ भाष हे तथा बृद्धारस्य एटलाज माटे निर्मं

जोड़ लेबुं. वली गाथामां च शब्दनुं ग्रहण करधुं हे तेथी इब्य संबंधीनुं पण पणुज डि:ख हे; वली एज अधिकारने विशेष जाणवाना अधि पुरुषोए, भी आचारांगजी सूत्रमांथी

D R

आये डाःखं न्यये डाःखं । थिमर्थं डाःखसाथनम् ॥॥॥ अर्थानामर्जन डःष । मर्जितानां च रक्त्णे ॥

अने धन गये पण डाख के. अर्थात् ते धनज डाखदायक के. माटे डाखतुं साधन एवा ध-तेमज छपार्जन करेला धनने साचववामां पण इःख है. माटे धन खाब्ये पण इःख है, नेवुं डाःख थाय हे, तेबुंज डाःख थन जतां पण थाय हे. एटलाज माटे ज्ञानी पुरुषोए या अर्थ-आ संसारने विषे मनुष्योने बे प्रकारना प्राण है. तेमां एक खंतःप्राण, ने बीजा उःखनी पंक्तिमां धनने पए। गएषुं हे. केम के, (अर्थानां के०) धन मेलवतां पण डि:ख तिः प्राण, तेमां अंतःप्राणतो प्रसिष्ट हे. यते बहिःप्राण ते धन हे. केम के, प्राण

संबंधी इःखनो

तने धिक्कार थाने!! ॥धा।-ए रीते जन्म, जरा, रोग, मरण अने धन, ते

विचार करवां. पण अंथ परंपराए न चालकुं ए उपदेशः ॥ र र॥

रहते श ब्प श्त्रेष,काषारूप नगरमा गिववता ाप पदी ॥श्रुष्ठ॥ ग्या, तथा जाय के) ज्या सुधी प्रकृत तहम राक्तमीए नक्षण नथी : त्य म् जाव मृष् जाव म श्रयंन्त्रे जीव।

P P

अर्थ-(यावत् के०) ज्यां स्पी आ श्रीरह्म धर साजुं हे, तथा ज्यां सूपी जरा नथी आवी, तथा ज्यां सूधी इंडियोनी शिक नाज्ञ नथी प्रामी, तथा ज्यां सूथी आवखें पूर्व नथी धेरो नथी वाल्यो, अने ज्यां सूथी कालना सपाटामां बरोबर नथी आज्यो, त्यां सूथीमां तुं जेटलुं आत्म साधन करबुं धारीश, तेटलुं बनी शक्ते. माटे जेम बने तेम प्रमाद र्तने जलदीयी धर्मसायन कर्य. ॥३४॥—चली नर्तेहरिये पण कह्यं हे के, मोहीति जनने हि क्षेखनने, मेत्युर्धमः कीह्याः ॥३॥ यावचान्चियशाक्तरमतिहता, यावतक्तयो नागुपः॥ आत्मश्रेयसि तायदेव विज्ञपा, कार्यः प्रयत्ना महान । यावतस्वसामदकलेवरगृहै, याबजारा दूरतों 🔭। ॥ शादृत्तियिक्षीदितहत्तम् ॥

जवान अवस्या ठे, माटे हालमां संसारनां सुख नोगवीने, पठी वृष्ठावस्थामां धर्म साथन

ययुं, त्यां स्थीमां पंजित पुरुषे, पोताना कत्याणने अथे महोटो प्रयत्न करवो. अर्थात् रा-त्रि दिवस परलोके सुख थाय, एवाजासाधंनमां प्रवेतिं, केम के, कोड़ एंबुं विचारे के, हालतो

"यात्रज्ञ जरा.

त्यारे जे कूनो खो-ग्मेंसाथन करी, गु, एम पारवु ते सिन्ध गयज नहीं ,केम के, वृ हावस्थाना ह्यानाविक ड खपी, धर्म साधन वनी हाकधु मधुंज थर्थ-हे जीव ! (जह केo) जेम (गहमि केo) घर (पतिने केo) बताया माड्ये कृयो स्वादी प (न सक्तर केंग \$0.00 \$10.00 (बाधिड : कीरए जीव ॥३५॥ तानी वयम करवी, ते केवी कहेवाय ? एटले घर बलवा माख्या पढी करीतु, पए। हे सक्कनो!, जेम (प्रोदीसे के॰) पर आतिरो बलवा माड्यु न सक्र चली ष्ज वातने मूल प्रथमार षषा नणानं छ धर्मे साथन करवामा प्रमाद न करवो ॥१॥ होप ते,पण (कूत केष) वलता तम, व द्वावस्थामा ्र धम्मो केंग्) कोड् पण, प्टले समर्थ । जह गेहिम फ ्र ११ तह सपते म (कोइ के इयाने

er X नावाय ह आलप्त मार्ग, एटले विषयी जीवनी संगते पशुनी पेठे फोगट अवस्था भामावी. अने हवे ज्यारे गरीरनी गिक होणा यवारी, नकामा जेवो ययो, अने वक्षी ज्यारे निक्तामा ने कर्म कर्म कर्म संग्रे के महाराभी श्री वन्त्रवानु निक्तामा ने पिक हवे महाराभी श्री वन्त्रवानु निक्तामा ने पिक क्षेप के हवे महाराभी श्री वन्त्रवानु निक्तामा ने पिक क्षेप क्षेप क्षेप क्षेप पाली क्षेप क्षे तमथे याय. (तह के०) तेम (जीव के०) हे जीव! (मरणे के०) मरण (संपने के०) प्राप्त नावार्थ-हे ज्यात्मन्! ज्यारे (जवानी ज्यवस्थामां) तहारे थर्म करवानो ज्यवसर हतो, विचार, ते व्यर्थ हे. एम देखी, तु विचास्य के, यमें सायन तो नानपण-जेम क्वाना कांठा छपर सते. एटले मरण नजीक आब्ये सते (यम्मो केण) धर्म जे ते (कह केण) प्राये पएं। कालेज सिंह याय हे. यथवा लाकड्ड पड्युं होष, तेमां (कीरए कें) करी शकाय? ॥३५॥ गहीने, ते बलतु पर होजा है, इत्या दिक विच रियांज, अम्यास करता करता मि साथन करवाना। 27

हे, पण काने करीने घसारापी कडा कापा पढे ठे पण तेवी कापी पाडवाने, कदापि लो॰ 113411 नेबो कापो न पडे नेम तु वाल्याव तारुझ कंग) माधनमा वर्तवानी अभ्यास कर्य 113 611 खणरमणीत्र च तारुन 'च केंग) वर्जी (एप के०) था (ह्व के०) श 高 देवस घसे. तोयपण, 50 सकाषुरागसारस वेषय कषाय होठा करवाने मार्ट, ' तिवेत पण पोडा कातमा नाश रूवम ऽसासयम प्त चचल ब ानी साकलपी आखो । तत् क्ष

प्रकारना रंग सरत्व,

सरिस के०) सध्याकालना नाना :

निगी हुण नरगा मोटे कर जानेज्ञापी इस खते बढ़ो नगरा क्या रुपनी स्तुति मोनजी हो। झाजरा सस मर्पो मपाएपूर्य पड़ाज्यी झम आनद पोस्या माटे मोगू गुणाल्यु के,ग्रेंबुढोकीमा क्देगय अ,ग्राजक्ष्य हे एक्षे बन्दी दिनार टे क्या छट्ट गयी पनतहुमार,हरक्ष्मा बखेली स्तुतियी मसूल लागी कोन्यो,तस आ बँडा। सारु रूप मोट्टी से लड़े दरबुट्ट ज्यार राजपन्तामी क्ष्मानकार गरण करी हे तल स्त्रा पहंके,ग्योर सिंगान छपर पहुड़े, त्रप रनी पर मेला मुपर्य खनामां में क्ष्मी स्त्रीं षड्, ते बात कीड में देनीने रची नहीं, प्रशि तें ज बाका राजासे शियरपे मराद्र्णाला यत पुष्पी गयाँ सनतहतारमा देव ने बेजा धाज जप्पा हता,मैंते यामवर्तन मारिक पदार्थोनु माप रिजेपन क्ष्री जक नक्षात्रुं पीरिषु पहुर प्रजी ने कलानपनन करता मारे येशे हतो समामें रिवरण व्याउन देवता, तत्रु क्योहर क्षुम,क्षेत्रमणीं काषा प्रती चवना सेरी कोति,साङ्ग कृष्ट्रमानद् पार पुरार का अने महारा गण जाश थाय होजायोर हो हु पोजासी कापाए नेटो हु,जो न गैजा तो महार्के हर गण हुट में ब्रासून नमकारने पाम, अने गतित धड् जाट जुटी देशेए क्षेत्र सारे जमे राजसजाधी पूरुषु तम माधु रम्ययुखास्यु दिंगाप् कमु मने तमारू क्पद्यने पूर्ण खते व्यत्ने तमारा वश् क्पनी स्तुति मांनजी इती आजा तास आगीश, एम नहीन स्पांग नास्या नथा स्पार पत्री सनत्रकृषारे छत्तम अने अपन्य प्रवाजकारी पारण कर्षा हरीने, वे राजमनामां आदी निहासन उपर बैटो 'यामुबानु मम्य ममिषा,धुनमो,गिष्यानो अन अन्य सनासदो बोग्य आमने रेमी गषा छ. राज पर, समरतमपी अने समागमायां गितींग बांजा स्वां वं(रयाइ खां है) अने ह जपारवी नेम पानानी काया, रिक्षेष आन्यने छपनाने हेम ब रोग्ता नरा मधि गुष्णाच्धे,षग्ने चक्रपांसिष् 

सि ध्वे

त्या पेला देनतात्र पाता र्गा स्वष्ममं ने जेप मागु

साम्पा अरूपन ६५ वर्षां आनंद वावताने बर्ने नाए होर पाच्या है।

रक्तवार्तिए पूनुषु आहो ब्राह्मणो! गट बेला करतां आ बेला तमे जूदा क्षमां मांधु धुणाब्धुं,पनुं शुं कारण ठीते मने

अने अगुचिमय कायानी आवो प्रपंच जोड़ने सनत्कुमारने अंतःकराणमां वैराग्य जलक थयो.के,केवल आ सं-ह्न डे, त्यारे खेद पाम्या. अमे कहीए डीए ते वातनी सिष्टता करनी होय तो, तमे हमणां तांबूल शुक्तों।त-तहो. अवधिक्ञानानुसारे विमे कद्युं के, हे महाराज! ते रूपमां अने आ रूपमां भूमी अने आकाश जेटलो फेर पदी त तुल्य हती. पए। आ वेलाए फ्रेरक्प डे.तेथी ज्यारे अमृत तुल्प अंग हतुं,त्यारे आनंद पाम्या हता. आ वेला फेर ायों हे. चक्रवांतिए ते वात स्पष्ट समजवा पुछतुं त्यारे प्राह्मणे कह्युं. आधिराज ! पथम तमारी कोमल काया अस् काल तेना डपर मक्तिका वेसको अने ते पर्याम प्राप्त ययो. सनत्कुमारे ए परीका करी तो सत्य उरी,पूर्व कर्मना ॥पनो जे जाम, तेमौ आ कायाना मद संबंधनुं मेलवए। थवाथी ए चक्रवार्तिनी काया फेरमय घड़ गड़. विनायी

पोग्य नथी.एम बोलीने,ते छ खंमनी प्रभूतानो त्यांग करीने चाली निकल्पो. एंबु जाएीने छाई ममत्व न तिअसचावसारिज त्व अस लग्नी विस्यमृह जावाण गयकन्नचचलान

तजवा योग्य हे. आवीने आवी अधुची खी, पुत्र मित्रादिना शरीरमां रहेली हे. ए सघछुं मोहमान कर्ष

*

(लाहीं ने कि ) लाहमीयों जे ते (गयकन्न चंचलान के क)

जीवाएं के ०) जीवोनी

(तिद्यसचाव सा-हेखीने नु ऋह कार पारण करे हे, के, खा लहमी 쾗 । बोध पाम्य ायकी पोडा कातमा दिए पएता, तहारा जोवामा आये ठे, माटे लक्ष्मीयोनु रीवा हता, तेन्नेज विसयमूह केंग) विषय सुख ने ते ( बुप्रमु केंग) CE सोला पींडा धने**पनी छा** ठतिवासा परंतु ए लक्ष्मीयो चचल हे केम के, थोडा काल छपर तें जेनुने मीटा धनादय नि के । हे मूढ जीव 115 311 जवानाज नथी वन तथा लक्ष्मान असस्य नाणां, श्री जबक्र जेवा, तथा धूमाडाना बाचका जेवा थसित्य ाला रमती पेते शीघ नाम पामे तेवां हे वली जीवोना शब्दादिक विपय ! ापीना कान जेवी चचल हे छाने।

वि अवे पांचमा त्रबादेवलोकने विषे तिष्कजुनक जातिमां महादिक देवता हतो, ते त्यांथी (देवलोकथी) च-राजगृही नगरीने विषे क्तष्तदस्तामा शेठ तेनी थारणी नामे जायीनी कुखमाँ, जंदुस्वामीनो जीव, जे माता हि गिता ॥ मने दीठो, पठी ड्यारे ते कुमरनो जन्म थयो, ग्रथरनी पासे धमेडेशना सांत्रतीने बैराग्य पाम्पो त्यारे श्री मुधम स्वामीने कहबुं के, हे जगवन् ! हुं चारित्र पए ते स्रीयोनी पाठा आवीत दोका पालमी माता पिताए कहुं के सुधम तेमां चाया यतमा मोनपण धारण करी रहा. त्यार पत्री माता पिताष्, आत कन्यात्रेना पिनाजने कहतुं के, अमारो जैत्रथां जपहेलो पञ्चर, पोतानी पासेथी निक्तरयो देखोंने, निचारमा लाग्यो के, इमएां जो पने आ लेड्य, पए पहारा माता पिताने पूडी आबुं एम कहीने पाठी घर तरफ आबे छे. एटलामां मार्गमा युवान अवस्था पाम्यो, त्यार् गोलो लागी जात, तो हु अवातिष्णामां मर्ण पामत । एउं जाणी श्री मुधर्मस्वामीनी पासे तेने परणुं; माटे तेने परएति पठी दीक्ता लेने ते सुपरे समित मूज ने बार बत है, ते बारे यत लीयां. प्टले खंगीकार करवां. णी डकर डे. एवी शिते घली घली ममजाच्यो, तीपल जंब्रुपारे मान्युं नहीं. त्यारे साथे जोग जोगड़ नहीं. एनो त्याग करीने, फरी घेर आती माता पिताने कछुं आज़ा आगो, हुं शी सुधर्मस्तामी पास दीका लेउ. सारे माना पिताष कर्युं के, त्ती मयीदा राखी के, कदापि माता पिताना कहेगाथी खीयो परएाबी पडे तो, एवु नाम दीधें. अनुक्रमे पठी माताल् स्वप्नमां जंब्हक साथे तहारं सगंपण करें हु डे, यारे तेनो जन्म महोत्सव करीने जंबूक्मार पुत्रपणे आवीने उपन्यों. स्यार पुत्र! आठ कन्यान

स्बी स्रोप हो जहां परवामां, पव ते क पांडोंनो त्याम है सामनी मई घरिया मह्या लागा क, अमे नह नहस माटे नमारे दीकरियो मा दीका छे, मा अमारी दाप

क्षां दीका क्षां नहीं हमणा तो हे तो कपणीना न्याय पशाचाप क, हता मजान दीका छ। सीयोप कल के, हे स्पारि मनारत ग्रुप्त मन्यु है, ने सारी ग ोइनी साथ व्यान्तर

मिने क्यापी मत्ती ?! कन्त्ने तमार ों, पोतान सासर ग**र्या** नन्त्रीय कृष्णु, ते क्ती रीत पत्नी ज्यारे पीमाना मालाने पुत्रग्र के, घ्या मालादी वित्र वाहमु रोग्ला मरीन, पालमां मुनया दंशना व त्यारे मालाय है यारे साताये शन्तरी १ ग्वांयी आरी ै

क, आद्या

ठतुं पाए। पहे ते पीये, एवी रीते च्यार महिना पर्यंत ते खालमां पडी रह्यों. इहां कोइ ज महिना सूथी पढी रह्यों एम पए। कहे जे. "तत्व केवली गम्य" त्यार पजी लिलितांगना मा बापे घएों ये जोयों, पए। जड्यों ने ही. तेथी शोक करवा बेठां, एटलामां वर्मात आज्यों तेथी खालमां पाए। जराणुं, ते पाए। कहाडवा सारं ते लिलितांग कुमरने, खालमां छतारचा. अने विचारथे के, पनी कहादीश. हवे राष्टीतो राजानी साथे रम-बा लागी गई. अने लिलितांग खालमां जूले मरतो, कोट अन्य आवीने एठबादी नांखे, ते खाय, अने ए-था कहु छुं ते सांजाती. एक नगरमां एक शेठनो पुत्र लालितांग कुमर एवे नामे, महा रूपवंत हतो. तेने एक दिवसे ते नगरना राजानी रूपवती नामा राणी छे, तेणीये दीठो. त्यारे एकांते बोलाबीने, तेनी साथे संक दिवसे ते नगरना राजानी रूपवती नामा राणी छे, तेणीय त्यां आञ्चो. त्यारे जयभ्रांत थहने, राणीष तो पनी पस्ताशो!! एवी ख़ीयोनी बाएगी सांजली जंबुकुमरे कह्युं के, पूबींक दृष्टांते पश्वांताप नहीं करं. परतु एक नगरमां एक शेवनो पुत्र लिलितांग कुमर एवे नामे, महा रूपवंत हतो. तेने । खेती करेली डे ते कपाबी ले, पड़ी शेलडी बनावजे. एडुं जोकोनुं कहेबुं तेले मान्धुं नहीं, अने शेलडी त्यारे पथाताप करवा लाग्यो, तेम हे स्वामिन्! तमे पए। उतुं सुख मूकीने बीजा नवा सुखनी चाहना करोडी । तथे हो हो हो । परलामां क्वानुं पाणी ख्टी पड्छं, तेथी जे जगेली शेलडी हती, ते पण सुकाइ गइ.

P No

पाए।नी साथे लिलितांग पएा, तए।तो तए।तो नगरनी महोटी बालमां जइ प-माता पिता जश खालमांथी कहाडी घेर लेश गया.

पड़ी रह्यो, बारीर पीछुं पड़ी गयुं, हाडकां नीकली आञ्यां, माता पिताये यणा

ड्यो. तेने लोकोये देखीने, तेना माता पिताने जरु कहां.

बाल उघाडी, ते बालना

हिंगी पए करते करता पणा दिवस E येगामा पत्ना यजी माजा मने राखीमे देनीम STT. । यम कथनाकु गया त्वारे सड़िक मात्रचेत बदा. पती मौषपीष्पार निहा न्त्रारमी फरना निष et et नेवी मनन निवा आर्थ जगादीन, नमाणु न्ता, पत्रनामां अयुद्धमान, मधापे धन्य 1113 12.23 नितादिक मणनी मानति कर नेत्र ग्रांगिर नार पधे "गारे प अगे ने सा"या क, क्षते के या यम् । स्य निया ने बुरी आउ स्थात, मधारम । लमी नथी वृशामी वृक्त मन्तर्भी सरमानिती निवा त्मारती अमारता तर धन्ति विकापी यपी के, ग्राप कार महा नारा TINE. F 

D X टीपाना स्वादमां मत्र थयो थको, पोताना उपर पूर्वोक्त अनेक जातनां डःख पड्यां डे, ते सर्वे भूटी गयो. ए-टलामां एक १शविद्याथर आवीने कहेवा लाग्यो के, हे पुरुष । तहारुं डःख देखीने, मने दया आवे छे, माटे ं काडनाः वांचुः चुं. त्यारे ते पुरुप बोल्यों है मधपुडो ठे, तेनी १०मक्तिकाछ छडी छडीने ते पुरुषना श्रारिने, चटका मारी रहेली छे प्टलामां ते मधपुडा-साधे विमानमां बेसी चाले. मांथी एक मधनु ११टाँषु टक्कयुं, ते पेला पुरुषनी जीनने जइ लाग्युं, त्यारे ते पुरुषे छनुं जीया मांडयुं तो तेषो दीहु के, मधपुडामांथी ए मध्विड पडेडे; एंडु जाएति ते टींपानी नीचे महोडु जघाडुं राखीने जटक्यों अने रे जालाने एक एकालों अने बीजो एषोलों, एवा वे छंदरो कापी रह्या छे. वली तेनी छपर एक मधमांखीनों प्ण मोहं फाडीने बेठों छे. तथा ते बहना थड़ने हाथी धूणाबी रह्यों हे. तथा जे शासामां ते पुरुप लटके छे, जबूरुमरे कधु के, हे मजवा! संसारमा सुख ठेज क्यां! के, जेने हुं जोगबु. संसारनुं सुखतो मधुविड्या समान ३. तेनी लालचे जीय संसारमां रफते छे. जेम कोट एक १पुरुष भूलथी जजह श्यटबामां जह पड्योतेनी प-जवाडे एक श्हाथी दोड्यो, त्यारे ते हाथीना जयथी नासतो जागतो, एक बढनी धशाखामां जइ तटकी र-बो. ह्ये ते शाखानी नीचे, एक ५कूछ छे. तेमां च्यार ६सर्प पोतानुं मोहुफाडीने बेठा छे, तथा एक अअजगर नथी. महारे तो मात्र नवकार मंत्रनो आधार हे. एवा धर्मीपदेश दीथो, त्यारे प्रत्ये कहुंधे के, आ नवी ९ ऐति। खीयोनो त्याग करीने, हुं दीका या वास्ते ले हैं! संसारनां सुख जोगवीने पही दीका लेने. पनी है आपनी तने डि:खमांथी आववा आन्य ! महारा , श्विमानमां नेसी जा . हं विद्यायरः! आ एक.टांषु मधनु महारा मुखमाँ

> D N व विश्व

यो ।

तो चालुं, प रीते एकेक टींपाना स्वाद्मीं

आवे

एम एक टॉपुं आब्ये, बली पए कबुं के, आ बीज़े टॉपुं

लांजीते, प कांड नान्या गयो है. जाण्य क एतो प्रयोज नाणो यनो, ने विकट स्थानन गेंड नही, र नक्षी नकत्त्रश वक्षा 

५ जन्म हें साम्ब वणी प्रसिद्ध है, **भ याजुलाक्ष** एक्स के ्ट्रल र्ष्यातमां मिन्द्रति 3 MIL जीर २ महारङ्ग अरबी ड नर्कत्त्र ह्यायक्ष सर्वे

वेष्प मुग्नस्प मधनु टापु १२ मुगुरुष्प

مريد ويودو

```
<u>دا</u> .
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                   गहियो पोत पोताना कर्मने अनुसरीने, चारेदिया तरफ छडी
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                        जाय हे. तेम आ संसारने विषे अनेक प्रकारना जीवो चारे गतिमांथी आवीने, आ मनुष्य
                                                                                                                                                                                                                                                           लोकोनो समागम तथा पहियोनो समागम जेम थोडा कालनो हे, (तहेव के०) तेमज
(जीव के०) हे जीव! (सयणाएां के०) स्वजननो (संजोगो के०) संयोग जे ते (खणनेगु-
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             नावार्थ-जेम संध्या समये अनेक प्रकारना पिह्यो, ज्यारेदिशा तरफ्थी आवीने एकठा
                                                                                                                                           ग्रथ-हे ग्रात्मन्! (जह केंंं) जेम (संफाएकेंंं) संध्याकातने विपे (संज्याण केंंं)
योनो (संगमों केंंं) संगम याय हे. (ग्रु केंंं) वती (जह केंंं) जेम (पहें केंंं) मा-
                                                                                                                                                                                                                  र्टले मार्भमां जनार
र र में में भी हैं भी पिता प्रियाण संगमी जह पहें अपहित्याणें।।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                  रो के ) क्णानंगुर हे. एटले क्णामां नाग् पामवाना स्वनाववालो हे. ॥ र ।।।
                                                                                                    ।।उटा।
                                                                                                                                                                                                                          विषे (पहिञ्जाएं के॰) मार्गे जनार लोकोनो समागम थाय हे.
                                                                                                   । तहेव खणनंगुरो जीव।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              मते हे. अने प्रातःकाले, तेज प
                                                                                                                       सयणाण
```

कोड जायाँ, कोइ नाई, ग तु महोटो मोह धारण परत हे मूढ जीव। तु एट्डा आतम साथन कर्गा-गामधी द्यावीने . खावीने, एकता थाय हे, त्या पीत गेताने योग्य गतिमा जता खे डे रहेता नपी वली जेम चारे दिशाएपी ग्रांनेला मसुष्योना नाम, रहेला एवा जीवांना नाम पण नेम थ्या सलारी पाता कमोनसारे कर्ता हेरान यह तु । ग्रहता नयी. 1 वाग कहेबाय हे, कोड़ पिता, कोड आयुष्य पूर्ण करीने, किये गामयी होइ। खाइने ५ इत्यादि कस्पनाए करीने नाम वराव्या वे सुखी, अने तेने ड ले ड खी थाय हे, 펜 केकाएँ। येसी सम्पने साचो सभय मानीने श् गतिमाथी खावेला, अने एक धरमा नोगदीने, पठी पाठा पोत प शने, एटले र गतमाथी £, तेनाः नवमा एकवा थया हे खने तेज जीवो, पोतानु . कोड़ किये । प्रत्ये जता रहे हे, पण तेते । । कोइ माता गतिमा जता रहे हे तथा जैम मागिने। कमोनुसारे सुख ड ख इ जीव पण, कोइ काये गतिमाथी नेगा थाय हे, पही त्या थोडीवा -39 कोइ कोइना फाल्या खे । जुदा हे, तेम चारे गतिम । जुदा कल्या हे तेमा । । पुत्र, कोह पुत्री हत्यादि हे, धाने तेने सुखे सुखी, एवा जुठा पोग्य स्यानक

ून जुन में व

**小水水水水水水水水水水水水水水水水水水水水** 

Ē

ज्यमवत था। ॥३६॥

30

दियहा ज धम्मराह्य ॥ जपजातिहत्तम्.॥ वस्कयाम डच्पाणम् न निसाविरामे

\$a अर्थ-हे जीव ! तने एवा विचार केम नथी आवतो के, हुं

**मिश्र**तम

गरनावयामि के धम्मरहिने के । धम रहित थयो सतो । पामे सते, एटले पांबली ज्यारघांड रात्री रहे सते जागीने ( करं के, (जं के 0) जे हुं (

वचार

! अने वली (गेहे के) (किं केण) रया माटे ( (अहं के ) हुं। माकट बत्वा मांडे सते निकेंग) (0) बसोने

) उपेका केम कर हुं !!! अर्थात देहनी साथे रहेला बसता झा-ह्रपी घरनी साथे बली मरता एवा मञ्जं के ) दाजता. एटले शरीर (जबस्मयामि कें)

मुर् स्व

स्यामी के

गरारह्म

(दियहा केंग)

पावली कामनी एवी वेग लगाहे हे पज्यु रहेवु, ते ग्रु घ्यारमानी पात करी न कहेवाथ ? ाटे क्ये रात्रि दिवसतो सत्तारना येगमा चढीजता काइ त्य विचार न खाल्यो, पए। पात्रक्षी न्यार पही रात्रे छठीने, जरा निर्मल चिनवालो पड्ने, ब्रोच् वेगना जोरथी ते फेरज्याविना पाच सात स्ए हे, तो पण ते कामना खप्त आवे जाय हे ते स्वप्त, दिवसे क हत्यान करता आत्म हत्या महोटी गणी हे एटले जाणी त्मानी हु रक्ता केम नपी करतो !! इत्यादि आत्मनावना तु केम जावतो नभी ! ॥३७॥ जागर्थ-गान्नने विषे सर्व हत्यानु करता आत्म हत्या महोटी गए। हे एटले जार क्रवता फ्रेयता ते घटीने एवा बेगमा इहा पा . जेम रु न्पार पडि रात्रे छठीने विचार करवातु प्रपकार सबे ठे, तेनो छानिप्राय ए ठे के गीजा बया विचार रहेवा **बे**ड्ने, हे छात्मन्। तु तहारा छात्मानो विचार कर्ष्य नामग्रीए पण थात्मतापन न करब् आटा फरी जाय हे, तेम आ जीव पण बचे दिवस ससारना हे, ते रात्रे लावो थड़ने सक हे हें न हचरका वणु करीने । यटीये रत्नया माडे हे, पही इत्तता ब्लता ष्टले ग्रपात् आत्म हत्यात्र कहेवाय 🏻 माटे तोइने छारमानु मगाडचु, छाषोत् का दिवस देह।दिक परनावमाज रच्यु ' हचरका है ते

210 R

मनुष्यन्नवना

(AD

लव

विध्वस . अमूल्य दिवसो धर्म विना फोकट केम गमावुं बुं? अने आ महारुं शरीर पण व्रेनी फालवडे बलवा मांडचुं हे. अने तेनी साथे रहेलो ने आत्मा, ते पण ब-दंहयको आत्माने ममल मानेलो जूरो समजीने तुं देहना नाव जे जड, डःख, यने मिथ्यानाव तेने देहने विषेज समज. तेवी विषे प्रयत्नवंत था. ए उपदंश. ॥३ए॥ सर गुन ध्यान करवानो शास्त्रकारे जाएाडयो हे. माटे तुं एवो विचार करच के, 北北 पडी जाय, यावत् विध्वंस यह जाय; 定 दे हे ? परंतु खात्मज्ञानवड मिध्या एटले सिचिदानंदरूप न्त्रहा पड़ी जाय देहन् स्वरूप तेता. एटले सडी जाय अने आनंदरूप । संवंपी एवी रीते छात्मानुं छने मांडयो हे, तो ते आत्माने तुं केम बलवा नरारूपी अग्निनी फालवडे बलवा मांड्युं ठे, : आहंपणु मांन्युं हे, ते तथा देह उत्तरो हे.। , सत्, । प्टले जे देह आसमा हे ते तेथी अहमाना नाव ने जाय, तेवो

मध्या

थुंड ०

तम्ब

साय-'n महास् (बज्ञ किंग) HORI 中 ाधन करवामा ॥ यनुष्ट्य् रुपम

हिनियनड़ के॰) पाठी ध्यापत ात्मन् ! (जाजा केण) जे जे

四十二十二

श्रहम्म कं॰)

ज्यहम्म कुणमाणस्स

नश्र

न्य

भवन

विवे जाय हे. केम के, पशुने। 11801 मेठे निष्फत न विनानों ने काल, ते पशुनी

विष

II\ RII पलायण जस्स व म्बर् ۍ. ښ

तम जात हि के छ) Sal (न के ग)

मृत्यु संगाये

मिनुषा

(जस्स के॰) (व के॰)वद्यी

_{ዸዺቝዹቚዹጜዹቔዹዹዹቝኇኯቝቝኇቝቝቝቔጜ}

महारे तो मित्रता हे, माटे मृत्युनी रु हिष्ने एम मनम होई दिवस पण पयु सम *k*******

गित्रता क

ष्ट्रावी वस्त ्ट्री 2 अनूत ठपमा अलकार 11 \R एम थाय हे से वेवत

**करवान** गिन्पुरुष, मृत्युना फषाटामा न खावत युना हापमाज न आव। जा एवा : काल्य

मनमा

マネルマスマングラーグメント

मनम

धारत

खुं होय के, हुं तो कोइ काले मरवानोज नथी, तो ते पुरुष कदाचित एम धारे के, हुं ु अने आगामी कालमां थशे पण नहीं. तोयपण एवी लीव! तुं बीजा ससारना कामनो प्रमाद करयो मूत्रनी कलना (करिना के 0) वज्ञात हु राइन य दिवसा य ॥ नेयतात ॥४१॥ जपर जखेली सवै व हम प्रमाद करे छे? ॥४१॥ अर्थ-हे आत्मन्! (इंफ्कालियं के०) इंफ जेम १ करीश, तो ते पण युक्त हे. परंतु गयावि न प्रणो ॥ आयाद्यतम् ाई नथी, बर्नमान कालमां यती नथी। मेथ्या कत्पना मनमां करीने, ाज करवानु काल्य व

मूत्रने जेम जांबा देन

ाहिक नीच लोको फालका उपर चहेला ।

नावार्य-एक कासक्षी चकाल है, ते दिवस राजीनु जय आग्रो तेरूप, वक्ता निस् रकागढ करीन मनुष्यमा आह्या रूप सूत्रमा पिक्ते शीषपथ डकेले हे एटले आह्याते जनदी घटाढे हे माटे हे आसम्। ते आह्यातामाथी गयेला राजी दिवस करिपण, पाडा आयता नयी जेम आ यथ त्रपायीने प्रसिद्ध थमानी तिरिपे विक्रम सबत् १ एष ७ ना कार्निक गुढ़ि ५ (ज्ञान पात्रम) ने सीमवार हतो हवेते वर्षनी तेल तिथि वार, आखा जन्मारामा ति सीने डकेंने हे, द्यर्थात् ब्यावाते माटे लागो तायों करवाने छरयन लोको फा बका डपर चहेता सुत्रने लागा वफना बसरका बढे करीने फपाटावय डकेंसे हे, तेम(आ-छरस के०) आडप्याने (गिलाता के०) डकेंतता एवा (राष्ट्यों के०) रात्रीयों (य के०) अने (दिवसा के०) दिवसों ने में (वज्ञति के०) लाय है (य के०) थाने वली (गयायि के०) गया एवा जे दिवसों नथा रात्रोंछ, ते (हु के०) निन्ने (युखों के०) फरीपीं (नियनति के०) पाठा तेतो गयान। । एरु जाखीने आ धर्मकार्य तो काले करीयु, फरीथी आववानो नथी, तेम हे जव्य जीवो। या गएता दिवस रात्रीपण, तेनी पेठे पाठा अवता (न के ) नयी ॥ भश। झाववाना नथी एटलेगया 大学などれなれないながまればない ことである ことががかがいけいし ガナー

व

३३ ँ १ गेंड हु श्रंतकाले॥ एम नही करतां, ते धर्मध्यान प्रमाद रहितपणे खाजज करतुं. ए जपदेश. ॥ ४ १॥ उंसहरा ॥ जपजातिहत्तम्. ॥ मित्रं व मियं गहाय। र वि १० १ए म् भू

हरवाने(न नवांते के0)समर्थ नथी घतां,॥४३॥ केण)नाई ने ते(अंसहरा केण) आंशमात्र पण (माया के ) माता जे ते (व के ) बर्ज मृत्यु ने ते ( लेइ जाय हे.( (मञ्जू केंग . एटले मरणनी वखते। जे ते (व के०)वली(नाया करवाने एटले लगार मात्र पण रक्ण ब ) 阳湖 ( (ज के व) तकाते के ) आयुष्य पूर [ण्यिं जाणवो. तेम

के०) पिता

। यह्ण करीने. एटले पकडीने नाग्न करे हे. (व के॰)

(सीहो केंं) सिंह जेते(

(जह के ) जेम (

अर्थ-(इह के 0) आ लोकने विषे (

नस्म

ارن م

(गहाय के०)

नाई, इत्यादि कोइपण लगार मात्र रा-सहरूप काल पकरीने लेड नारार्थ-हें जीव ! ममे तेवो पीरजवाजो मनुष्य होय, तोपए, छातकाले मरणनी घएी वेदनापी से माएस मृग जेवो निर्वत थड् जायठे त्यारे जाय हे ते वखते ते मनुष्यमा माता, पिता, पार्यो, नार्ड

Hd पटाने गड़े करीने तेने राख #ERI IIRRII ग्रकता नपा मपनान तरगलाताने ॥ नामना द्यामनाग उपर रहेला, जसना विष्ठ समान चेंचल है । 2 ज्यमात्र : जायाहत्त्व ॥ मनुष्यना माता, पिता, जार्या, गे । एटले ते गमे तेत्रो स्नेही ह मर्थ-हे बात्मन्! (जीज़ के) जीववु । ु सुमिएयसम च पिम्म ्र जीय जलविङ्सम ख्या समर्थे यता नयी। वामा गमे तेटला छपाय

समुख्ता तरम जेवी चचल ठे

ालान के

他的

जती रहे तेयी है (च केंग्) बजी (पिम्म कें०)

**ው** ሎ የ፠፠ኯኯራትት णयसमें के॰) स्वप्न समान हे. एटले क्षामां नाश पामे तेवो हे. ते कारण माटे (जं के॰) तोयपण, जीववाने माटे अनेक प्रकारना न करवा योग्य एना घणा छपाय करे हे. अने वली रीते शिखन्युं, त्यारपठी ते पोषट पण ते वाक्यनो वारंवार गुं? अने गड़ी जब ने गुं! पठी एक दिवस ते पोपट जेवो पांजरामांथी निकल्यो, तेवो करीने, ते रीते बोलवा लाग्यो. परंतु ते विचाराने एम खबर नथी के, विज्ञि तोयप्ण ते पोपट पूर्वे शिखवेला वाक्यने बोले जतो हतो, ते बखतेज चंचल हे. एवं बोले (जाणमु के॰ ) ए प्रकारे खरी रीते, जो खंतःकरणयी अस्यिरपणु जाएतो होय , देखीने मंपकार जपदेश करे हे. अप्रमाद्पणे धर्म सायन कस्य. ॥४४॥ पोपटियु ह्यान एटले शुं? जेम कोइ माणसे एक पोपटने नाणाब्युं के, बिलि आये तो तरत छडी जबूं. एवी रीते शिखठ्यं मानाने ने मानाने के के बोले हे के, ह्या संपत्तियों पण पाणीना तरंगनी पेंडे झिश्यर है, परंत पोपटनी मोकी मरडी नांखी. माटे हे जब्ब जीवो! कहो। ते पोपटनुं तेम झा सरें लोको पण एम बोलेठे के, जीवतुं जलना बिंड जेवुं न कारंज्जास के ) जाएया प्रमाणे विलाडीए फाल्यो. त युभ्यास

करे है, अने बजी एम बोले है रिल्ली रत ते स्त्रीपादिक । Selection of the left of the l हदन व तेशे जो चचल (जालग्रह्म) समयना रंग, तथा , ने स्वप्र समान हे, एवी 0 विषे वापरवामा पणुज बरा अत मिल्या सन्मागन्। त्ति क्ष महान भ MAT H

श्व अर्थ-जीरण थड़ हे ष्ट्रवस्या ते जेनी, एवा पुरुषना केश तथा दांत जीर्ण याय हे. एटले ह-दावस्थामां मांथाना केश थोला थाय हे. एटलुंज नाहे पण केटलाक नाश पण रहेला पाणीना बिंड जेबुं चंचल एबुं, (जीविष के॰) जीवित सते (य के॰) वली (जियमें रें०) ए बेनी हे जपमा ने जेने एंबुं, (य के 0) अने (जातिबंड चंचले के 0) मानना अथनाग ज़ुवाएँ के ) योवन सते (पावजीव के ) हे (इंग केंग) एते (किं केंग) खुं!! एट-नावार्थ-आ संसारमां वयी आशान करतां जीववानी आशा वर्षा महोटी ठे. केम गामे हे. अने दांत पणा शिषिल थाय हे. एटलुंज निह पण पडी जाय हे. त्यारे पोतानुं ज-के, आ जीवने ज्यारे हेजीवारे स्वास उपडे हे, अने मचकां आवे हे, तोपण हजु हुं जी-वीश, हजु हुं जीवीश, एवी आशा रह्या करे हे. माटे कोड़ विद्यान पुरुपनुं आयुं वचन हे के, जीनिताशा धनाशा च। कुमारीय विकन्तने ॥१॥ त्रीयेते नीएमियमः । एमः केशहदायपि ॥ (न बुप्रसे केंग) हुं नयी बोच पामतो। निने के ) नदीना वेगने तुल्य ए ले ए ते केटलुं वधुं आश्वयं हे !!! ॥४ ए॥

में वे प्व कह्युं वे के, मधेन न्या गिवितम् मु to te H VID हाडकाना वनायेला नाव कालमा लाज, जीला, १ तेने ख़ुटावी नाखे हे 함 do. जवानीपणु जाववा ह्यात आप हटले कातारग 기대 एवं स्टप्सु प्राप्त था ानी पेठे दिन दिन प्र जन विरन् कार पणा म्ताले : मारेड चढाव न मायु ह THE ्ट्र छावती नथी ग्यानी खाशा तथा धननी से तेने कोइ मोसो कहीने घ जीवग्नी आंशा, पणी है। गनीपणु देखाडवाने, माटे, पए मानता अभना वात पड़ी जाय है, जवानी पाठी करता ज्यारे बधारे । दातनी बत्रीशी तथा जवानी 引相 न्द्र स्टास 불

CANALYTICAN TO THE STREET

Flo

पत्तरात् जवान श्राज । नवीना गेग

नहाना याय E H G) मध्य ।

SA.

(मावु कर्म) नेम वालिवान अ यमराज (भ । जोग्य एता त्रे (नश्रमलिव (हयक्यतेषा के॰) निवा,करवा , सर्वे र 雪哥

ग्ण(द्यन्न के) छन्यग

ध्यन्यगतिने विपे

30

P

म के०) आगल कहेरी । जेम वाकला तुटा लु गतिने विपे तेमज (रे

हुडुन एटले अन्य भेमें

( অসৱ

अर्थात् पुत्र,

निया ने ॥धष्।॥

क्तन केंग) क्रिकी कींग्ग नावाप-

तेमा रहे पण जार

सदायकाल एक रि

र्वा उपायमा

सपनु कुटुन महारा नेगु । दिवस वियोग पडे नही ए

है परतु एक रूपे नथी.

परतु तु एम।

200

नांथी जे रीते खाट्यां हतां, तेवी रीते पाठां नाना प्रकारनी गतियोमां चाट्यां जाय हे. ते कूतर चालतुं होय, ने कूतर एम विचारे के, आ सघलो गाडानो नार हुं खेंचु हुं. तेम तुं पण एम समने हे के, आ सव कुटुंबनुं नरण पोपण पण हुंन करं हुं. एवो हुं मिध्या ममत्व लोटा ममत्वने बोडी देइने,कांइकतो आत्मसायन करवानो अवकाश जान्य!!॥४६॥ हरे हे. परंतु एम नथी जाणतो के,सवें कमाधीन हे,तेमां हुं शुं करी शकवानो हुं!!एम विचारी राधीनपणे जूरी जूरी जग्याए जइ पडे ठे, तेम आ विचारा पुत्रादिक कर्माधीनपणाथी थ्रनेक प्रकारनी गतियोमां जह पड़े हे. त्यां, तथा आ नवनां सुखं डाखादिकमां पण, तहा-ते कोइ उपाय चाली श्रकवानो नथी. तोषण मिथ्या ममल बांधीने, जेम चालता गाडा तले हेबी रीते चाल्यां जायहे ? तो के, जेम कोड़ जूत देवताने वालेबाकला फॅके हे,ते बलिबाकला जीवेण नवेनवे। मिलियाइ देहाइ जाइ संसारे॥ कीरइ सखा व्यणताह ॥४ ण॥ व ११ ए ताएं न सागरेहिं।

भीति मे

(क्रीरड् के) करी शकाती छ्ययवा अनता अयुवा यानता तकतो नथी (सत्ता के) ( में) नव नवने । पनो विचार

हेहने माटे अधर्म अन्यायादिक करतां पण मरतो नथी. पण तेवा माडी जाय हे. जेम सारामां सारां मेवा मिवाइ इत्यादि, देहमां नांखीने तत्काल पातुं का-पण,देहना संबंधे करीने मलमलिन थड़ने गंधाड़ उठे ं छाने बहु मूल्यनाँ वस्त्र पण,देहना संबंध करीने मलमालिन थहने गंथाह उट चेतुं पात्र था देह है. तेवा देहनीज रात्री दिवस ठठवेठ(घणीज सेवा)करवामां तिने जोइए, तो तेना सामुं पए। जोइ शकातुं नथी. एवुं नगरं थइ जाय हे. वती गमे एवां मुंबंध पामीने ड्रगधमय घड़ जाय हे. तेमज गमे तेवा मुगंधीदार वस्त, देहनी १, एवी अशुचितुं पात्र

ממ श्रत्रमत्राण ॥४०॥ सागरसाललान बहुयर

हे.माटे ते श्रीर उपरथी मुझी उतारीने,जेम अश्रीरी थवाय;तेवा उद्यम कर्घ.॥४ ॥

ें अनंता थारण कस्या, ने मूकी दीथा, जेम शरीर उपर पहेरेलां बस्त्र हैं नांखीने नवां धारण करे हे, ए न्याये तें ज्यारे गतिमां अनेक प्रकारनां इ

जाल गमावे हे तथा ते

ज्ञरार धारण

क्या पाणी पकी (बहुपर होड़ के॰) द्यातिसे खिषक होय है अपात समुद्धना पाणा वह क्षा पण ब्याचुन जस्तु परिमाण पड़ सक्तुं नपी 'शिषण। मार्ग ने हाजा हो से पार्थ का प्राप्त ने हाजा हो का बाता पितानी पणी है वेशीन बाने तेमने रोता कराक साता कि रोता कराक साता पितानी पणी स्वेह देशीने अने तेमने रोता कराक साता है। कि पार्थ है नहप जाता है। जा जो जो नी महाराज तेने उपदेश देवाने छाँ कहि है है नहप जीता है के के नामा माता पिताने रोता कराक सता माता पिताने, राप्त है। पर्त दीवार करा के, तें कर्मना दो को करीने खता मता माता पिताने, रापा के। पर्ति हो हो जा जामा खालों है है माता पितानी खालामांथी तिक स्वता रोता कराक स्वाप हो स्वेह है आ जामा खालों है है माता पितानी खालामांथी तिक स्वता रोता कराक स्वाप हो स्वेह है जा जामा खालों है है माता पितानी खालामांथी तिक स्वाप हो खालों है है साता पितानी खाला हो हो स्वेह माता स्वाप हो है स्वाप हो स्वाप हो स्वाप हो स्वाप हो स्वाप हो सामा स्वाप हो साम् स्वाप हो साम स्वाप हो साम्य साम्य साम्य साम्य साम्य साम्य साम्य हो साम्य प्रथं-हे श्वासम् । (तासिं के॰) ते (रुश्रमाधीण के॰) रहतीं एविया के॰) सीन्त्रां के॰) श्वासम् । (तासिं के॰) तो (रुश्रमाधीण के॰) सातानुन् (गितिय के॰) सी-के॰) श्वपर ज्ञयर जन्मने विषे पएतीयो एवी (साजर्य के॰) मातानुन् (पातिय के॰) सी-हम्म तिकत्ता एवा (त्यधोवयाये के॰) नेजना श्वांषु पण्ण (सागरसिन्धान के॰) सि-इन्म पाणी पकी (बहुपर होइ के॰) श्वातिशे श्वाधिक होय हे अपाँत् समुच्ना पाणी वहे पण श्वासुन्त जसनु परिमाण पड़ इकतुं नपी '॥४६॥ सागर्य-केटलाएक पुरमो खीयाविक पत्रपेयी वैदाग्य पामीने दीक्षा दोवाने तैयार त्रयं-हे श्रातमत् ! (तासि के॰) ते (रुज्यमाणील के॰) रहती एतियो ते (अन्नमन्नाण

तु किया माता पिताने सतीय पमाडीब १ माटे बस्तुताये विचार करय के, खात्मानी माता

```
होए हे ! पिता कोए हे ! अधित आतमानां माता पिता हेज नही. एवं विचारीने साहिसि-
                                                                              डहाइ पावंति घोरणंताइ
                                                                                        नेरइया।
                                     ज्यापे धमें साथन कर्य.॥ अण्॥
```

Po

9/

नेगोत्रमन्ने डहं होड

(ड्याएंतगुषियं के॰) ड्यनंत गुणु (डह के॰) ना डःखयी पंषः निगोदने विषे ड्यनंतगुष तत्तों केंग अर्थ-(नरए केंग) नरकने विषे (नेरइंया केंग) नारकी जे ते (जं केंग) जे ( ) महा बोर, ने आनंतां एवां (डहाइ केंग) इःखने (पावंति केंग) पामे हे. (त अथोत् नरंकना डःखयी पण निमो विषे ( निगोञ्जमान्ने के । निगोद् मध्यने (होड़ केंग) होय है,

हिंस के में

= a

नाना प्रकारना \$0)

20

90

20

श्चनत 6 4

겙 तया निगाद्न

इहा दिश

1

रत ते डि

इहा नारकान

गसङ्गे रे

ાર સ્વાર કરા કોર **વ્યાપ્ત કર**ા સંદર્શ હોય વીન પ્રેર સ્વોર કોર વીન સ્વેર સ્વોર કોર નો કોર કોર કોર કોર કોર કોર કોર दिवस सूथी खलमां घुंटावीने, पठी तेनी राइना दाााा साख श्रीवधियोनो समावेश थयो, ते रीते एक शरी-य थाय, तंटलीवार, कोइ जीव सातमी नरकमां पूर्ण तेत्रीश तेत्रीश सागरोपमने आ-जपजे, त्यारे तेने असंख्याता नव नरकना थाय, ते असंख्याता नवमां सातमी नरक-पे, ते जीवने जेटलं हेडन जेडचं हार कार्य है | 知巧-रकेका श्रीरमां अनंता जीव हे. एवी रीते निगोदना जी-। सांकडुं के. ते उपर एक स्पूल हष्टांत कहीए वीए. जैम कोइ लाख एकेकी एकेका गो-गंचराने बजीश हष्टात-सातमी नरकमां उत्क्रष्टांयु तेत्रीश सागरोषमनुं हे, ते तेत्रीश सागरोपमना जेटला जेटलुं ठेदन नेदननुं डःख थाय, ते सवें डःख एकतुं करीए, तेथी पण वली एक झौदारिक शरी एक सूड्ना । उपर रहे तेटती कंदमूलनी कती होय, तेमां असंख्याती अेषी रहे हे. ते । गिमां असंख्याता प्रतर हे. ते एकेका प्रतरमां असंख्याता गोला हे. ते एकेक पासिवहजार अनंता जीव नेगा रहे है. ते नेगा शी शीते रहे हैं? ते ज्यावीए एक मुहूनमा निगोदीया जीव एक समयमां नोगवे हे. जीव रहेता है. ते निमो नामा असंख्याता मनतगुषु डःख । तमा अनता समय

ol ol w

(पत्तो ग्रफे-(रे जीव के०) हे जीव । तु (रुह्यवि के०) कोड़ महा कप्टे करीने पण (तनो ने ड खनी छपमाज नयी। ते आश्यपीने निगोदने यिपे नरकना क्सू हे ॥४ए॥-तेवा इ खने था जीवे ज्ञानावरणा-दिक कमेता वहाँ पकी अनतीवार नीगठ्या है माटे ह्वेपी तेवा इ खो न नीगववा पडे, (तद्यवि के॰) तेमा पण (जिंतामणिसिटिंडो के॰) चिंतामणि रत सरखो नव करे, अने एक श्वासीद्यासमा सत्तरथी काइक अधिक नव करे हे एवी रीते निगोदमा (मणुअनणि केण) मनुष्यपणाने जिएावरपम्मो केण) जिनवरनो धर्म जे ते (पनो केण) प्राप्त धर्मो हे ॥५१॥ पत्तो मण्यत्रत्तापि रेजीव ॥ नहरीय कें) रे ड खयी स्ननतगुणु ड ख श्री चीतरागे व तज्ञवि जिएावरधम्मो नेहरीय कहाये तत्तो व्यममा तत्त्र थ्या ॥५०॥ जन्म मरणना ह.ख वे के, किं) पाम्यो व

नावाथ-हे आत्मन्! तुं अनेक

प्रकारनी अकाम निर्ज्जिराए करीने तथा निगोदनी तेने तुं पास्यो मन्नां, एवा

अर्थ-(रे जीव के०) हे जीव! (तांमि के०) ते जिनराजनो यमं ( पनेवि के० ) पाने करीने, महाड्डिन एवा मनुष्य नवने पाम्यो. रटले तुं जे जे सुखनी इडा करीश, ते ते सुखनी प्राप्ति द्या धर्म बडेज रे पामीने विषय कपायने घटाडवानों दिन दिन प्रत्ये डयम कर्य. के, चितामणी रत्नसमान श्री जिनयमे डहं जहिंस जिनधर्म ए वे पामवानुं सफलपणुं याय. ॥५१॥ पण सकत बांगन पूर्ण करनार माटे रजीव।

नव अने।

ने लें करीने (पुणानि के॰) फरीयी पण (नवंषकूने (लहिसि के ) (डहं केण) डःखने। पए (तुमं के ) तुं (जेएं के )

रहत क्वाने।

r फ़रीयी नाखे एवा (पमाय के⁰) जिनधर्म से ते ( ादले लेयी परीयी पण ससारहप 131 1 (तय के०) ते प्रकारना एटले सत्ताररूप छाध (जोव केंं) हे जीव । ते देव (हा कै) आ हा जीव श्रयप्वेरि श्र ठवलघो जिष्णधम्मा (नय केंं) नपी हो केंं) पाम्यो

N-728-27-45

विरि के ) हे आत्माना वैरिन्! (परन के ) परलोकने विषे तुं (सुबहुं के ) आतिशे घणो

रोहिसि के ) खेद पामीश. ज्यर्थात् घाषोज पथानाप करीश. ॥५३॥

नावार्थ-हे आत्मन्! सर्व सुखनी प्राप्तिनुं कारणा एवा अनिधर्मने पामीने, केवज प्र-माद दोषथीज, ते धर्मनुं सेवन; तें करधुं नहीं, माटे तुं तहारी मेजेज तहारा आत्मानो म-शेटो शत्रु थयो. एटले आत्मानी हत्या करनारो थयोः माटे तुं मरण पामीने परजोकमां

। शिप्रनराजानीपेवे घषोज,शोक करीश.॥ ५३॥ते शशिप्रनराजानी कथा नीचे प्रमाषे जाषवी,

कथा. ह

CV

महारोगा नोगाः, कुवलयहशः सपेसहशः॥

तदापायः कायः, प्रणायषु सुखं स्पयावेमुखं

त्वभ

सावड़ी नगरीने विषे ग्रूरमन्न, अने ग्रांशमन्न एवे नामें वे नाई राज्य नोगवता हता. तेवामां ए समयने विषे, ज्ञानी गुरु श्री धर्मधोषमूरि नगरीनी वहार छथानने विषे पथारथा. वनपालके जड़ र व्यामएती दीधी. राजाये वनपालकने घणुं इब्य आप्तुं. पड़ी वे वांधव, श्री गुरु पासे गया. सां विधि बंटन करी डाचित खानके वेटा. गुरुए पए। अवसर जाएती धर्मदेशना दीधी जेम के,

बंदन करी छांचत खानक बेठा. गुरुष पण अवसर जाणी धमेंदेशना दीधी

मचितम् ॥१॥ श्रीरपि खला प्रधानेचपला क्रम , सम शृहाविश

सुत्व पए। अस्पिर ५ प्रत्ने अपायक्ष व्यर्ग-व्या भरीर निस्तर

ज्ञान याय है तेत्र स्तेही काषापातमा वैरी पए। अनक मकारना, राग

अयान् अरमा उपर वेशामा , तैम खीना ससमयी रिकार छत्पन्न थाय डे त केपल ज्याक्प वे

. ने प्राएती नात्रा थाप

मोश् महारतु लाउन नने होय, तीपक्ष गृहस्या गम योग्य हे ॥१॥ लंह जाय हे यान हस्पायम वालाने अनेक प्रकारना । तेरी कउए कम्मर शांधीने गाटे ज गृहसा मम्मा कोड यातमु पाबार पदतु नथी

हास्या पिना जारम् न

उपन त्यादि धमदेशमा सा आ नमा नत्त्रध्य

do

w

मान्तु, माटे ना-नोयुं, त्यारे पो-व्यस्तक सेवी एकी रीते कहीने चलारकारे पोताना जाईने राज्य आपी शूरमज करी मूक्युं छे. माटे मूकशो, तो पनीथी घलोज पश्राताप करशो! अने बली पठी तमे कहेशों के, जाईए धमीतो प्रमाद मूकीने शूरगजे कलूं जाई! राज्यने ठेडे नरक पामीए. माटे महारे राज्यनो सर्वेश प्रकारे खप नथी. त्यारे श्राशिप्रजे जरु दीका जीयी पठी घएां तप जप करी अंते अनशन करी, समाथि सहित काज रीते शशियने लीयो आवशे ! कोएा जाएो परलोक हे के, नथी! आ राज्य हने शशियन राजा राज्य नोगवी, सात घारी ते देवता मोहनो नरकते विषे नारकीष्णे जपन्यो. हवे शूरमन हेवताये अवधिक्ञानना वले करी कहण न वालकने विहामएाक्प एवी के, एएो महार लेख्यो महारं कहेए। मानीने ए तमे शु कतुं!॥ धर्मस्य त्वरिता गतिः॥ संसारिक मुख जोगवीने पठी रुद्धावस्थामां संयम एले कुं करवा गमावे के र ए सर्वे तोयपए। है तेचु डाख टालुं. माटे हे जाई! विषे देवतापणे जपन्यो पीड, वाबरो, काया वालवाथी हाथमां शुं शुं करवा बांठे छे. जलदीयीज करवो. माटे आ राज्य ल्यो. ययो, ने वर्ण डास नोगवे हे. ग्राशियज्ञने त्रिजी नरकने तिने पांचमा ब्रह्मदेयलोकने मनुष्य नत्र हुवा. कहता ाजाये श्रीगुरु पासे परोक्त र जताबला थइने जो शुर्मन त्रिजी नाई

m <u>-</u> ख चोरीकरवी. पामवा घएाीज वेदना (मृगयाकरवी) तेम तेम ते प आहाडकमे. प्त वश्यागम्न नाराम जुगहे. १ मांसनकण, ३ सुरापान नाश्म पाताना आवीन आठमा. परस्रासम्बा ी यो। बडी टेनमा को के, जाह ! ते महान कहेंण न माजु, भूहा में तने वणुए कहु हुतु तापणा तु समन्यों नहीं माट सुन शु कहीन ! स्मार ते नारकी कोई हे जाही हो शु कह ' पूरी शूसप्त दर, परमार्थीमं ज सामण्डे ह गाज देखाने गयो। अधिमन पर्णोज पशाताप पास्यों। पण्डे पशासाप काइ काम आय्यों असी तेम ने नाणी निजायणी रत्न ममान महत्य पत्न गामीने निज्ञ पर्णा नहीं कर, ने माणी शाधिमन राजा है, ते ते हे महा शोसनीने पासकी !! अन ने माणी शुरुत्त राजानी देवे मगाद मुकीन, जहानीशी थम साथन अर्थ-(जेहिं के०) जेमणे (पावपमायवसेण के०) पापरूप प्रमावना उसे करीने (जि नहीं तेम ने गाणी नितामणी रत्न मगान मञ्जय जब पामीने जिन धम नहीं कर, ते गाणी जाशप्रज राजा ती रेडे महा बोचनाने पामेशे!! अन ले गाणी बूरअन राजानी ऐंडे मगाद मूकीन, जलनीथी थम साथन IIA'AII पावपमायवसेषा । न सिचयो जेहि जिष्णधम्मो । प्तु जाएी, प्रमाद मुकीने धर्म र गः है वराया। पंजा समुबंधियंमि म ोक्ट देवलोकना मुख पामग्र

पोताना प्रात्मामा जिनधर्म बरोत्तर वसाब्यो नथी (ते के०) तेवा (वराया के०) राक एयमों के०) जिनयमें जे ते (न सचियों के०) पोताना आत्माने बिपे नथी सचय कर्यो

(समुवाडि ।

पुरुपो जे ते एटले महान कष्टने करनारा पुरुपो जे ते (मरणामि के॰) 🛚 ।

रथी, समफ्ता विना अज्ञान कट कर्यां, तेथी परलोकमां तने घणोज पश्चानाप थरो. माटे योडुं पण जिनआणा सहित धर्मसाधन करवामां प्रमाद राहित था. अथीत् * पांच प्रका-ग्रीम के०) प्राप्त थए सते (पन्ना के०) पठी (सीव्यंति के०) ग्रोक करे ठे. के, अरेरे! आपणे गरलोक ए प्रकारे वे लोकनुं सुख हारी गया. केम के, लोकमां मनावा पूजावाना अहंका-हुगुरुना उपदेश्यो जिनञाङ्गा राहित अनेक प्रकारनां अङ्गान कट करी, आ लोक तथा हांडु पए। धर्म साधन करगा विना परलोकने विषे क्यांथी सुखी थड्गुं!! इत्यादिक घणो-नावार्थ-हे जीव! जेवी जोइए तेवी तने धर्मसायन करवानी सामग्री मली, तोपण रना प्रमादना वश्यी विराम पामीने जलद्यि धर्मसाधन कर्य. ॥५४॥ । देवो मरिकण जं तिरी होई ॥ वीधीयी संसारं ज पश्चाताप करे हे. ॥५४॥

æ m

रायराया । परिपद्य निरयजालाए ॥५५॥

🦟 १ मद. १ विषय, ३ कषाय, ध निष्ठा. अने ५ विक्या

थ्रथै-(ज के०) जे कारण माटे (देवो के०) देव जे ते (मरिकाण के०) मरण पामीने (रायराया के॰) राजाना पण राजा जे चक्रवनी, ते (मरिकष्ण के॰) (धी धी धी के ) विकार थाते। थिकार पात्र।। थि हहा अतिशे थिकार जखाउवाने माटे त्रख यखत थिकार कद्यों हे ॥५५॥ (परिषद्य के क मरण पामीने (निरय जालाए के॰) नरकनी जालाबडे करीने ( चाय है। माटे (सत्तार के॰) ते सत्तारने तिरी के ) तिथेच (होई के ) याप है 🤅 क्षम याय है। अने

यार थिकार कह्यो तेतु कारण ए छे के, डेनता सरखा महा क्वित्रत पण, मरीने तिर्थंच नागर्थ-नोइने एकार थिकार। कोड़ने वे यर थिकार॥ पण छा ससारने तो जण पापाणपणे उत्पन्न पाय हे । खा सु इंहु र म्यादिममा जड गतिने विषे अथवा एप्त

विकार यात्री!

ीवरत तथा सोल हजार जक् तया वत्रीस हजार मुकुटवय राजा इत्यादिक, रात्री दिवस नरकनी ज्वालामा उत्पन्न थाय हें। ोराही लाख घोडा, चोराही लाख रष, खने ठचुकांढ पायदल, बली नय निपान, छने ह्मीयोना पति, तथा चोराशी लाख जेनी सेगामा रह्या हे एगा चक्रवनी राजा पण मरीने वे॥ तथा व खनना जोका, तथा चोंसठ हजार र

व

त्यां ते चक्रवर्तिने परमाथमी, महा वेदना चपजावे हे. अहो। हो।! आते शुं थोडी आ-

200

(मणयत्राहरणाई के॰) 'जीवों केंग) अर्थ-(अपाहो के०) अनाय घणधन्नाहरणाइ

वारमा नाच

जेगे थड़ने, नस्कादिक डगीतने गिये जाय है स्या गया पढी पूर्व कहेंटी कोड़ परा वस्तु ते जीयने सगर हागती नयी माटे है जीव! परिखामें जे कस्तु तहारी साथे नयी प्रावती, तेरी वस्तु हपर्शी मोह ममखनो त्यान करीने, जे परचाने विपे साथे छावीने सुख करे रती एवी जे न तमुड्नी मध्ये 忠 ) ब्ह्ना अभने ( गरे के०)ससारने विपे(ससरतेसा के०)पर्यंटन करतें। येपे(यसिय के०)नियास करयो हे तथा (दरीसु के०) ानकामा तु ध्यनता समुद्दमन्नाम् ॥ समहमञ्जाम क जम् केव) नसरत्त वसिय के ) निवास करगो हे अर्थात् पूर्वे कहेना सर्ग वमन शाराधन करघ निवास करवो हे तथा। (य केंग) वत्ती क्यारेक ( ससार र (ससारे के )ससारने विये वासेय गिरीस वासिय マテ तिय वार निवास करबो ने फाने विषे परा (वसिय के॰) 5490 **ट्य**र्ध-हे थात्मन दर्शन ६ निवी वस्तु छपरथी । मिरीम के०) व ठे, तेषा ज्ञान : (बासिय केंग) *4-414

श्र व

ol? שו עו

करा आञ्यो हुं. माटे तहारुं निवास स्थान एक वेकाणे नथी. ॥ए॥

<u>श्</u>रमम् तहारा पवतना . सिंहादिक पगुरूपे थड् आञ्यो हुं. तथा केटलीएक वखत समुज्ने विपे जानजंतु तया पोताने खेवानी मेथ्या आनिमान शुं करवा करे हे ? परंतु तुं विचार करच के, आ संसारमां ज्ञमण करतो । करे हे. के. हे शिष्य। अजिमान शुं करवा करे हे? ॥ए ॥ इत्यादिक घणीक जग्याए निवास करी आन्यो हु. माटे ईमारतमुं, तथा पोतानी छत्तम जातिनुं, तथा पोताना प्रसिष्ट कुलनुं, तथा पोताना अयीन् एक पण ठेकाणे निवास करवाना स्थाननो पर्वतने विषे पज्ञररूपे थड़ आज्यो हुं. तथा केटलीएक वर्षत कागडा प्रमुख न्नावार्थ-कोड् शिष्यने पोताना देशनुं, तथा पोताना गामनुं, वखतं वृक्तांना अयनागयां इत्यादिक अनिमानने धारण करतो जोहने, गुरु छपदेश मिथ्या तापण महारं महारं करीने ह्रपे थड् आव्यो हुं, तथा केटजीएक हीयुं एक निवास स्थल हे ! नेवास करी आव्यो हेटलीएक बखत तु गुफामां प्या

नावार्ध-आ जीवे नटवानी पेठे जुदा जुदा रुपे करीने छा। ससाररूपी रगनूमिमा नेरडच नि केच) (एसी केंं) एक बखत है खिन (प केंंं) बली (कींड केंंं) रे केंंं) केटानील ्रा प्रज्ञाएक व्यवत (देवो केष) देव धयो हु तथा (भ नारकी ए प्रकारे थयो हु (प केष्णे नामी नारकी कीड प्यमु ति माणुसो एसो ॥ पयो तु वली iफ कीटो पयो हु सपा (पयगुषि के॰) के (माणुसी के॰) केटलीएक वखत मनुष्य श्यरं-हे जीव। तु केटलीएक वखत हेवी नेरइन तिय। पए ययो हु ॥५०॥ हेडलीएक बखत

वखत

नाडक बखता

विचारशु

्जीयो ॥६०॥

(व के०) र थयो राज निके) (य के व)

中

(श्वा ब

काइ प्रकारन 1 Sec.

सामी केण) स्वामी पर्य 

د<u>ا</u> س श्रिक तने कोड प्रका-न्यापार ते जेखे . आविनाशी सरपाव मल्यो नहीं, जलटो न्यार गतिमां ज्ञमण् करवा रूप सरपाव मल्यो जबु जागे हे. तथ गण अत्तर चदन करे हे. ॥६०॥ वेसो के पण यात्रहजतना (স্থাস্ম )রূদ 山口 ोपण ते च्रमण करवाना अभ्यास थकी, निर्शत पामतो नथी. यान्य अन्य हे ना ज्या. करी हे चेछा ते जेएं. एटले देवादिक पर्याय रूपनो खध्यास मिक्षाने एम जाएँ हे खाता पण निप्फल द्रवाय ठ. (अन्नुत्र के0) ठनम रसायण जेवा जोखम थाय हे, तथा ते लेइने, नदुआनी पेठे अनेक प्रकारे । होय, ते व्यसनी ते जीव क नहुव के0) नटनी खावायां काइ उत्तम नया. तया नावाय-हे तया ते पण खरात्र वखत पण खाने हे इत्याविक श्रिप्तणना ज्ञनेक प्रकारना खानुण जाणे हे, देले हे, खाने खानुनवे हे, तो पण तेने मूकी झकतो नयी तेनु कारण काइ खान्यास भने कुसगविना बीजु जणातु नथी तेम खा जीवने पण छानादिकालना ख्रम्यासधी तथा विषयी जीवोनी तोत्रतथी, थ्या पच प्रकारना विषय सुखमा छ ख हे एम जाणे है, देखे हे, तथा झनुनचे १, तोपण अफिएाना व्ययतनी पेहे सारु मानी बेहो है तथी एने झनेक प्रकारना नीचा अर्थ-अपमानयी, तथा छची पदवीयी पहवायी, तथा वथ बथ अने धननों इत्य ते रही शैकडो जातिमा रोग ने शोक, ज्ञा जीवे जोगच्या है ॥ १ ॥ ज्ञा ख्राधिकार सम्पी श्री छचा रुप करी छा। ससारने विषे नाटक करबु पड़े हे बक्षो शास्त्रमा कद्य हे के,----मकारे कह्य है, स्वापी जोड़ लोब् ॥एए॥६०॥ माप्ता रोमाथ शोकाथ आत्पन्तर्यातव्पपि ॥५॥ स्वमानात्परिज्ञाह्यं । प्रमन्त्रपात् ॥ ॥ अनुतुष् रुषम् ॥ आचारणिजी सत्रमा विशेष

। तें वीजी गतियोमां तो खनेक प्रकारनां डःख नागव्या यंगारा होय, तना छपर ते छच्णवंदनीं वाला नारकी दिना, ॥१॥ तेमज थनती जच्च वंदना,

तो पण ने नारकीमा जीवनी हुण हीपे नहीं ॥॥॥तेमज झानसी खरज वेदना, एटले झ नेरु प्रकारना तरवार प्रमुख शखबड़े करीने, ते नारकीना जीवने पर्पण करे, तोपपा ते ना-रकीना जीवनी खरज मटे नहीं ॥॥॥ तेवी रीते खनती परवशपपानी वेदना, एटली वर्ष वे के, आखा बगत्ना परवत्रपणानी वेदमा एकठी करीए, तोषण तेना बरोबर न थाय ॥६॥ तेवी रीते, ज्वर ॥७॥ दाह ॥७॥ नय ॥७॥ द्याने शोक ॥१०॥ ए चारनी वेदना खाखा ज-अनतग्षी वेदना शास्त्र-एकक वेदना खनतगुणी जाणवी आवी अनतगुणी वे-॥१॥ तथा एबीज रीतनी ख्रमती क्षुषा बेदना, एटले जगत्मा रहेला सबे घु , त्रोपए तेनी क्षुपा पूरी न याय ॥३॥ तेमज होड्ए परस्त्री सग करयो स्या (सरकमा) तेच स्रीना आकार जेवी लोढानी पुराली बनावीने, थने हे सारी पेठे लाटाचोल घरकथलती करीने, ते स्रीनी साथे ते परमापर्मियो झुनेक एटले जगत्मा खेला सर्वं समुद्योना पाणी ते नारकीना जीवने पा दनाज, सात व्यसनना सेवनार प्रमुखने जोगवबी पहे है तादिक पुन्नाो ते नारकीना जीवने खबराबीए, गत्नी एक्टी करीए, ते थकी पछ । अनती तुपा वेवना । ब्रामी जाप

(A) अर्थ-हे जीव! (हेवने के०) हेय जवने विषे, तथा (मणुखने के०) मनुष्य नवने विषे नावार्थ-हे आत्मन्! विशेष'ज्ञानवंत एवा देव नवने विषे, तथा मनुष्य नवने विषे विशेषे जाणवानी मरजी होष तो, श्री स्वगडांग परात्तिनुगनएं के ) परतंत्रपतााने (जवगएएां के ०) पाम्पो एवो तुं जे तेऐ (बहुविहं के ०) स्वतत्रपण मूक्तिं परतंत्रपणा वहे, एटले परवशपणे रहीते, आर्थात् इंधियोने मां कही है. तेने विचारीने हे मंदमते! कांड्क तो पाप करतां पाठो नेतत्व! ॥६१॥ (झणंतत्वुनो के०) अनतीवार यणंतख्तो समणुन्यं ॥६ए॥ सूत्रमा प्रथम शुतस्कंथना पांचमा नरक विजािस आध्ययनने विषे जोड् लेज्यो प्रानिनंगनणं नवगएणं॥ गहु प्रकारनु (नीसण्डहं केण) नयानक डःख जे ते आ नरकनां इःखना आधिकारने ) अनुनव कर्यु ठ. ॥६१॥ नांसणडहं बहुविहं देवते मणुत्रते। न्तुन्यं के०)

यइने, महामहा कष्ट थनतीवार नोगन्या हे एटले इच्चिगेए जेम जेम तने नचान्यो, तेम जैडाविष्णे खबतराने कु-मारे गतिने (श्रशुपत्ती केंंं) प म्यो हु स्या ने तेयी महा ज्यानक इ खने पास्यो, परत ते इधियोने ते यश न करी रिझमिन ॥६३॥ (जम्मण् मरण् रहहे के०) जन्म मरणकष रहेंटने। (नीममहावेद्याणा के०) नयकर । विषे गयो, त्या श्रागता ग ब्यान्योत्त्र ॥ १३। ज्यारे त्यारे पण, ते इंडियोने व्या करीने आत्मसायनमा झर्प-हे आत्मन्। तु (तिरियगड् के॰) तिर्यंच ª श्राताता के॰) परिज्ञमण करी : नायार्थ-हे जीव। तु तिर्थच गतिने धनेक प्रकारनी जन्मतामरतारहरू तिरियगड तहन करतो सतो( तम तु नाच्यो 1152

तंकष्ट सहन करी आज्यों हुं. वाती पोषट प्रमुखना नवमां पांजराहिकने विषे बंधनकष्टने सहन करी आज्यों हुं. अर्थात् एहुं कोइ डि:ख नथी के, जे डि:खने तें सहन नथी करधुं!! ए मकारे आनंतीवार घोर महा नयानक डःख तें सहन कर्यां ठे. माटे हवे एवं धर्मसाधन ग प्रहार सहन करी झाल्यों हे. बली बलद प्रमुखना जवमां वणी परुणीनी आरोना प्र-टुकडा परांणे पामवानुं कष्ट सहन करी आञ्यों हुं. वली बोकडा प्रमुखना नवमां मरणां-हरीने घणा क्रोरडादिकना प्रहार सहन करी आञ्यो हुं. अने हाथी प्रमुख थड़ने अंकुरा-गरा दिकना हाथनां घणां ममणां खाइ आन्यो हु. बती घोडा प्रमुखना अवतार धारण हार खाइ आठयो है. बनी मांकडां प्रमुखना जबमां घेरघेर शतामो करी नाचीने रोटलाना जावंति केवि इका। सारीरा माणसा व र कर्घ के, जेथी तेवां डःख नोगववां पडे नहीं. ॥६३॥ पता अणतखता श्रग्न-(जोगो के०) जीव जे ते (सतारे के०) ससारने विषे (सारीरा के०) शरीर स तेने (ससारकतारे के॰) ससारकपी श्रदवीने विषे (श्रपातख । पान्यो हे पटले ससारकप श्रदवीमा परिम्रमण करता । ग्यी (ब के०) यती (माणता के०) मन सम्पी (जावति के०) जेटला एए (इस्ता के०) इ ख हे, तेने (

सबधी रोगाविके करीने पकी छाता थे ने समें छाता संवे ड एर सहन करी खाठयो है ॥६॥॥ नायार्थ-आ ससारने विषे ड ख वे प्रकारना है एक शरीर स

11 E B 11 

तपहा ऋषतलना । सतारे

_जदय न,तीरिज्जा 30 33 ु ए ज पसमेछ सबो। दहीपाम

अर्थ-हे जीव ! (तुम के॰) तने (तएहा के॰) तृष्णा ड्यर्थात् स्था (तारिसी के॰) ते

EY D क पुरुषने प्राप्त थाप, तोषणा ते पुरुषनी धन संबंधिनी तृष्णा पूरी न थाय. तेमज जगत्-है अने जब विगेरे सघड़े थान्य, जो एक जाएने प्राप्त थाय, तोपण तेने थान्य संबंधिनी च्ला पूरी न थाय. तेमज सघला जगत्मां रहेतुं हीरा, माणेक, मोती, सोनुं हपु विगेरे धन, अर्थ-सघली एत्वीमां उत्तन थएली अनेक प्रकारनी मांगेर तथा अनेक प्रकारना प्रकारनी (आणंतखुनो के०) अनंतीवार (संसारे के०) नरकरूप संसारने विपे (आसी के०) थइ हे, के, ते तृष्णा शमाववाने माटे, सर्व समुझोना पाणीना बिंड जेटला धनादिक बहे आ प्रकारनो अर्थ प्रथम नरकनी वेदनामां कही गया ठीए. माटे पुनरुक्ति दोपतुं निवारण करवा माटे आ प्रकारनो नावार्थ जाएवो. के, हे जीव! तने अनंती तृष्णा उत्पन्न ज्यन यह हती. (जं के॰) जे त्याने (पसमें के॰) श्रामाववाने खर्थे (सबेरिहिणिं के॰) सर्व समुचोनुं पए (छद्यं के०) जल जे ते (न तीरिज्जा के०) न समर्थ थाय !!! ॥६५॥ पत्पृथिच्यां ब्रीहियनं । हिरण्यं पश्चनः स्नियः ॥ नाट्नपेकस्य तत्सर्वे । प्रिमि पश्यक्त मुग्नाते ॥१॥ ाण तहारी तृष्णा पूरी थाय तेम नथी. ते कह्युं हे के,

小山西 , अत्यत म्पावाला प्रीन्याय तेमज नेशो विगरे चतुष्पद जीवो हे, त् खनता गर विषयो नागवी अनुनव नथी काधो, एवा छात्म सुखनी थ्रत्यत रुपगाली, पुरुवन, प्राप्त याय ए प्रकारनो विचार , उट, बलद, गायो, डपर कह्या रमा अवान ग्रासी ग्रणतखत पुरुष लहा. माटे हे जात्मम् । रक गर्मत नणने प्राप्त थाय, तो सुगध्य गाला विषे जेटका हाथी, अने सुबर र प्रम फर्ब

गत्मां रहेला ने घृतादिक सघता सारा सारा पुज्ञनीवडे पणा, ते श्र्यानी ज्ञांति थाय तेम नहोतुं. एवी श्रुघावेदनी तें परवश्वपणामां अनंतीवार सहन करी ठे. माटे तने उपदेश क-रवानो एटलोज वे के, आज स्वाधीनपणामां एकासणु करवुं, अथवा एक उपवास करवो, तेमां पण तने महोटो विचार थड़ पडे ठे. अने वती तुं एवुं बोले ठे के, महाराथी संब-रहेवातुं नथी. एम कहीने द्यमेक प्रकारनां सारां सारां जोजन करीने जमे हे, परंतु हे मूढ जीव! आखो जन्मारो थड़ने में केटला मण घृतादिक मिष्ट पदार्थो खार्था हगे? तेतुं सुख वेश मात्र पण द्याज तने रह्यं नहीं, केम के, जो तुं तहारा हाथे तहारी जीज उपर हाथ अर्थ-रे जीव! (संसारे के०) नरक नवरूप संसारने विषे (ते के०) तने (तारिसिया त्सरीनो उपवास पण बनी शकवो कठण हे. कारण के, महारांभी तो एक घडिवार पण नुस्खु नावार्थ-हे आत्मन्। नरक नवने विषे तने एवी क्षुया उत्पन्न थड़ हती के, आ ज-देरूप पुज्ञानासमूह जेतेपण(न तरिङ्का के॰) न समर्थ थाय!॥६ ६॥ उत्पन्न थड़ हती के, (जं के०) जे ध्रुयाने (पत्तमें कं०) समाववाने (सबो के०) सर्व एवा (बुहावि के॰) सुया पण (झाएांतस्बुनो के॰) झनंतीवार (झासी के॰) कें ) तेवा प्रकारनी (

-5-35-5- Y27 पदार्थानी काइ पण चिकारा जलाय हे ' खर्यात् नथी जजाती 1 पवानी नथी श्यने जिहवा रहाना मूलमा पाछी करीने सारा 125 प्रपचाविक 180 इंडि तुप्त ण अपती इ मनेक श्रकारना पाप 幂 मुरुवापी मदा मानी असी ह्रोय, ने पए जेतो सतना पटलाब र्गन कर्ष्य ने 電

\$*******

* 杂合x 热盐基基等容易

2 X 4" 4" 5"

210 (ज्याषोगाई के०) अनेक एवां (जम्म-जनमणमरणपार्यद्यहणसयाइ ॥ लहड जहिष्टियं जीवो के र्लोगाई । अर्थ-(जड़ केण) ज्यारे काकाणम

ス の

शंकड़ा.

(सयाइं के ०)

तःव क-

(डस्नेण केंग)

काम्त्रणं केंग)

शंकडो परावनेनन

र्टले जन्म मर्णानां (माणुसनं कें)

) मनुष्यप्षाने ।

(यहणा के)

ण मरण के०) जन्म मरण

निहिंचियं केंं) यथा इज्ञा प्रमाणं.

पामे हे. ॥ इ ॥

(लहड़ केंग)

एटल अभाम ज्यारे आ जीव मन्त्यप्तानि पामे हे, प्रकारना डि:ख सहन करान

र्वां जन्म मर्णनां शंकडां एटलं क्यारंक जन्म, क्यारंक

नावार्थ-रे आत्मन् । अनंत

स्वनं आपनारों, तथा मांह्रना सु-

ट्टले देवताना

त्यादिक

R

श्चर्म-(जो के०) जे पुरुप (तह इझहजन के०) तथा प्रकारे एटले चुझकादि दश ह-... रत नामवा याग्य एतु (च के०) वती (विवज्जावा चचल के०) विजलीकप ज पेठ चचल एवु (ते के०) ते, एटले ते योग्य एन (नान्यान्य) | | सने आपनारो, आ मतुष्य ना हे परंतु मनुष्यना विना कोड नवबढे मुखनी प्राप्ति यह एयो हे अने दश हषाते करी छत्ने पण एटलाज माटे कह्यो हे आ दश हष्ठातनु रा-गुरुती नथी एटलाज माटे झानी पुरुषोए सर्वे जा करता छा। मतुष्यजवने छनममा छनम । विज्जालयाचचल च मण्यत ॥ तथा ग्रथ निस्तार थवाना नमधी लख्यु नथी । सो कार्डास्सो न एले गमावी खासर चूकरो नही ु । घम्मामि जो विसीयइ । त तहज्जहालम ह्य प्रसिष्ट हे माटे

एटले ते योग्य एतु (मागुयन के०) मनुष्यपधु, तेते पा-

पामे हे (सो कें) ते

ोसीयड के॰) खेद ।

मीने (धम्मिमि केष) धर्मने ।

नावार्य-जेनग्रासनमां प्रसिद् एवां व्या ह्यांते इतित एवा, यने विज्ञीना फायका-पण, जे पुरुयो धर्मसायन करवामां प्रमाद करे हे, ते पुरुयो निंदा करवा योग्य भाय हे, पण ते त्रखुरुपोनी पंक्तिमां गणवा बायक थता नथी. माट हे जीव ! पूर्वे अमुनव करेला पशुपणा-कृतित (सिंदित) पुरुप जालबो. पण(सप्रिसो के॰) सप्पुरुप (न के॰) न जाण्वित,॥६०॥ नव अही द्वीपमां थयो, तेमां वजी कमें जूमिमां थयो. तेमां वजी आर्थ देशमां थयो, तेमां तनी पेंठे ख्लानंगुर एवा, ने जेमां कोड़ प्रकारनी पण खामी नथी एवा. एटले जा मनुष्यनो यती छनम कुनने विषे वयो, नेमां वती व्यक्तिकत्र पंत्रेष्टिंय पूर्ण ययो, तेमां वती निरोगी काया पाम्यो, अमे तेमां बती सदगुरुनो अने सत् शास्त्र सांजत्रवानो जोग बन्योः तेम ततां जिणिद्धम्मो न कुछ य जेएं ना स्वजावने मूकी देड़ने, मतुष्यनवने लेखे लगाडनामां उद्यमं कर्त्य. ॥६०॥ मलब्र ॥ उपनामियुपास, ॥ माणास्स्तानमे तिड लघ्यंपि श्राणकृष्ण धर्य-(नेता के०) जेखे (तिहे के०) सत्तारह्य समुच्ना कागरूप (मातुस्तजन्मे के०)

के॰) नपी करचो (सेए के॰) तेएं खर्यात् तेते (य के॰) पए। (जह के॰) जेम (पाएंकरए के॰) धनुपीरि पुरुप जे तेएं। खर्यात् तेते (गुएं के॰) पण्ड (तुंडे के॰) तूटे सते (खरस्स के॰) निषे (हड़ा के॰) श्पर (मलेबा य के॰) यसवा पडेज हे तेम क्रा जीवने पण हाथ घ-सर्गा पढ़े हे एटले पढ़ी प्यात्ताप कररो पढ़े हे।। इए।। (जिपिष्यम्मो के) जिनेष्ट्नो धर्म जे ते (न कडी ममुष्य जन्म (ज इय्मि के॰) पामे सते (

नावार्य-ज्ञानता जवरूप समुष्टमा जटकता मटकता मनुष्य जन्महप कावो प्राप्तपर् सते पण्, जेषे आदिसाहप जिनथमे न आपराण कर्यो, तेने, जेन रणस्याममा युद्द कर्ता गएजा एक धनु गौरी पुरचना थनुष्यती पण्ड मुटी गडू, तेथी तेने जम हाथ घस्ता पब्दा, तेम तहारे पण हाथ पस्ता पड्ये माटे, हे जीव । जो सु पण उती सामग्री सते जिनथमेरूप नातु निह महण्य करे, तो तहारे पण मरणावस्थाये पश्चात्ताप करबोज्ज पड्डा प्रकारे के अरेरे।

\$1.50g

परलोक्ते जतां[पर्मरूप नातु काड पण् लीघु श्रय पस्ता पदशे बली चेन था भवमायोडो

ति नहारे हाथ पसना पडशे

में उती सामग्री 🗷 पाए आ शु कर्छु।।। के,

नहीं।माटे त्रवे हु मु करीश्। एषी र्

गं त्रातु लि-। ॥ विना मुं खाइमुं? इत्यादिक परलोक संबंधी तने कांड पए। विचार थतो नथी! माटे हे ं सांनत्य के, जे (चंचसंसहाव के०) र्वयो बंदोबस्त करी राखे हे के, अमुक जग्याये उतरीशुं, ने त्यां अमुक नोजन करीशुं. रीतनो वराव करीने पढी पोतानी साथे नातादिक घणी सामग्री लेइने जाय हे. पण गल रहेआ माटे कोइ पुरुष ज्यारे परदेश जवानी होय, त्यारे ते पुरुष प्रयमयी जाता विगरेनो मूढ जीव! सर्व डःख मात्रने निवारण करनार झने मनोवांछित सुखने आपनार एतुं नातु जिया शिवाय जतो नथी. तेम तहारे तो छहिंथी मरीने क्यां जबुं पडशे? ने त्यां है सहु इद्याल ॥५०॥ दिवस रेहेवुं पडशे? अने कोने त्यां जइने जतारो करवा पडशे? अने मार्गमां मिट्हेविण सयलावं वन्ननाव ॥ संसारि आंज र अर्थ-(रे जीव के०) हे जीव! तुं (निसुषि के०) नवसयपारमाह विविह्णाल जीव निस्णि वंचलसहाव नातुं संगाये राख्य. ॥ हण।

रह) ज शाराराविक वरवापक, एषड मण्ड, मण्ड पर माक्य सानत्य द्या देखातो स नावार्य-हे ज्ञारमन् । तहारु हितकारी एवु ज्ञा एक मक्य सानत्य द्या देखाता स् रीराविक सवतो वाद्यनाम हे, ते डच्डाल समान हे एटले नव प्रकारनो परिप्रह⁴⁴ ते स वलो चवल समावमालो हे एटले क्रुणमा देखाय खने कृत्यामा नाब पामी जाय एवी हे वलो चवल समावमालो हे एटले क्रुणमा देखाय खने कृत्यामा नाव्या तेने चचन स्वनायवाला (समजीव के०) सर्व एवाय पण (वझ्नाय के०) हारीसादिक वाह्यताचने मूकीने तु एकसोज परलोक म जड़ेंग, पष पूर्र कही तेमानी कोड़ बस्तु पण तहारी साथे खाववानी नथी केम क, ते मिन्हेरीणु के॰) मुकीने परलोके बईश, ए हेतु माट (ससारि के॰) ससारने निषे (आर्थि परिमद्दनो (विविद्दजालकः) अनेक प्रकारना समृह, ने श्रीरादिक देखायठे, (सहु के॰) ते सघस् (इद्यास के॰) इज्नास समान हे ॥४०॥ एटबुज नहि पए सतारमा जे ने वस्तु देखाय हे, ते सर्वेने तु इष्ट्याल समान जाषीने । * १ थन रुषाय १ दान धषर, ५ सुनए। ६ रूपु ७ यात्रितात ६ तीपन ए नतुष्य यस्तुताए श्रसन् हे माटे तेने विषे तु सत्यषणानी च्राति न करीश ॥७०॥ कारण के, ते संधला बाह्यनावने त्त्या(मग्नेयपरिगाह के०) नव नेदवाला " वेषे मोह ममल न कर्ष

स्त्री पुत्रादिक सी पोत पोतानां स्वाथी हे. पण कोई कोईनुं न्यी. जेम के, उपर त-जाबार्थ-आ जगत्मां परलोकने विषे कांड् पण सहाय्यता करवाने न समर्थ एवां माता (इहलोड्अ के०) आ लोक संबंधी (सब के०) सर्व एवो (मिन के०) मित्र (पर के०) गृह (परिण के०) स्त्री, तेम-पोत पोताना सुखना खयीं हे. पण (तिरि निरय इस्क केंग) ति-(कोड़ विकेण) (निय मुह सहाय के०) पोताने स़ख करवानो हे खनाव ते (इक्रल्तु के०) तुं एकबोज (सहासि के०) सहन करे हे. (तुह के०) तहारे (सरीण के०) शरण करवा योग्य । इकान्त्र सहिम स्ब वि तया नरक ते संबंधी डःख, तेने ( -(मुख्न के०) हे मूर्खे। (पुन के०) युत्र । नो (जाय केण) समूह जे ते ( जेमनो एवो हे. एटले सी पोत होड़ पण (न अधि के॰)

माण्स भी न्या नरपूर वंदनामा तरफडतो नजरे तमे ठानी रीते सचय करेल, आपे पातानो स्याथं साधवानी ब खेला परना माखसोने एवो निभय थाय हे छे,' न नही कहे हे क

12 Ŕ ग्ग्यांडे शुन तेमने नथी साधन परत ते बापडो नरकादिक ग ११ तथा ते विचारो घणु झन्द र्व थादजु काम रूच तेनी पन्नवाहे नद्री पोताना परताकन गण न विचारता कुढ फपट विचार पण गेतानो स्वार्थ सनारो सनारीने रुए ठे, के, याया समजवा गनाग न लेता फक्त तेनुज ख यतो आने वती आयो ि ड ख पदता हगे? Ë कृट्या करधु रात्री दिवस पोताना शरीरमु सुख प मुकीने गया। पए तेज एम नथी विचारता नरच पोपच एको विचार पण नभी थतो सूता सूत्री पए। एथे आपणु, वैतह ब विपे एकतो गयी हे, त्या तेने केवा बीजा ड खमा? नुष् पादिक कर गयो है।

मुकति ।

PE

न क

59.04

हरवाना ध्याकाम जरा

```
ص
ص
                                                                                                                                                                                                                                                                          मा अध्यवनमां ने. त्यांथी विस्तार्ना आर्थ पुर्पाए जोश लेखें
                                                                                                                                                                                                          माटे श्री महावीर स्वामी गी-
                                                                                                                                                                                                                                 (समयं के ) एक समय मात्र पण
                                                                                                                                             'चसांबंडए केंग) जा-
पामीने
                                                                                                                                                                                      एवं केण) ए प्रकारे (मणुआण केण)
जीव! हे महा मूर्ख!! कांडकतो विचारच!! के, हुं आश्रवनावमांथी निहाति
                                                                                                                                                                 पडवानी त
                                                                                                                                                   मानना अयनागने।
                                                                                                                                                                       एटले व
                                                                                                                                                                                                                    रंतेत जेते नेचल जाणव.
                                                                                                                                                                          सता ।
                                                                                                                                                                                                                                        यम् के ) हे गोतम!
                                                                                                                                                                                            रहे थे. (
                                                       ॥ मागांथेकाइतम् ॥
                                                                                                                                                                    । लांबो थतो ।
                                                                                                                                                                                               (चिट्ट केंग)
                                                                                                                                                                                                                                                               119 21
                                                                                                                                                       (क्सम्म कंध)
                                                                                                                                                                             लबमाणए कंग)
                                     नावमां वर्ते ॥ ११॥
                                                                                                                                                                                                   (यावं के०) थोडो
                                                                                                                                                                                                                                           प्रत्यं कहे वे
                                                                                                                                                                             बिंड जे ते (
                                                                                                                                                                                                                                                                  मा पमायए कंग
                                                                                                                                                                                                                          मनुष्य जं
```

し の

। एदे, थोडोज काल रहे ते उ टे एटले जोता जोता अल्प नायु वडे पण शीघपणे नाश पामें तिवु डे खपीत मानमा श्रमने विपे खेला जलांजिह तो, कक्त वायु गडेल नाश पामे डे प्-रतु ह्या मनुष्य तो, खनेक प्रकारना कारणोथी मरे डे जेम के, ताव खायवाथी, मजारो नावार्य-भी महावीर स्वामी गौतम प्रत्ये कहे वे के, हे गोतम। एक समय मात्र पण प्र माद न करींद्रा केम के, आ मनुष्यपष्णानु जीवतु मानना श्रमनागमा रहेला जडारिडनी

यवाथी, कोनेरा (कोगसिष्ट) आववाथी, घर पडवाथी, ज्राप्तिवडे बलवाथी, शस्त्र प्रमुख वा

था डश्तेशा उष्ठ भी ए व गावात्र श्री सूचतहाग सूपना प्रयम उत्तरक्ष्या वैतालीय छाण्ययत्त्री त. सर् करडवाथी इत्यादिक अनेक प्रकारना कारणो मतावायी डिपितो नाजा एम जाणीने हे जीव। धर्मरुखने विषे समय मात्रनो प्रमाद न कर्य । संबोही खलु पित्र

11931

मुलह पुणारि B & 1

राइड । नो र

सबुझह किन बुझह।

कर्या एवा, अने चारित्ररूप धर्मने जाएगे, कारण के, आवो जीवियं के o) सुलन्न नथी. ए भेमी । राजी मुलन नया . ज्यहाणु पुत्रो प्रत्ये श्री आदीश्वर नगवान् उपदेश अहो नन्यो (गड्ने केंग) नथी. भेम (सुलहं नो के) अर्थ-श्री क्पन्नदेव स्वामीना पुत्र श्री नातेष्वर, तेमणे तिरस्कार ) मरण पाम्या पत्नी परनवने विषे हा के०) डलेन वे. शाथी के, (राध (मुलहं ना केंं) खावता केम तमे बोष नथी पामता? तंबुझह के।) (जावियं के) फरीने पण एटले फरी फरी। गयेलां पावां = R R = = फरीने पण सांधवुं दुरान डिल्न हे. अथवा

(डझहा के०)

(एवंच कें)

कि न बुझह के०)

ज्यना अर्थि एवा, पोताना

खलु केंंं) निश्वें (डझहा केंं ) निश्वें (डचणमांति नो केंं)

(युषारवि के)

₽0 प्तामग्रीसते पएा, केम बोध पामता नयी?

हाइ पए समये

(पुषारवि के)

ाम्बं ने ने

थानव

अवसर

जावित

टल संयमरूप

विषे बोध पामो ते कह्यु हे के, क्षयांत् नोगने तुच्च जणी, तेनो त्याम

तेने परनवमा सजमरूप

स्खने थुपे रत्नाकर समान

: झुल्प श्रने तुंड एवा विषय

ग्ह्यो एवा त्नाकरमां स्थाम

तेने बब्ले काचनो । त्तवनो ककडो र

ज ख

रटले रत्ननी र

दिक सुखनो छापनार एवो, मनुष्यनो नव मले।

लातु स्वल्पपदीति • त्तृब्धं स्वरूपपदाहि

। सते, तहारे सगार मात्र पण काम सुख र मुखनो परिणाम सारो आवतो नयी ते वपर निमा रह्यो हे, एवा रत्नाकरने पामीने

1831 र्वा, रात्री दिवस 40 मलतुंज नथी. बली गयेला एवा, ने धर्मसाधन करवाने योग्य। गमत् थ न्सादिक toc

00

(बुद्धा के व) त्रहरू (जह के ) जेम ( हरे के0) हरण करे हे. यथ (महरा कं) वाल एवा (य कें) हिला एवाय पण । प श्या श्या पासह क् अर्थ-हे यात्मन्! प्रचावि के॰)

तहरू के

क्च ययं सतं।

9

ठपढ़ेका करवा योग्य होय, तेनेज मनुष्य कहीए परतु ले ठपदेब देवा योग्य न होय, तेने तो मनुष्वमी पक्तिमा न गणवा एम यपकारनो खतिप्राय हे यती मनुष्यनु आयुष्य झतेक प्रकारना कारणे मतवाथी पशुन चवदा हे एम जणाववाने छाँपे सर्वे झवस्पामा मरख क्शिन पामे हे अने केदलाएक महाकष्टे करीते, जन्म यया पत्री वालपणामाज मरण पामे हे अने सरए। वामे वे झने केटलाएक तो इन्द्रास्थाना ड ख जीगवता जोगवता, पराणे पराणे परा परीति सरण पामे वे चली छा जन्याए सानव कृत्द ग्रहण करगे वे, तेनु ए कारण वे के, देखाङ्यु ठे चली श्री सूयगढाग सूत्रना प्रथम श्रुतस्कथना बीजा बैतालीय ऋष्ययनी बीजी नावार्थ-हे जीव। तु विचारीने बोके, केटलाएक मनुष्य गर्नमा रह्याथकाने मर्गा केटताएक जवान घ्रास्थामाज पोताना स्त्रीछादिक वहाला पदायोंने, छणइड्डापे मूर्काने **अर्थ-त्रष पत्योपमना श्राषु**त्यबाहाने पष, पर्याप्ति पाम्या पठी श्रतमृहूर्ने तिपल्योपमाधुप्कस्यापि पर्याप्स्यन तरम नर्धुण्यनैय कस्यानि भृत्युक्पनिष्ठताति क्एं यायुष्य नारा पाने हे खयना मृत्यु ने ते जीवितने हरे हे ॥ गधा ॥षानी वृषिकामा तथा टीकामा कह्यु ठे के,

कोइक पुरुषने मृत्यु जे ते प्राप्त थाय हे.

बती भी गणांगजी सूत्रना सातमा गणामां कहां हे के, म्त विहे आछ जेरे. पत्रते तंत्रहा. ॥ आयाहत्त्र.॥

ग्रथं-आयुष्यनो नेद एटले उपक्रम जेते, सात प्रकारनो कह्यों ठे. कंम के, निमित-पामवापणुं ठे ए हेतु माटे. हवे ते सात नेद देखांडे ठे. सराग स्तेहना नयथकी एटले अझमाण निमिने। आहारे नेयणा परायाए।। मामे आणापाण् । स्तावहं नित्रप् आक ॥१॥

होइना उपर अत्यंत स्नेह होय, तेवामां तेनो नाश सांजलवायी उत्पन्न थयो जे नय,

आगल गुटे हे. एम आगल पण संबंध जोडवो. ॥१॥ वली इंभ शस्त्रादिकना जिथिता

॥६॥ अने श्वासोझासने हंयवायी. ॥॥॥ एम सात प्रकारे खाछख् नेदाय हे. ख्यवा ह-तथी. ॥१॥ तथा आतंत आहार करवाथी. ॥३॥ तथा नेत्र अने ज्ञादिकनी वेदनाथी. ॥४॥ तथा पराधातथी एटले गर्नेवातादिकथी. ॥५॥ तथा तरेहवारना सर्वादिकना स्पर्शयी.

みみなながななべ 出 ने अटे हे ह ग्ण निरुषक्रम आडखावा SER SE करवामा सावधान पा पूर्वे कहेला ि पण नाज़ पामे हे विरमति न पावाड पक्रम ने कारण ने जेन, तिहुयणज ₽ **~ 泰子令个小孙孙小孙孙子教外外外孙恭张宗教教不得在李子不不必然於外外外的** 

नयी डेसरता, तेवा निर्लेज नीवोना विड्डपणाने विकार यात्री विकार यात्री! एम द्यतिशे अथं-(ज के०) जे पुरुष (मरंत के०) मरतो एवा (तिह्वणजएं के०) त्रण जननना जीनने, मरता देखोने अने जाएं।ने पण पाताना आत्माने धर्मने विषे नर्था जीडता, तथा हिंसादिक यकी निद्यति नथी पामता, अर्थात् ने क्रवयी पाप नंथाय हे, तेवा क्रवयी पाठा नायार्थ-स्वर्ग मृत्यु ने पाताल ए प्रकारे ज्ञण जोकना रहेनारने, ज्यर्थान् सर्व तंसारी डता, शने (पावान के 0) पापयकी (न विरमंति के 0) नथी विराम पामता (ताएं के 0) ते-जनने (वहण के०) देखीने (आप्पाणं के०) आत्माने (न नयंति के०) धर्मने विषे नथी जो-मना (थीडनएं के ) विडड्पणाने एउने निर्जे जापणाने(यीयी के ) विद्यार याचे ! १ ॥ ९ ५॥ विकारपणु जणाववाने माटे वेवार विकार जन्द कह्यों हे. ॥ अप॥ स्वेति तिस जायइ। हियोबएसी महादोसी 119६॥

मामा जंपह बहुयं। जे यदा चिक्रणेहि कम्मेहिं॥

जोड़, योग्य शिष्यो गुरु प्रत्ये कहे एवा (रुम्मोड़ि के॰) हमें करीते | शुर्थ-श्रयोग्य क्रिच्योने रुपापी मुरुने अपदेश मरता निक्रवाहि केण) विकणा सर्वे द्ययोग्य

जायइक्ष) थाय हे ॥ उष ने ते, विनती करे ठेके, हे नगान। आपनो करुणासागर ठो परतु काता निविडपशर तित्रीय पामया । सागर्य-अयोग्य शिष्यने वारवार वीय करता देखीने, आवार्ष महाराज प्रते क्षेच्योने ख्रापममे तेटानो प्रतिनोध करशो, तोयपण तेष्ठे । महादोप वालो, अथवा महा देप गजी योग्य नंपी जेम काचा षडामा नाखेलु केमके, जे प्राधियो ज्ञानावरणी महादोसी कें) नमोपडेश देवाने जवाय वे

<u> मोताना झात्माने पण नाग्</u> भू पमाहे ने

घडाने परा माज्ञ

मकापाय न शान्तये उपदेशों हि मूखों(एां।

प्यःपान भुजन्नाना

ने ते, प्रकोपने खधें थाय हे. एटले डपदेश

m 6

(सयपा कं0)

ग्ययना जेने

यानंतु वे इःष ते जेणे करीने

किस कव

मृहसु ऽ।

ममत

घणा कं ) धन एटले सुवर्

त्वा

पामे हें ॥ उ ६॥

वधारतो ।

THU.

दय पीए हे,

मक्ते जे

उपर कीप करे छे.

थर्य-मूर्व ड

ظ

नावार्य-रे मूढ आत्मत् । ध्यनत ड खना कारण एवा, स्वजन, विना, पन इत्पा-दिकते विपे ममत्व करी महोटा ड खनो नार हु माथे छपाडे हे पण्ण वर्नमान काजना स्त-जनादिकते जो हु छपकारी जाणीने ममत्व करता होप तो, एवी रीतना छपकार करनार इत्यादि-तो, द्यतता नवमा अनता स्वजनादिक षया हे माटे ते स्वजनादिकने विषे तु केम ममल नभी करतो ? झने ते स्वजनादिकना दया हवाल थया हुरे ? तेनो षण लगार मात्र विचार नभी करतो! वाली फक झाज जवना स्वजनादिकने अर्थे राग हेपे करीने लेती, व्यापार, माता पितादिक सजन तथा.(विद्व पपृदेषु के०) हाथी, पोटा प्रमुख विनव, इत्यादि-कने विषे (ममन के०) ममलनावने हु (कुणित के०) करे हे (पुण के०) परतु (आयत-मुस्तामे के०) धनतु हे सुख ने जेने विषे एवा (मुस्तामि के०) मीकृना सुखने विषे (खाप-थने सेवादिक के, जेमा प्राष्तीनो उपघात थाय, एवी न करवा योग्य किया, या जीव ध के०) झनतु हे सुख ते जेने ि यादरने नु (सिहिलेसि केण) यम नयी करतो ॥ । ।

गेतानी मातानु माथु

श्रनत वीर्ष राजामा श्रासक पएजी रे

तेते मारी नांस्यो. वली पोताना स्वार्थ माटे सुनूम चक्तवानिये बाह्यणोनो छाने कृत्रियोनो वली राज्यना लोने करीने कनककेत राजाये पोताना पुत्रोनां सर्वे छांग ठेदन करयां. वली नीति शाखना कर्ना चाणाक्ये राज्यना लोजे करीने पोतानो मित्र जे पर्वत नामे राजा, ए वे जाइ बच्चे, महोटुं युद्ध थयुं. ने तेमां हजारो जीवोनो संहार थह गयो. वली विपय राग पूरो न श्रवाशी पोतानो पति जे परदेशी राजा, तेने सुरीकंता राणीये केर देशने मारबी. एटलुंज नहीं पए।, ठेवटे गले नख पए दीयों! वली पुत्रीना स्नेहे करीने जरासंधे श्री ऊष्ण वासुदेव संगाये महोटुं यु ठ करी, पोताना कुलसहित हजारो जीवोनो नाश करवो. आग्ने सनगाव्यो. वली एक हार हाथीनी लडाइने माटे, फक्त एक पद्मावतीना वचनथीज एक क्रोडने एशीलाख जीवोनो घात थयो. वली राज्यना लोने करीने नरत अने बाहुबबी कापी नाख्युं. तथा तेज फरगुरामे पोताना पिता छपर राग होवाथी एकवीश्वार नक्त्री मंगीखानामां नांख्या. तेमज पोतानी मनोत्रीत प्रमाणे चालवामां झडचण करनार जाणी-ने, चूलणी राणीये पोतानो पुत्र ने बहाइन, तेने मारवाने अर्थे जाखना मोहोजनां षाली एथी करी, बली काणिक राजाये राज्यना लोने करीने पोताना पिता जे अधिक राजा,तेमने

क्य रूजो एगी सेतमा थ्रनेक द्यातो है ते जो सख्या रेसीए तो तेनो एक महोटो मथ पुत्रो मे भाता में। स्पननी में गुरमत्त्रमाग म ॥ इतिष्ठतपमेग्रन्त् । पशुपिर मृत्युत्रन हरिने ॥१॥ यता पए। पार न मारे माटे विचारवानु आटलु ने के,

अर्थ-तु राजी विरस एनु निवारे हे के, ज्या महारो एम, ज्या महारो नाई, ज्या महारा स्यजन, ज्या महारु थर, ज्या महारा खोळाबिक गोहेगरी, परतु ए प्रकार बोलानारने जेम था तकी पुरुष, में ये करता एमा योकडाने हरख करे हे, तेम मुखु जे ते, में में(महारु महारु) करता प्राणीने पकडीने जेंड जाप है ॥१॥ माटे तेना छपर ममत्र करवाषी छल्दु पाप वधाको पण तेमातु कोड मरी जवे, त्यारे ते

मापी कोड़ पण ते मस्तारने राखना समर्थं पतु नपी, एटबुक नहि पण, पंताना स्नापैमा सामी आववापी,पोडा दिगस रुद्रन करी,'भषेलाने चूली जबु"एरी नाज प्रमाणे तेज सन्पीयो ्र लामी आववायी,पोडा दिवस रुदन करा अवलाज पूरा जुड़ रें प्रमुख समये फक मोहना घठाता। १ हेने यिसरी जाय है जैम पोताना बीग बर्पना पुत्रना मुखु समये फक मोहना घठाता। १ थी गादहरोर (तावा रागे गुमो पाडी) रुदन करनार अने ठाती कुटनार पिता, पोताना मीजा

्रदेश व

डहहुक कि । ड खन् कार्णा 1001 गसमा खु काम कर्नु के, होव धर्मव्यान थाय तथा । त्तवां यनाय प्रडम् व ससार जे ते **5**7 लुख ीव (सत्तारों कें) झा श्याव 119911 केंग्) ड ख़िएज प चयात सहन पाय, एनु ज सतारा मिसाना च्यार महिन 2 नेयी रात्रीपे श्यं-हे इ मा एवु काम

\$3.55 to ......

20

ग्रहम्ब

(न चयंति के॰) नथी त्याग करता. अर्थात् संसारने डःखदायक जाएं ठे, तोयपण तेना नावाथ-आ संसारमां सर्व बंधन करतां प्रेम बंधन अतिशे महोटुं ठे. ते कह्युं ठे के, कमलनो रस पीवाने बेठेलो एवो जे नमरो, ते मनमां विचारे हे के, इडं विचिन्तयाति कोरागते डिरेफे। हा हन्त हन्त मोंलिनों गज उज्जहार ॥ १॥ ग्रिगीमिष्यति सिषयाते सुप्रसातं । सास्वासुदेष्यति हसिष्यति पक्षमश्रीः ॥ दारजेद्निपुर्गोपि पहङ्गिशनिकियो जनति पक्षजकोये॥ य ॥ वन्धनानि खुळु सन्ति बहूनि । प्रेमर्ज्जाकृतवन्धनमन्यत् ॥ । वसन्ततिलकारम् ।। ॥ स्वागताष्ट्रतम्. ॥ चाग नयी करता. ॥ उठ॥ ग्रथं-जेम जरें ने सारो प्रनातकाल थरों ने सूर्य उगरों, ने कमलनी लक्ष्मी हसरों एटले प्रमु-

एटलामां पाषी पीवाने माटे आवेला हाथीए

लित थरो. त्यारे हुं छडीरा. एवा विचार करे हैं. "

हरतां करतां संध्याकाल थइ. ने कमल मिंचाइ गयुं, ते बखते ते नमरो विचार करे हे के

संध्याकाल पडवा आवी, ने कमल मिंचाइ जशे; माटे हुं छडी जछ तो ठीक, एम विच

ते कमलने उपादीने हा इति खेदें। मुखमा याली, पेला विचारा जमराने वातवंद चाववा है। माडचो। ॥१॥ ने वखने पेलो जमरो मरता मरता पशानाप करें हे के, जगतमा यथन तो माडचो। ॥१॥ ने वखने पेलो जमरो मरता मरता पशानाप करें हे के, जगतमा यथन तो वणा है। पणा प्रेमरूप वोरीतु वथन तो एक जुदी जातनुत है। केम के, गमे तेषु काष होय तो पणा तेने विचयाने जमरो समर्थ होय हे। परत हुतो स्तेह करीने कमलाना वांडाने विपे रहीने किया मरणातिक रोगनी वेदनादिक करीने नकली जवा समग्रे न ययो।॥१॥-यली प्रदान प्रमान मरणातिक रोगनी वेदनादिक करीने पराज्य पाम्मो सतो अतिहो, सतापनी अज्ञुन्य करे हे एटली वेदनादिक अति पासे व्याप्त व्याप्त वांच हे, तोपपणा मोहना अव्ययपी जोगनी आकाह्मा(इडा)करे हे छने पासे वेदनी बाना उपर हाप नाखीने पोतानी बाकाह्मा(इडा)करे हे छने पासे वेदनी बाना उपर हाप नाखीने पोतानी आकाह्मा(इडा)कर हो आने पासे वेदनी वोद गयो कोने हो एवी रीते हे अनुनेव करतो तातो, हे खीन नाम वारवार सन्तारतो सतो वेदना नोगवे हे एवी रीते हैं चक्रवनीं जेवा पुरुषो तो,रोगनी वेदना थये सते पण देहने तथा छात्माने जुदो समफीने एव विचारता के, छा महारू करेलु कर्म मने उदय छाव्यु हे माटे महारेज नोगवबु पडरे नोगनी त्यासित त्याग करवी घषी इष्कर हे आने केटलाएक महा सत्यवाला सनत्कुमार

D 5 थवा देता नथी. वप्न राहत ठ. एटल ए बांजमाथा बृद् रोगरूप खंकुरा उत्पन्न थया ठे. अने तुं सम्यक् प्रकारे एटले सम्तावे नाहि ट्ट पोते पोताने हाथेज वान्यों हे. ने तेमां मोहरूप पाएगि शिच्युं समनावे नहिं नोगबुं अने ते हज्जनी जन्मजूमि पए। अगुन कर्मरूप क्यारामां ते. वली राग हेप कपाय, रें संतित एटले श्रेएि, ते रूप बीज हे. ते महोटा विघ्न रिहत हे. एटले ए बीजमांथी पुष्पने जो तुं सम्यक् प्रकारे एटले सम्नावे ते महोटा विघ्न राहित हे. एटले ए बीजमांथी र्यो निश्य करीने समता सहित कर्म त्रोगवे हे. पए। मनमां पीडा जत्पन्न तो, ते पुष्पमांथी अधोगतिनां हःखरूप फल जल्म थशे. ॥१॥ एंडु विचारे छे के, तिततो डःबर्यागामितिः॥१॥ आपदाने र नुसो यः स्वत एव महिसांलालां जन्मालवालांडगुनो रागडेपकपायसंतित्तमहानिविघ्नवीजस्तया ॥ रागिर ब्कुरितो विषट् मुमितः कम्मेहमः सामते आम विचारे हे के, जो हुं आवी पहेली सोंडा नो यदि सम्यगेप उत्पन्न थया विना रहेन नहीं; तेवुं हे. अने विपत्तिरूप युष्प आव्यां हे. ते विपत्तिरूप अर्थ-आ कर्मकप

(जीयो तेष) या जीव महागमन एमाथी महारे डुगीतेना ड खरूप फल उत्पन्न धभे माटे हे जब्य जीवो। आ प्रहारना ग्व पन्ता कि०) अश्वम में डिख ते 113611 नसारकप करा (म्रत) काइ अत्प वध वधनादिक गिटनना (मसारज्ञाचाषे के॰) अस्*व*धकान सत्तारने ड खमय जाणीने संसार वटाडवानो उद्यम सहम करवाने 20 E पाबए १ पामे है। 07 विभवणाने कंग) द्वनात्रेने नयानफ) वमव्यान (कश्म क्षेष) <u>2</u> वार के

9 नावार्थ–हे आत्मन्! तुं पूर्वे अनुनवेतां डःखने, लगार विचारी जो के, तिर्यंचना नव-ाखवी. या वेकाणे मेवकुमारनं हष्टांत जाण्वं. ते हष्टांत प्रसिन्ठ वे माटे लख्युं नथी.॥ वणा एटले पीडायो हे हढ एवो पण देह ते जेनो, एवो थयो सतो, तुं (आणंततो के०) (अरए) के ) झरएय (अटवी एटले आ जीव अनेक प्रकारना रसायण जेवां के. (निन्नयणदेहों के०) सीयलानिल के 0) तांयपण पांप महा महिनानी अत्यंत तादथी II Coll मीयवानिव । वहिरिसहस्सोहि नित्रघणदेहो ऽएपना , पाम्यो हुं. ॥ ए०॥ (जहारसहस्सांहे के ०) हजारो जहेरोवडे निहणम तियंचना नवमा (शियातो) (निहणं के०) नाशने (ञ्रणुपनो के०) (तिरियनण्मि के॰) सिसिरंमि के ) शिशिर कतु दंह, ख्व मजबूत हता, । (ताहा) वायु, तेनी (र गे हे. एटले पीडायो हे इ

ग्रीताल विगेरे खाइने ग्रारिते मजरूत तथा पुष्ट करबु थारे हे, तोषपण ते शरीर घोडा |है खु, ग्रुथमा पाडा जेवु कदिपण यत नथी तो पण ते ग्रारित्ये घोडानी तथा पाडानी छ- |है विना ग्ररीर पण, आसत तादथी नाग्न पामे हे ते सहम करवा तो खा नवमा धर्मतायन निमिने ख सहन नथी करतो ? ॥ ००॥ परिपह तु केम नाश पामवादिक ड ख ते पमा अपाय हे तेवा ६ नेवु, ग्राथमा पाडा

(जरण के) ध्यर्ध-हे जीन[।] तु (तिरियनवे के^o) तरियन्ये सपतो । 20

200

उसए बुहिन

गिम्हायवसतता

ग्राप्तकृत्ना तदकावंड (सतता कंग) (तृहिन के०) क्ष्पा वेदनाने सहम व

खंद प 9 सहन करतो एगो, ने (बहु केष)

ाणां तृपा वंदनाने ।

लहार्म्स आ तापनुं डःख, रया हिसावमां हे ! एवो विचार तने विषे तथा नरक नवने विषे में अनंतां तापनां डःख तिर्धेचना नवमां शीत परिपह सहन कर्यो. तेम उप्ण (शाष्मक्तुमां) एटले वैशाख जेठ महिनाना आकरा तापमां ते जष्ण परिसह सहन विली अतिशे तृषा वेदनी तथा अतिशे क्षुषा वेदनी तेषे करीने, तुं अत्यंत भ परंतु ते डःखने विसरी जड़ने, आ नवमां मतो सतो (मरणडहं के०) मरणनां डःखने (संपनो के०) पाम्यो हतो. ॥ । १॥ 116911 ोदगेहि बध्रंतो गपने पण नीसहन करतो, तुं पंखा प्रमुखे करीने वायुकायना सहन करवां हे. ते डः क्य ामतो सतो अनंतीवार

निस के ) मरण पाम्योड वासास के हाक अमुर E मीतल एवा हाइने प्राप्ते प्राप्त स्पाग करचा है ए सघला कष्टने तु खाने (राजेना कट सहन न कि रसो के । यत्रता किं) लीने मरण पण पाम्यो है ने अर्थ-रे जीव। नावाय-ल भ ग्वीमा झपडात वर्षतना निर्फरण 0 वेबस निर्ममन

**140-352.52.

作为表本本本本本本本本本

(तिरंचनवेसु के०) तिर्यंचना (जीव केर) हे जीव! तुं (डठठकम्म केर) इष्ट एवां जे खात कमे. एरले इष्ट नावार्थ—हे आत्मन् ! तुं तिधँचना जवोने विषे पए। अनंतां डःख जोगवी आठ्यो हे. ॥ 5 २॥ तलने आपनारां ज्ञानावराषीयादिक झाठ कमें ते रूप (पलयानिल के॰) प्रलय कालना (वसियों के०) निवास करी झान्यों हें. ॥ ए हा॥ (नीसणनवारहो के॰) नयानक एबी (हिंडतो के॰) चालतो सतो (नरएस् वि के॰) जयानक । (नांसणांम के०) अर्थ-(एवं के०). ए प्रकारे एटले पूर्वे कह्युं ते प्रकारे ( **ड**ठंडकम्मपलया।।नलपार**ञ** (जीवो केंं) या जीव जे ते ( (अणंतख्नो के जनंती (डाक्तसयसहस्सेहिं के ) (परिउक्०)

27 नेनातेज ह ख प्राप्त डे नहि. तेवो छपाय करच ॥ ए धा। पाम्योडे ॥६॥॥ (वसासि केंग) **S** वासयो अपातखुत्तो सत्तम् नरः

<u>م</u> नावार्थ-हे आत्मन्!तुं साते नरक एष्वीयोमां निवास करी आञ्यो हे. अने त्यां त्यां वेदना तथा शीत वेदना, आ नीचे लख्या प्रमाणे अनंतीवार सहन करी आव्यो हे. , हिमाचल प्रयाना स्थानमा **उ**ध्यावद्न माचलनी पृथ्वीने विषे राख्यो होय, अने बली त्यां अत्यंत वायराना ऊपाटा चालता होय ने तेथी जेम खत्यंत मुखयी निद्धा खावे एवीज रीते पोप महिनानी रात्रीने वि । आकाश यए सते, हदयादिकमां कंपाराना रोगवाला पुरुषने आवरण रहित श्रीतबेदना नरकने धगधगता खेरना अगारामा पिततो प्रकोप थयो हे, तेवा तेनी वचे राखीए, ने तेने जे किने विषे नारकीना जीवो ' पाय, तेथी पण अनंतगुषी इ बीबोने त्यांथी उपाडीने जो कदापि अहिंना , ते करतां पए। अनंतगुषी उप्एविदना, नरकने रीए, तो जेम शीतल चंदननो लेप करघो होय, हे तेवी रीतनी निडा ते नारकीना जीवने आवे छे. । सत जना समयमा ते बखत ते जीवने जेवी शीतवेदना देदित्यमान

10

110411 10411 त्रल्यो होय,तो जेम बायरा विनाना स्थानमा शियालाने बिषे निष्ठा आवे, तेम ते नारकीना निदा थांबी जाय हे 'माटे एवा ड म तु आनतीवार सहन करी आज्यों हे तेथी त्रास पामीने फरीथी त्या न जुतु पढे, एवा पर्मरुत्यमा साव गा । ॥ जजनादिक प्रिय वस्तना कि न संरक्षि केंग्) केम नथी सन्नारते 信日本の सर्सि ॥५६॥ विलायंत्र 000 एज कारण माट ( विजन । <u>अर्थ-रे जीव ! (निस्सारे के०) श्रक्तार एवा (</u> मनुष्य नवमा प्रा संवंद्या कें 100 원하( पिवमायस्यशार पमाय केंं ) पिता माता (डरतवाहि हिं के०)

₽ *****

थवाथी तथा अनेक प्रकारना श्रारीरना ज्याधिथी विलाप करी करीने मरण पाम्यो हतो, ते गतने तुं केम विसरी जाय हे ? मनुष्यनव आश्रीने अहं मंमत्व तथा मोहपणा सिहित। नींग्यपए। विषे एक सोमिल ब्राह्मएनी कथा टीकामां लखी हे. ते नीचे प्रमाणे जाएबी कथा. व

कौशांची नगरीमां सोमिल नामे ब्राह्मण जन्मथी दरिंदी एवो रहेती हतो. ने तेने ह्यी, पुत्र, पुत्री, इत्या-घणु कुटुंब हतुं. ते कुटुंबनी मेरलाथी एक दिवस धन कमाववाने अधे देशांतर गयो. त्यां तेषे ज्यापारा-

धुवर्षासिन्दि थवानो रस छे. एटले योगीए पूर्वे ताढ तडको भूख तृषादिक वेठीने अने घएा काल सूधी सुकां रुवा केदभूल फल इत्यादिकनुं जोजन करीने, एवी रीते महा मेहेनत करीने अने समदीना पांदडानो पिडेयो पत्रां आंग्रेमां तपावीने उपरा रं (गुप्त स्थानकमां) गया त्यां योगी बोल्यों के,आ रक्षकुंपिकामांथी लेहने घऐ काले घए। प्रयासधीते रस तुंबडीमां जरी राख्यो हतों.ते पेला ादक राहत एवा, पए दानजोगे सहित, एटले महोटा दानेचरी जेवो, एक योगी पुरुष दीठो. ते इच्यनी चिंताथी आकुल च्याकुल थएला बाह्मएने पून्युं के,तहारे शी चिंता है।त्यारे तेएों कहुं के, एज महारे चिंता हे. त्यारे योगी वोल्यों के, जो तुं महारुं कहुं करे, तो हुं तने महोटो धनाहय करुं. एटले त्रांबांनां ाडी ते बे जाए। पर्वतनी तहातायीम तत ते बाह्मणे कबूल करी. प

तेमां आ रसतुं एक ट्यंपु पून्युं होय तीं, ते सर्वे पत्रामां रस वेंधन्ड जाय. पटले

, आ सहस्रवंधा रस वे. ।

. मे कहा क

H. नवमा H यह जाप कथान 我们也会有不太不 医黑龙性氏病病性病性小 (人。 八 7.4 年代於一

在你我的身份才 वव्या कं 3 जीवी कि (4) ावानु मन नपी थत. अवसर 9 पव्या ब गराधार थ्यपं- हे

(पवण् व केण) पवननी पेठे (आलास्किन केण) खहश्रूप थयो सतो (जमइ केण) नमे हो. ॥ ए ॥ समूहने (समुश्रिक्ता के०) त्याग करीने (ग्यणमग्गे के०) आकाश मार्गने विषे

थ5ने छडे छे. तेम केटलाएक पुरुषो धनने अर्थे गृरीरनुं डःख पण न गणतां, कोइ विला-यत जाय छे. कोइ चीन जाय हे. कोइ लंकामां जाय हे. कोइ बहादेशमां जाय हे. इत्यादिक नावार्थ-जेम आकारा मार्गमां वायु फरे हे, तेम आ जीव पु पत नवाटवीमां श्रह-रयपणायी एटले आ पूर्वे महारो काण सगी हतो? तेवा अजाणपूणायी श्रनेक स्यानने विपे च्रमण करे हे. तेमां अनेक नवने विषे मलेलां पन तथा स्वजन इत्यादिकनो त्याग अनेक देशमा जाय हे. तेवामां त्यां अनेक प्रकारनां निमिन मत्तवाथी मरण पामे हे. एवी हरवाने तथा धन मेलववाने अधे देशोंदेश नमें हे. अर्थात् वायुवडे पांनडुं जेम पराधीन ति आ जीव नजरे देखे है, तो पए कर्म छपर विश्वास राखीने संतीष राखी धर्मसाधन रुमि एटले तेमनी शी गति हशे ? एवी चिंता मूकीने वर्तमानकाझनां स्वजनादिकने,"सुखं हरतो नथी. ॥ एउ॥ **ルスタングングング** ज्सता एवा वाते के 0) आत्मन के ॥एए॥ (तहवि के ०) 50 यमम 탇 प्यटन मदमसा कुर) (ससरत के०) (as Hu वाना । भ असर्वे । जम्मजरामर (जम्मजरामरण के) ससारने असय केंग्र) बारवार क्यावि (P) ससारचारगाड H अर्थ-(सप्तार केंग) तहवि र इहम : 5 क्रिस भानाय

सुद्रम नावार्थ-जेम कोइ नाली मारे, ने तेनी वेदना थती होय, तेवामां वजी बीजो नालों गरे एवी सीते जपरा जपरि वागवाथी जेवुं डाख जोगवे, तेवी सीते ज्या संसारी जीव पण प्रज्ञानरूप सर्पे मरोला एवा मूह जीव, संसाररूप वंधिखानाथी कोड़ बखत पण कृणमात्र मनुं एवा. अर्थात् मूर्षे एवा, अने (अन्नाण्नुगंगन्निया के॰) अज्ञानरूप सर्पे मत्या एवा उपरा उपरि मोगवे हे.॥ एए॥ तोयपण (संसारचारणाडे (नय जिन्नोत के०) पामता. एटले वैराग्य नथी पामता! आते केटलं बधं आश्वरी? ॥ एथा। केंग) जीय जे ते (क्यावि केंग) कोड़ वाबत पए। (ह केंग) निस् वियमाह ॥ ए० ॥ (खणंपि कें) कणमात्र पण ठहेग पामता नथी. आ केटलुं बच्ने आश्वर्य हे !!! ॥ एए॥ जन्म जरा मरण इत्यादिकना घणा नयानक इंख कालरहरूषडाह ससारह्म वायेखानायी

तेम तेम ते पाणी : भिरो हे, ने तेमाथी काइ जायत रहेंट वडे वाज्यमाथी जैम जैम पाणी कादीए, जीव¹ हें पण जेटल़ आयुज्य वापीने जन्म ती⁹ (सरीरवावीड् के॰ )शरीररूप वारुपने । ह्याइक )शांप पामेरे १ \$c) 뭬 ) क्रिया करीश ? ( जीवितरूप जलमो प्रव समय समय ग्रत्ये ( । तम् नावादः सूची (

ह जेटसु खायुष्य वाषीने जन्म सीथों हे, ने तेमाथा ज हार्य पत जाय हे कहेयत है के,माबाथ जाये के, महारो दिवसे दिवसे खादाख घटवाषी नहानो थतो जाय हे ए भ छत्त छावता वार नहि लागे केमके,समये सम्पे घट क नांजक थ्यायतु जाय सो मन्ता आठखाना छात द्यापता वार नहि लागे होड़ने गूली देवा लेड जाय ठे अने ते गूली र ! सन्मुख फाला नरे ठे, तेम तेम प्रत्य नां गमत काइपए , षाठषाना अत माणत नेम जेम शूली सन्मुख पगला ठे श्रने ते वलत तेने सानपानाहिक तेम हे चेतन पतु जाय हे तैम है जीव जे समय जाय हे, तेट्छ । महोटो पाय र ते माटे \$0) भूत 20

*************

तम्सुख आवे जाय हे. एटले जो किंद तहारुं आयुष्य सो वर्षनुं होय, आने तेमांथी जे जे तेटलं आयुष्य सो वर्षमांथी नुं थयुं जाणावुं. अर्थात् आं अत्प आयुष्य जपा-पश्चानाप अर्थ-(रे जीव के०) हे जीव! तुं (बुझ के०) धर्मने विषे बोध पाम्य. पता (मामुझ के०) षुरु थशे. अने मनना मनसुबा मनमां रही जशे. अने पांडलथी घणोज माटे प्रमाद् बोदीने परलोकनुं साथन करवामां सावधानथा. ॥ए०॥ || || || शाहास अयाण एज वातने मूल ग्रंथकार पए। जए।वे के के, रेजीव बुन्न मामु। त्र मा पमायं करोसि परलाए गुरुडा कनायण

प्रमाद्न हे खजाए। एटले हे मूढ । प्रमाद करीने (पमायं के मोह न पाम्य, जे कारण माटे (रेपाव के० ) हे पाप जीव! ( हरोस केण) न करीश. (अयाण केण)

(कि के) केम

(गुरुड्सत्तायणं कें) महोटा डःखने रहेवाना नाजनरूप

जीव के ) हे जीव ! (पुखरवि के ह) मरीने पण (एसा के ह) मा (सामजी के ह) धर्म सा-न्नावार्थ-हे थात्मन् र तु अहष्टनावश्यी छर्नेनएवा सनुष्यन ग्ने पामीने तेमावलि जैनधर्म , प्ताने धमनिविषे प्रमाद न करव. तेमठता जो प्रमाद करीश, तो महा ड खने पामीश ॥ए१॥ वास्त अर्थ-(रे जीव के॰ ) हे जीव (तुम के॰ ) तु (युरुतु के॰) धमंत्रे निपं बोघ पा धने (नाऊण के॰) धमेंने जाणीने (जिल्यमधाने के॰) जिनदासनने विपे (मामुश्राति रे गेह न पान्य एटले सम्पक् प्रकारे जिनदर्म धार्मिकार करण (जनहा के॰ ) जे हेतु म इस्रहा जीव ॥एग्।। बुन्नसुरेजीव तुम । मामुत्रसि जिएमेयमि जम्हा पुणरावि एसा। सामग्गी माहिस के) याप ने ! ॥ ए१ ॥

नावार्थ-हे झात्मन्। पुर्म साधन कर्वाना थगरूप एटले मनुष्वनो नव, गुष्ट अ हो,

ने ते(डझहा के₀)डबने टे एटले फ्री फ्रीने यमै सामग्री मता महा इझेन ठे ॥एश।

310 अने तेने विषे वीषेनुं फोरवबुं, ते फरी फरीने चक्रवेयनी पेते, मलबुं महा इलीन हे. नरकन (वृत्त केंग) कवण वे. माटे (तं केंग) 0 ड्स के एटल प्रमाद जिनयमें जेते, ( मलव भाष्यंत (च केंग) ग्राने ( (तमं के०)तुं( होहिसि के) डःखे करीने पण सहन महा ड्यंन हे. यमे सुख तन क्यायां मत्त्रों ? जिलायम्मो के 200 (डलहों के ) इसहं च अर्थ-हे जीव।

नावार्थ-श्री आवश्यक निर्धेकिमा कह्यु हे के, यालसथी साधु पासे जड़ने धर्म सा-

रवायी इत्यादिक खनेक कारणोथी पामेडु एनु पण मनुष्यपणु एने गमावे हे प्टले नव । कुब्यसन सेववापी तया क्रपणपण्यायी पटझे को छपान्ने जहुञ्च, तो कोइ धर्ममार्गनी टीपमा बोकलाजयी काइ आपन्नु पढ्ने तया नयपी एटले जो छपान्ने जहुजु, तो नरकादिकना ड ख साजतवा पढरो तथा ग्रोकयी तथा छज्ञानथी एटले जाइनथ दोस्तदारना ना कहेवा-भी तथा च्यालेपथी एटजे जाएरि जोड़ने घणी जजाल कनो करवाथी तथा कुतूहातथी नती शकतो नथी तथा मोहयकी धरनी जजालने विषे मृद्ध थड़ने रह्यों हे अर्थात् साधु । गासे जड़ निस्प मु सानन्यु हे? यथीवार सानलेत् हे एम धारीने धर्म सानलवानी ख करे हे तथा जात्यादिकना झिनिमानयी तथा क्रोषपी तथा प्रमादशी एटले मद्या रटले गीत नाटकादिकना बदमा घडवापी तथा रमण्यी एटले जनावरनी साथे र

सुखनी याता करें ठे पण हे जीव! तु सामान्य ड ख पए सहन करो शकतो नथी, मुखने आपनार एवा जिनधमेंने करतो नथी समुज्यी तारनार अने सकल १

त्यारे नरकना छत्तह ड ख तहाराथी केम सहन थरो?

सहायकारी एवा धर्म महाटा लाज (समजेषा के॰) । जपाजीन यह शके हे, तो (ता के॰) तहारे । साहीयों के ) पोताने स्वार्ध (जड़ के॰) जो (आधरेण के॰) आस्यर एवा, तथा (देहेण के०) परवंश एवा ( ) एम गुरु महाराज उपदेश करे हे. ॥ए३॥ । अर्थात् सर्वे प्राप्त देहेण जरु विहण्पर। पाजन याय हे, तो झंन परिपूर्ण (विदुष्ट के ०) नावार्थ-हे जीव एवा. अने ग्रयं-रे जीव!

5/5

सादे, अमूल्य एम विनामिण रहाने कोषा न महुष करें ' तथा भूल आपीने मोनु कोष न महुष् करें तथा पाणीनो विड आपीने अमुतना समुद्देने कोषा न महुष करें ! तथा पोताने रहेवान् क्रुपष्ट आपीने वक्रमिसु सच्च कोषा न महुष् करें ! आपीत तत्या नुंग करेटाा चितामणी रत्न समान जैनयमीने कोण न यहुण करे ? अर्थात जे महा रिक्णे तान न मत्यो महै गाय ? अर्थात् जगत्मा बेटजा लान महेवाय ठे, ते सर्पे लाभ मंज्ञी सुम्यत्न नहेगाय तेमज रोगादिक्ते छाषीन एवा देहादे जो स्यापीन एवो जिनधर्म तेचार करनार (मुचिमान्) पुरुष चे ते, काचना करुढा तस्यमा रिगारमार तो तरतज्ञ यहुण करे। तेगीज रीते या मलम्प्राहिके करीने परपूर एग मले,तो गु एने फाइपण मज्ञानी खामी रही कहेबाय ? अर्थात् नज कहेवाय ते कह्यु ठे के, कसन्म तस गुद्रीयाचन्त्रातन्त्री नारम् ॥२॥ गुम्पप् रसुमा चेदिएर नेत्युशान्ध्यनीरोन्डमा ॥५॥ ५८मा वाद्दे माझारवे दहेन सुक्रा परि ॥ मिनारस्नमनध्यं ग्रेत्यास्यमं क्षामार्थ श्व तेज न यहण करे ॥१॥१॥ गर्य-तरा यने अतत्वनो।

एवी रीते विचारीने या महामिलिन एवा श्रीर उपरथी मोह उतारीने, जेम बने तेम II Radil यहणा करच. गुष्ठ एवा धर्मने

5/ 5/

होइ त्निविह्याएं

रत्न जे ते (मुलह के॰) मुलन पर्वु (न हु होड़ के॰) नज होय |वाद्धियाणं के॰) गुण रूप वैत्रवे करीने राहित एवा (जियाण के॰)

चिंतामणि रत्न ने ते (मुलहं के॰) सुलन एवुं

(धम्मर्घणांपि कें) धर्मरत्न जे ते प्णा, सुलन न होय. ॥एए॥

नावाय-तुज्ञ विनववाला जावान

(तुज्ञविहवाएं के०) तुज्ञ विनव वालाने (जह के०) जेम (

ययंन्हे जीव।

(तह के०)

ायतामाण रत्न सुखं पामवा जोग्य नहोय, अर्थान् पुष्यहीन जीवो, जेम चितामाणि पामी शृके नही, तेम सम्यक्तािंद गाणकण िर्वे

(जिताम-

जे जपदेव कुमारमी येवे यह्या पुष्परूप गुणीए करीने नरेला गतिने विषे वितामिए रत्नसमान सन्दर्भ प्रत्ये पामे ठे ॥ए५॥ इहा पर्यपाल खने जयदेवतु रुतात झा नीचे प्रमाणे कथा प गमंत्रप रखने पामी शहे नही होय, नेज प्राधियो, था मनुष्प

परतु *ग्यांहि में* 1 व्या गितापणी पतम, सचुद्धतीर एनम स्थानकामे निष वे नितामसीने तोहातो सतो पछा कास जम्मो रत्न पाम्पो नरी पत्री छराम मनगाङो घड्डो पीताम पनमा शियार करमा ह्यागो क, घी रत्न सानु छै । के, शुद्र छै थि बोदे मयाहै पछ देशकामा छारत नशी।। जनग करणा

दव त पशुपालना पास माग्या त्यारे पशुपाल कर्षु तमारे आ पथरानुं भुं काम ने ! जयदेत्रे कर्धुं. हु महारे घेर जहने बोकरांजन रमवा आपीश. पर्जा पशुपाल कर्धुं. इहां आवा घला पथरा पड्या ने ते तमें पोतेज गोल आकारवालो पथरो देखीने ते पयराने बाखमां कहेला लक्ष्णोंये करीने चितामणी जाणीने, ते जय-गा वचनथी त्यां जहने चिताम्ऐ। खोलगा लाग्यो. ते अवसरे त्यां एक मंद्र्यितवाला प्रापालना हाथमा नड! इहां एक मलीनी खाए हे. तेन विषे जे पुण्यतत पाएती होय, ते चितामली पामे. पडी जयदेव ज्ञापणु फेरफार न होय. माटे क्यांहि पण हशे. एयो निश्रय करीने फरीने पण घणी मणिनी साणो ो सतो ते रत्ननी घणी खोल करवा लाग्यो. त्यार पनी एक दहाडो कोइक छन्द पुरुपे तेने कर्लों के,

o जि

300

केम लेता नथी ! जपदेव बोल्पो. हमएां महारे घर जवानी जतावल छे. मारे एज मने आप्य. हु इहाथी

पे. ए प्रकारे सांजलीने ते पशुपाल पोतानी बोकांडयोना समूहने लेटने गापना सम्मुख गयों. त्यार पठों ज-बीजो पामीश. एवी रीते कर्द्यं, तोपए। ते पशुपाले परने जपकार करवाना स्वन्नांव राहितपऐ। कराने तेने न आप्यो पठी जयदेवे छपकार बुद्धिये करीने तेने कर्षुं. हे जछ ! जो तुं मने नथी आपतो, तो तुं पोतेज ए ग़ीथी पखालीने ग्रुष्ट भूमिये छंचे खानके खापन करीने चंदन, बरास, फूलादिक वंडे पूजीने अने बली जे पोताने इष्ट होय, ते चिंत्वन करीए. ते सबै पए। मातःकात्नमां पामी जगारेक हर्ताने जयदेने कर्षु छाहों। एम न विचारीये. त्रए छपवास करीने संध्या समये ए मिएने गुन्ह पा चितामणी रत्नमुं आराधन करच. जेथी आ चितामणी तने पण बांगित फल आपे. त्यारे पशुपाले मञ्ज नो आ चिंतामणी साचे ठे, तो महार्ह चिंत्वन करेलुं बहु, बोरडांना फलानुं चूरणादिक शीघ आपो नमस्कार करीने पनी प्रामाल

गेन नियव करतो के, गुण ग्रहित पता साना दायमा था तिनामणी रच नहा रह पूम रिपारीने ज यद्य गण नार् एवे नान्यों हो यद्यपात्र मांनी लिंगे याजा गता कहेग ताम्या के, ए मणी हमणा जा गर एक शायन देट्ट क्यमें तथा रपार हाथना देत माँग गोलतो नथी के जामा ते पूर्व, रोप चरारीन ने मोछा रहेता एमी छोरी जो तु हुतारों पण आपनी नथी, नो मिनन सर्थ निष्पन्न प्रवास रिपे ना-ट्रारी भी सामा। सवमा ननार नाम निमाणी प् साउँ है जुड़ नथी केम कै,नहे पारमी राग्धी मोदी-ने मरारा मनमी निका नकी 11 बड़ी ले दुराब जम बाब विना फ़्ए मात्र पछ रही न ग्रह, न ह तिशास मह नरा मोखा प्रात्र पण जपाति करीन जाण पणु व षाट हु एव मानु हु के, ज्या ना जिसे सन मानसने माने बराक नार्शन करा जाणाव डी व माट तु त्यां जा क, ज्या मराने मनेरे देससी पामीने सरकाल नमस्यार क मतो पोताना नगरन समुत गान्यो पृष्ठ नगरमे निर्मे एक राथमु देहर यमे तमा प छाप करारी जनी ए मधी देनी गाम पख उट जे माटे भागमा कोंडफ कथा श्रान नहारी पूजा गरीन गरारे पण ! नि । ।तामणी ग्रहण करीने, भगण थयो डे मनारथ ते उ ए महार यारतार मोणनी न्यागत हसू, मो पण है म न कर एम रहीने गए ने माएने उने नानी दीपा ग्रेप्तारेया रानि यसस इत्पादिक लावीने मनो ट्रोप मो ह तत गर .. మాజుకాలకామాడ్లాని కే ద్వానికుడ్డాని మేమ

खातीम पाताना माता पिताने

िए मित्रम प्रजातथी जन पर्ण द्व्य माप्त थयु है एते त हमार मुग्रोद्ध गहनी र

महित हरिननापुर नगरे आच्या

लग्ती नामें युत्री तन '

अन तमी मधामा कर्ता

lhalb

नथी, तेम मिध्यात्वरूप कुवासनाये करीने विवेकरूप चक्षेये रहित पएता जीवोने पण, जि-लुमयसंजोगो के )जिनमतनो संयोग जे ते. एटले जिनमतनी प्राप्ति(न होइके )न होय.॥ए६॥ नावार्थ-जेम जन्माराथी छांच यएला पुरुयोने, स्युल पदार्थ पण देखवामां यावतो अर्थ-(जह के०) जेम (जर्बथयाण के०) जन्माराष्ट्रीज अंध एवा (जीवाणं के०) जीव लाग्यां. अने कुर्दमी लोको तेनु सन्मान करना लाग्यां. अने भीजा लोको पए। तेनी स्तरना करना लाग्या. रोते जावज्ञीय स्थी सुवी ययो. ए यकारे धर्मेक्ष रत्ननी मासिने चिषे पशुषाल अने जयदेननो अपनय कर्षा. जे तेमने (विज्ञासंजामों केंं) दाधनों संयोग जे ते. एटले आंखें करीने देखवुं (न होड़ केंंं) नशासनरूप सर्थे दीवामां आवतो नथी. एटले जिनशासननी प्राप्ति थती नथी. ॥एष॥ न होय. (तह केंं) तेम (भिन्नंधजीयाणं केंं) मिध्याले करीने आंधला एवा जीवीने । तह जिएमयसंजोगो। न होड़ मिहंयजीवाएँ ॥ए६॥ । न होइ जबंधयाए जीवाएं ॥ जह दिवीसंजीगो।

> ~ D

帝()野 NE STATE <u>ज</u>न्त संद एवे प्रत्यक्त प्रमाण पज्ञस्कम ऽणत्नगण तहावि

मुख थाप स्वर्ग तथा मोहना P विषे यश, झने परलोकने । क्यारे पटा 品 एटले नथी वम नावाय-आ

नेवान-विषे काइपण

430.00

402

प्यडा दोसंति न विय गुणलेसो ॥ नार एवा श्री जिनधर्मने अंगीकार नथी करता. ॥एउ॥

तहिष्य तं चेव जिया। ही मोहंधा निसेवंति ॥ एए॥

अर्थ-(मिन्ने के.) मिध्यात्वने विषे (पयडा के.) प्रकट एवा (अर्णतदोसा के.) आ-नंत दोप जे ते (दीसांति के.) देखाय हे. (य के.) वली. तेमां (गुणलेसोवि के.) गुणनो लेश मात्र पण (न के.) नयी (तहविय के.) तोयपण (मोह्धा के.) मोहे करीने आंथला एवा (जिया के.) जीव जे ते (तं चेव के.) ते मिध्यात्वनेज (निसेवांति के.) सेवे छे. ते (ही के.) नावार्थ-कुगुरु कुदेव अने कुथर्म तेमनो अंगीकार करवारूप अध्यवसायने विपे एटले

ास दखातो नथी. तोयपूषा मोहे करीने अंध थएला जीवो, ते मिश्यात्वनोज आश्य करें हे.

विषे नरकपातादिक आनंत दोप प्रकट देखाय हे, पण तेमां गुणनोतो जवजेश

घ्षांन झाश्रयं है!!!॥एठ॥

```
एटले ते मिथ्यारानेस झगीकार करे हे, परतु जिनधर्मने आगीकार नथी करता, ते घणुज
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                           , ओदार्घ तथा शांध धे-
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 खामा पणा माह्या
                                                                                                                                                                                                                                                                                   विकास ०)
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                   हरात्तपण्ण पणुज वस्बलाय
                                                                                                                                                                                                                                जनाति व
                                                                                                                                                         सहसञ्चयम्मरयण
                                         11 11 11 11 11 11 11 11 11
```

नेष्ठ एवी जे धर्मनी कता नयी जाएी, तो ते निश्चे झुपांतितज जाएवा. माटे सर्व परीका न्ह्युंडे के, बहोतेर कलामां कुशल एवा पंपित पुरुषो होय, तोपण जो तेमणे सर्व कलामां म्हेवाय हे, ते पुरुषो सुखकारी अने सत्य एवा धर्मरूप रत्नेनी परीहा, जो न करी शक्या तो तेमना सवला महापषापाताने अतिशे थिकार थाने!!धिकार थाने!!! ते जपर शास्त्रमां ज्सतां धर्मरूप सत्तनी परीद्या करवी, तेज श्रेष्ठ परीक्रा हे. ॥ एए॥

\$ 0 S

। अप्पना कप्पपायना ॥ ॥ अनुदूष् रतम्. ॥ जिएधम्मो ऽयं जीवाएं।

अर्थ-(अयं के०) आ (जिलायम्मो के०) जिनयमें जे ते (जीवाएं के) जीवोने (अ-। फलाएं दायगो इमो ॥१०ण॥ सग्गापवग्गमस्काण

ए जिनयमहत्प करपर्वक् जे ते(सम्गापवमामुख्नाएं के॰)स्वर्ग एटाते देवलोक छाते खपव-स्वो केण) अपूर्व एटले अप्रसिद्ध एवो (कप्पपायवो केण) कत्पवृक्त हे. केमके, (इमो केण)

एटले मोक्त तेना सुसरूप (फ्लाए के॰) फडने (दाझ्गो के॰) आपनारो ठे ॥१००॥ नावार्य-आ जिनयमेरूप करपवृक्ष श्रपृषे ठे एटले प्रसिष्ट करपवृक्ष तो, फक्त था ते (पशु के॰) यधु ( नाई ) समान डे (य के॰) यही (धम्मो के॰) धर्म जे ते एवं जाए। परत् आ धर्मरूप र देक फजने तथा मोक् फलने आपनार हे माटे खपूरी कत्पाृष्ट् कह्यो धम्मो परमसद्णा द्यर्थ-रे जीव! (यन्मो के॰) था जिनयर्म जे ते ( ७) यद्वी (सुमिनो के॰) सारा मित्र समान छे (य ग्रसम्मे बधु सुमित्तो य। धन्मी य मुखनेज आपनार हे मुक्तमम्गपयज्ञाण ज झाश्रय करवो ॥१००॥ लांकने ग

(परमसद्यो कें) जन्हार १४ समान हे ॥१०१॥

धम्मो केः) धर्म जे ते (मस्ममगाप्यडाए

प्रमागुर केंग्) उत्ह्या गुरु समान हे बली ते(

(य केंं) बत्ती (

श्व तथा गुरु जेम ग्रसत्मार्गयी पाठी वाले हे, तेम नावार्थ-जेम आपर् कालने विषे नाई सहायता करे हे, तेम संसारह्ण आपर्का-हेतकारी अर्थने मेलवी आषवाथी सुख करे हे, तेम आ धर्मरूप मित्र पण मनोवांहित मित्र व सुखे सुखे जवाय ठे,तेम धर्मरूप रथे करीने जवायी पाठो वाले हे. माटे उत्कथा 1150211 थमीने परम रथ समान कह्यो हे. एवुं जाणी ठे, माटे जाई समान हे. तथा सारो मयकभसम चुन्ग्रण्त इहान्त्। पालंत नवकाण्। मेलवी आपवाथी सुमित्र समान हे. नमां, या जिनधमी पण सहायता करे मार्गमां सुखे सुखे जइ शकाय हे.माटे तमान हे.तथा रथे करीने जेम मार्गमां करवा. ॥१०१॥ जिनधर्म पण, नरक तिथैच

RD

कुनमा मग्न पा खपौत् रहा खनुषानने ग्रह्ण कर्ष जेथी तने यपूर्व सुलगाति परें।॥१०१॥ सारी पेंछे तं-एवु (चडमङ्गातङहानल कै॰) च्यार गतिमा रहे-(पहितननकाषणे के॰) लागतु एवु जे धुमतन विषे (रेजीव के०) हे जीव! (तुम के०) तु (द्यमिषकुमसम के०)अभु झर्थं-(जीव केº) हे जीव ! (विसमे के॰) विषम एटले चालनारने ड खकारी एवा जिनराजना बचनने (सेब्सु के॰) सेयन कर्ष्य एवो से तु, ते जिनगचनरूप सवसृहद् ॥१ण्ड्॥ (স্যত্তনভ্রয়িদিইনাবसतते के॰) অনता ছ सरूप श्रीष्मकृतुना तापवढे । महित **थ्रगीकार कर्घ**ा।१०१॥ अणतंडहागम्हतावसतते सरस् तुम जीव नावार्थ-भा सत्ताररूप न्नयकर दावानलपी दांगेलो । ला एवा ख्रनता ड सक्ष्य महोटा आग्निये करीने ( अर्थ-(महानीमे केण) महा नयकर। तना कुरु समान (जिणवयण के॰) रि स्टातमा महेला श्रन्धानने विधि १ जिएधम्मकप्परुक्त । विसमे नवमहदेसे ससारहप वन, तेने i

0 सं 8 सिवसहरं केंं) मोक स्विने जनधमेरूप कल्पवृक्त, तेज आश्रय जीव जे ते संसारनां अनेक डःखरूप मारवाड देशनी तपेली रेती, IIRa 21 घणुं कहेवे करीने ग्रं! तेपकारे सांठ थाय. ॥१०३॥ न्द्र होन कल्पवृद्धनुं स्मर्ध कस्य. सासय ोता एवा (नवमरुदेसे के॰) संसाररूप मारवाड देशने विषे (जह के०) जनधमहप महोटा नाग्ये प्राप्त थयेतो। त्र श कंग) यत करवा. नहाणा क जिए।यम्मकप्पर्स्क केण lieo ? l जड्यव रवा योग्य हे.)

व

आ श्रम

ā

10 C

महन के॰) न्रयानक एग (नवोदाँहें के॰) ससारहप समुद्धने (सहु के॰) ग्रीघपणे (तारेय के॰) तरीने (त्रपतसह के॰) खनतु हे सुख ने जेने विपे एतु (सासय गण के॰) ग्राथ्यतु स्थान नेम ताव होव नावार्थ-हे नज्य जीवो ! आखा यथनो सारमा सार एटलोज कहेवानो हे के, जि त्या प्रथता ५८ मा तथा ६० मा पानानी पुठिमा जलाव्यु ठे के, सागरोपम नु तथा पुजलपरावर्तनु स्वरूप यथने अते जणावीयु, ते इहा जणावीष् शिष् प्रयत्न करो के, जेपी तमने मोहत्त्र शाम्यतु सुख प्राप्त ' नभी तेम हता जी तेना स्वरूपने जाणवानी मरजी अति स्ट्मकालने एक समय कहे है तैवा असस्याता समये एक आवली पाय हिनार बेग़ेंने सील खावनीये, एक ! भी आचारागजी सूत्रमा पाचमा लोकसार नामा छाध्ययनमा जोइ लेज्यो तरीने (उरपतसृह के॰) अनतु वे सुख ते जेने एटले मोक्न तेने (सहड़ के॰) पामे ॥१०॥॥ (१६८४०११६) एक्फोड सडसवलाख शिनो हैं नधमीने विषे प्रमाद रहितपक्षे प्रयक्त हैं ते सुखत गर्वन थड़ शके तेम नथी ते ती, भी झालास्त्र

एक अञ्चा सागरीपम थाय, ॥इति सागरीपम प्रमाणम्.॥

पम. तेमां वत्ती एकेकना बादर अने मुक्ष्म एवा वे वे जेद छे. तेमांना अन्दा पल्योपमनुं,स्वरूप जायावीए छीए, केम के, आ बादर अन्दा पल्योपमे करीनेज जीवोनां आछातां, कायिश्यिति, कर्मीस्थाति, पुरत्तिस्थिति आदिकनुं प्रमाण गणाय छे माटे. ते अन्दा पल्योपमना पण मूक्ष्म अने बादर एवा वे जेद छे. तेमां प्रथम कालचक्र थाय. एवा अनंता कालचेक्रे एक पुजलपरावने थाय.॥इतिपुजलपरावनेत्रमाएाम्.॥ 'इह्हां पल्योपम झए। प्रकारना छे. ते कहे छे. १ छन्दार पल्योपम. १ अन्दा पल्योपम. ३ दोत्र पल्यो-कोडाकोडि सागरोपमे, आवसिष्णी याय. ए वे मलीने वीश कोडाकोडि सागरोपमे, एक एज रीते एटले पूर्वे कह्या तेवा दश कोडाकोडि सागरीपमे, जत्सिपिषी अने वीजा दश

देवकुर उत्तरकुर क्षेत्रमां जन्मेलां अगलियाना बाल ते एवा के, जे अगलने जन्मे एक बे यावत् सात

नाद्र अन्दा पन्योपमनु स्नक्ष कहीष् ठीष.

<u></u> पून गया एवा सुगतियाना एकेका बालाग्रना, असरयाता सुन कत्यवा हे बालाग्रना बने करी धूर्ने क-मा फाएं, ते फूट टांबी टांबाने सारि वही कारवी यूकेरी पेटे एकेडी पासनो फन्मों साथ वर्ष कादी-ए पटी डपारे हे कुदी काम सादी याय, त्यारे एक सुन्य व्यक्त प्रत्याप्त याय हेना व्यसरयाता कोबा कीडि वर्ष याप वेदा दश कोहतकोहे सागरीयों एक खब्दा सामरोख्य काछ मनी नेन्यन मामरोग्यन म रात्ताप्र हाती घडे नहीं तथा खारिये बती शके नहीं, तथा पालीए करी जीजाय नहीं। परते तेती ब्यहर पाली डाती कके नहीं, तथा पायरे करी वे बाजाप्र डाडी कांके नहीं एवा ठांशी ठांधीने तारना होये, पत्री एक असा शहर पत्यागम थाप नेनो सरपातो काडाकाहि वप बाप आ रहात कथान मात्र हे के क, आ यताए गएतीमां आगतु नथी गएतीयों ता सूच्य अन्ता पत्योपम छावे हे तेतु स्परप निचे कहीए डाप हरो थश् शहे नहीं तेना बालावने च्यार बाछनों लोतो, च्यार बाछनो पहालो अने च्यार बाछना छन्हो एटले तेनी अक्र त मानामनो एन को कतडो हो मी में को काडीए है काडता काढता ज्यार है कूया तमाम खाजी याय, त्यारे दिवस एमा होष, तेमा जुगोट्यमाना केग्न (गाट) जेहने तेना एमा कड़डा करवा के, से ककडानो पीजो क एग कूनामा ने बालाग्रने एवा टांशीटोशीने ज्रारिये के, तेना छपर थड़ने नकर्नातिनु सीन्य चाले, तो पण ने षाचवा कर्ष ग्रयमा निस्तार शी अनुयोगचार मृत तथा आ बार्चानो विशेष जोइ लेब माए या नम्माप् भाषातु त्यायी विस्तारमा आर्थिय 医妆装式 宗水苏木原水华市省 法心就让外去就会就要放气器 三沙公公孙子爷协会不够解

4 3,27

प्रबन्यिननामागा,यमिन्ड। श्रीहारिनज्यष्टकसंबष्द्राः ॥

802

र्व

6 ॥ इति थी जैनीय यथ्यापक, शास्त्री रामचंद्र दीनानाय विस्थित 9 थी वैसम्यज्ञतक्नो हंघानाम मन्द नापान्तरेषाानियुता यतः स्युः । सौर्यं प्रनाबो मिष् संबह्देः ॥ १ ॥ वियाभ्यासवतां तुष्टो । कत्रा गोपाल श्रेष्ठिना ॥ १॥ मनम्यात्रिमतो यावान् । श्रस्यायां लिखितो निशि ॥ ॥ अनुष्त रुनम् ॥

5

## ॥ श्री जैन बोल विचार.॥ बोल र जो

र आरमा॥ र समय॥ (जेबामा जेबों काल )॥ र प्रदेश॥ (जेनो विनाग नपी थतो)

कोड़ पण फ़ेली बस्तु नथी,) १ सिक्सिला ॥ १ झुसयम ॥

र राग, ने श्र देप ॥ १ सापेन्द्र, ने श्र निरपेन्द्र ॥ १ सिषे, ने श्र ज्यवहार ॥ १सि-ज्ना जीय, ने श्र सतारी जीव ॥ १ पर्यांता, ने श्र छापयांता ॥ १ यत्येक्ष ने अ न्याम्यण

र ख्रवसांपैणी ॥ १ सङ्गी, ने २

वाबर ॥ १ जस्मिष्पिता.

वादर ॥ १ जस ने भ

पय ॥ १ लोक, ने १ १

गय, मे

ग्रतांक ॥ १ ड्ब्य, ने १ नाय ॥ १ डरसमें ने १ ड्य-ग्वाद ॥ १ जीवराधि, ने १ द्यजीरताषि ॥ १ खेतानर, ने १ दिगवर ॥ १ सूक्ष्म, ने २

बोल १० जो

(जनायो ।

, मतिअज्ञान, १शुत अज्ञान, ने रिविनंग ज्ञान ॥ त्रण प्रकारना आहार. रिवेज आहार, , समिकत हाध, १ मिथ्या हाध, ने त्रण गुप्ति. १ मन गुप्ति, १ वचन गुप्ति, ने १ काय गुप्ति॥ १ त्रण इंन. १ मन इंन, श बचन दंम, ने र काय दंम ॥ जाए तत्व. १ देव तत्व, १ गुरु तत्व, ने र धर्म तत्व ॥ त्रए शृत्य. १ माया शृत्य, १ नियाए शृत्य, ने १ मिथ्याद्दीन शृत्य। त्रण लिंग. १ स्त्री तृ उपादेय ॥ त्रण दंत. (शिक्ता.) १ हकार, १ मकार, ने १ थिकार ॥ त्रण अज्ञान, संज्ञी॥ १ बाह्य तप, ने १ आभ्यंतर तप॥ १ सामान्य,ने १ विशेष॥ १ कृष्णपद्ती जीव, ने र गुक्रपक्ती जीव ॥ १ शास्त्रत, ने खाशस्त्रत ॥ १ खारंन, ने परिमह ॥ १ अथेदंम, ने श आनर्थहंन ॥ १ कालिक सूत्र, ने श छत्कालिक सूत्र ॥ १ सरागी संयम, ने श वीतरा ! जत्पाद, १ व्यय, ने १ धुव ॥ त्राण वस्तु. १ हेय, १ हेय, गी संयम ॥ १ वदास्य, ने २ केवली ॥ १ परित संसारी, ने २ अनंत संसारी ॥ १ लनबोधि जीव, ने २ डलनबोधि जीव ॥ १ देश विरति धर्म, ने २ सर्व विरति धर्म । लिंग, २ पुरुष लिंग, ने ३ नपुंसक लिंग ॥ त्रण दृष्टि. १ १ मित्र दृष्टि ॥ त्रिपदी. १ जत्पाद १ व्यय ने न मन ॥

00

है। र बहुबब्न ॥ प्रण बर्शन १ समकित बर्शन, शिमच्या बर्शन, ने शिश्र बर्शन ॥ प्रण मनोरप १ क्यारे हु आरन परिग्रहने ठाडीश् १ क्यारे हु खणगार पड़ांगे छाने ह क्यारे हु छातोवी निर्दी परित मरोग्र ॥ ज्ञाय लोग १ कार्च बोक, श छापो लोक, ने ह निर्द्योको ॥ त्रण प्रकारना जड १ क्जुजड, १ बरुजड, ने श्रक्तांश्च ॥ ज्ञण लोक १ र होम आहार, ने २ कवल खाहार ॥ जण प्रकारना आरमा १ खातरारमा, १ वहीरारमा, १ न १ मातागारव ॥ जण विरा-ते ने २ परमारमा ॥ जण गारव १ कृषिगार ३, २ रसगारव, ने २ शातागारव ॥ जण विरा-प्रमा १ झान विरापना, १ दर्शन विरापना, ने १ चारिज विरापना।। जण प्रकारना जी व १ नन्य, १ छानन्य, ने १ नोतन्य नोजनन्य ॥ जण वचन १ एकावन, १ हि रचन, ने ने ३ उत्हट ॥ समस्ति पुरुषना त्रण तिग १ सिक्तत सानलवानी द्यतिरो खिनलाप, १ निकटनव्य, १ मध्यनव्य, ने ३ झनेव्य ॥ त्राण प्रकारना बीर १ नवानिनवी, १ पु जनानदी, ने रे आत्मानदी ॥ अप विकलीं रि वेइन्डि, य तेइन्डि, ने रे चेंति हि ॥ अप प्रकारना वैराग्य १ ड ख गर्नित, थ मोह गर्नित, ने २ ज्ञान गर्नित ॥ १ जयन्य, १ मध्यम, १ नन्य, य धानन्य, ने व नोतन्य नोधनन्य ॥ अष्य वचन १ एकाचन, य दित्यत, ने

१ चारित्र धर्म (बत पद्मस्काण करवा) नी झतिशे झिनिलापा, ने १ देव गुरु प्रमुख उत्तम पुरुपोनी वैयावृत्य करवामां सावधान॥ तिथैच पंचेष्टिना त्रण नेद. १ जलचर, थलचर, मे असत्य नापा, र मिश्र नापा, ने ४ व्यवहार नापा॥ ज्यार झनुयोग. १ चरण करणा-नुयोग, र इञ्यानुयोग, र धर्मकथानुयोग, ने ४ गितानुयोग ॥ ज्यार प्रमाता. १ प्रत्यक् ज्यार कपाय. १ क्रोध, १ मान, १ माया, ने ४ लोन॥ज्यार नाषा. १ सत्य नाषा, १ कमं जूमिना, १ अकमं जूमिना, ने १ अंतरद्वीपना॥ बोल ४ थो. श्वेचर ॥ मनुष्यना त्राण नेद. १

र तिर्थंच, र मनुष्य, ने 8 देवता॥ च्यार ध्यान. १ आर्ना ध्यान, र रोष्ट्र ध्यान, र धर्मे ध्यान, ने 8 ग्रुश्चर्येण ध्यान, ने 8 ग्रुक्त ध्यान॥ च्यार वेद. १ क्यावेद, र यजुवेद, र सामवेद, ने 8 ज्युश्चर्येण वेद ॥ च्यार प्रकारनी वृध्व. १ जत्पातकी, २ विनयकी, २ कार्मेणकी, ने 8 परिणामकी ॥ प्रमाण, १ अनुमान प्रमाण, १ उपना प्रमाण,ने ४ आगम प्रमाण ॥ च्यार गति. १ नरक

च्यार प्रकारनी स्त्रीयो. १ पद्माणी, १ हंसाणी, १ वित्राणी,ने ४ शंखणी ॥ च्यार तीर्थे. १ साधु,

य साध्वी, र आवक, ने ध आविका ॥ च्यार प्रकारनी क्या. १ आक्रिपिणी, शिवक्रिपिणी,

अपार निकेषा १ नाम, १ स्थापना, ३ क्टम, ने ४ नाव ॥ च्यार श्रसंत वर्षा १ नाहण, १ १ रह्म १ वर्षा १ मान, १ राष्ट्र, १ वर्षा १ राष्ट्र १ वर्षा १ वर् सिकतूर कसाइ॥ न्यार प्रत्येक बुद १ करकनु, २ डम्मुढ, २ निम, ने धनिमाइ॥ ज्यार प्रकारनो धर्म १ झाचार धर्म, २ दया धर्म, ३ क्षिया वर्म, ने॥ यस्तु धर्म।। धर्मना ज्यार-१ नारकीना जीरने महावेदना, ने खरप निद्धारा जाएवी १ साधुने महावेदना, ने महा निर्झेरा गज्मुकुमारनी पेठे,३देवताने खत्स वेदना,ने थल निर्झरा,ने धसेतेशी करणे न कारण १ दान, म सील, न तप ने ध नामना॥ १ स्टब्स, १ सेन, १ काल, ने ध नाम थे ह निवंदिनी, ने ध सरोदिनी ॥ च्यार प्रकारतु छादन र तीर्यकर छादन, य गुरु छादन, है हस्वामी छादन, ने ध जीव छादना। च्यार विकथा र खीं कथा, यत्तक कथा, र देश कथा, ने ध राज कथा॥ न्यार जातिना देवता १ जवनपति, ४ पाण्ड्यतर, ३ जोतिपी, ने ध येमानिक॥ न्यार प्रकारना ष्याहार १ ष्यान, १ पान, २ खादिम, ने ध स्पादिम॥ प्रहादन चक्रवर्नी व्यायमीने द्याया,ते हिरिकेशी छाएगार ने ध छापमीने छापम्या,ते का

ग्रारंनमां वर्ततोथको. १ महापरिग्रहमां व० १ पंचेष्ट्यजीवोनो वथ करतोथको,ने ४ मां-प्रकारे जीव मनुष्यायु बांधे. १ जङ्क प्रकतिये वर्नतो, १ विनित प्रकतिये वण १ दयासिहि-वासुदेव ॥ मनुष्यनी चार आवस्था. १ गर्नावस्था, १ वाल्यावस्था, ३ थीवनावस्था,ने ४छ-आहार करतो थको।। ज्यार प्रकारे जीव तियैचायु बांधे. १ अल्प माया करवाथी, प शूर पुरुषः १ क्तमा शूर अरिहंत, १ तप शूर अणागार, ३ दान शूर वेश्रमण,ने ४ युष्ट शूर तत्वनो यथाथं रीते झभ्यास तथा विचार करवो, १ थाचायं, जपाध्याय, ने साधु आदिक साध्वी) र नामिल आवक, ने ४ सर्वेश्री आविका ॥ ४ दर्शन, १ चक्षु दर्शन, १ अचक्ष र्शन, र अवधि द्रीन, ने ४ केवल द्रीन ॥ ज्यार प्रकारनी सदत्याा. १ जीवादिक नव वेशेष माया करवाथी, ३ अलीक वोजवाथी, ने ४ क्डां तोज कूडां माप करवाथी. ॥ ज्यार १ देश संयममां वर्तवे करा, ३ बाल तपे करी, ने ४ अकाम निर्जाराए करी ॥ ज्यार प्रकारना ज्वस्या ॥ ध अंतिम(बेह्नो)चतुर्विय संषः १ श्री इःप्रसह याचार्य, १ फल्गुश्री आयो, तपएो व० ने ४ मत्तर राहितपएो व० ॥ चार प्रकारे जीव देवायु बांधे. १ त्तराग संयमे करी, ोदमे गुणवाणे महानिद्धारा, ने अल्प वेदना. ॥ ज्यार प्रकारे जीव नरकायु बांधे ॥ १

नी सेवा करवी, वृ समकितथी पहेला एवा जे पासज्ञादिक, तेमनो सग करवी नहीं, ने ध खन्यवरोनी (मिष्याहिष्टि) नो सग करवो नहीं ॥ ध यथ तरना ज्यार नेव १ प्रकृति वथ, वृ स्थितिवय, २ खनुत्राग वथ, ने ४ प्रदेश वथा। मोक्ष तत्वना ज्यार नेव १ ज्ञान,

पाच इंडियो १ स्रोत इंदि, १ चक्षु इंदि, ३ प्राण इंदि, ४ रत इंदि, ने ५ एक्ते इंदि ॥ पाच जाति १ एक्रेंदि, १ वेह्दि,१ तेह्दि,४ चाँरिंदिने ५ पचेदि ॥ पाच समवाप १ काज, १ स्प्रताव,नियत(जावी,)४ पूर्वकृत, ने ५ बद्यम ॥ पाच प्रकारना शरीर १ छो। तारिक, रू नेतिय,३आहारक,४ तेजक्ष,ने ५ कामणा ॥ पाच प्रमाद १मद,१विपय,३कपाप, ्रै १ दर्शन, १ चारित्र, ने ४ तप।। पुष्य पाप आश्री चौजनी १ पुष्यानुवधी पुष्य, १ पा-पानुनधी पाप, १ पुष्यानुनधी पाप, ने ४ पापानुवधी पुष्य ॥ देवताने चानवानी च्यार प्र पानुनधी गति १ चना, १ चपला, ३ जयणा, ने ४ वेगा।। ध निच्छा,ने प्यिकद्या ॥ पाच महाव्रत १ प्राखातिषात विरमख, श्रमुषावाद विष ३श्यदत्तादान गेल ए मो

नि॰ ध मेथुन वि॰ ने ५ परिग्रह वि॰ ॥ पाच झनुत्तर विमान १विजय,१विजयत, रेजयत,

ान, र डाह्म, व कपटा, न र मिवाहा ॥ पाव रवावरना गात्रा ६ ४-वाकाव, र अपकाय, हिंदि ११ र तेनकाय, ४ वायुकाय, ने ए वनस्पतिकाय ॥ होते तेनां नाम कहे हे. १ इंडियावर काय, १ हिं ध अपराजित, ने ए सर्वार्थिति ॥ पांच चारित्र. १ सामायिक चारित्र, १ ठेदोपस्थापनीय जजन सिंवाए पारिठाविएया समिति॥ पांच खाचार- १ ज्ञान खाचार, १ दर्शन खा-जन्म, र दीहा, ध केवल, ने ५ निर्वाण ॥ पांच स्थावरनां गोत्रः १ ष्टवीकाय, १ झप्काय, समिति, ३ एपणा समिति, ४ आटानमन नंन निक्पना समिति,ने ५ छबार पासवण ख़े-क्षीचार, र चारित्र माचार, थ तर माचार, ५ ने वीर्य माचार॥ पांच निर्मेष, १ प्रताक. वाण्डपरिहारविज्यस्कि पाण ४ स्दमसंपराय चाण्ने प्ययास्यात चारित्र ॥ पांच प्रकारना वित्र १ प्रतिम ब्हमदेन ७ नम्हेन ३ अप्टिन ४ देनाभिदेन हे ए बानदेन ॥ पांच कान १ मनि र नियुंकि, ३ नाप्य, थ चूर्णी, ने प टीका ॥ पांच समकित. १ जपशम समाकित, शह्न-१ वक्रा, ३ कुगील, ध निर्मिय, ने ए स्तातक ॥ तीर्थकरनां पांच कल्याणक. १ च्यवन, १ हेव.! जियिय ख्टबहेब, १ नरहेब, १ थमेहेब, ८ हेवायिहेब, ने ५ जावहेव ॥ पांच क्वान.! मित हाान, १ अत हाान, १ अविधि हाान, ४ मनःपर्वहाान,ने ५ केवलहाान ॥ पंचार्गा. १ स्त्र, गेपश्म सण श हायिक सण अ सास्वादान सण ने ए वेद्क सण ॥ पांच प्रकारना विषय. र कान्द्र, श रूप, श रस, ध गंथ, ने ए स्पर्श ॥ पांच समिति. १ इयां समिति, श नापा

दान १ अनम, १ सुपात्र, १ आतुक्षा, ८ छिषत, ने ५ कीर्सि॥ पाच प्रकारना पात-। सपीयार काय, ध सुमति यावर काय, ने ए पयावझ थावर काप ॥ त्ता सुखनी ऋजिलापा सखबो, ३ निबंद एटजे सग्रेट, १ काक्टा-जिनमत विमा बीजा मतनी बाठा फ प्रकारना क्रुगोलियो, ध ससतो, ने ५ छह्वदो ॥ पाच प्रकारना डप पाग्बु तथा ग्रींद् पाय तेम कर्नु, ३ तिथैनी सेना कर्नी, ध जिनधर्मने विषे इडता राखर् कुशल होय, थ जिनशासनने -धमना फनने निषे सदेह करवो, ध द्यान्यतिर्धिना प्रतशा, ने प पंचित्र, एम दश नेह । ਰਧਹਾਸ ध नक्त्र, ने ५ तारा ॥ पाच जीयने ड खयी निवारण ~ वनय वयारूल करवा ॥ पाच नक्ष E R जातिमा तिथैच १ जजबर, १ स्थलचर, १ खेचर, तिथंच, शने एम पाच समूर्डिम। । पारंचय ॥ पात्र नूरण । जिनमागैने चड, १ सूप, ३ ग्रह, एटल माह्यना ग्रामा-गतरागना गचनमा सतारमा इ खया जवास रहेबु, RIT ने ५ देन गुरु तथा सिद्धातना कपायन् टाला, १ प्रकारना जोतिपी हेवो र पासद्यो, श बनीयावर काप, १ में ए पांच गर्नेन 4 2 2 2 2 2 2 4 4 7 75 3"

अ अनुकपा ।

**(***

| जा, ने ए आस्तिक्य एटले वीतरागना वचन जपर हह आस्या राखवी॥

अावश्यक. १ सामाथिक, १ च छ विसञ्जो, १ वंदना, ४ पिडिक्रमणं, ५ का छ स्स-

मा, ने ६ पच्साण ॥ उ संघयण. १ वज्ञक्यनाराच, १ क्ष्ननाराच, २ नाराच,

 अर्थनाराच, ए कीलिका, ने ६ वेबर्डु ॥ उ लेश्या. १ कप्ण, १ नील, १ कापाँत, B तेजों ए पद्म, ने ६ शुक्त ॥ व काय. १ पृथ्वीकाय, १ अप्काय, तेउकाय, B

य, ए वनस्पतिकाय, ने ६ जसकाय ॥ ठ संस्थान. १ समचतुरस्न, १ न्यगोध परिमंगल,

र इंड्यि पण ४ श्वासोद्वास पण ए नापा पण ने ६ मनःपर्याप्ति ॥ व खाराः १ सुखम सु-र सादि, ध कुब्ज, ए वामन, ने ६ हुंफक ॥ उ पर्याप्ति. १ झाहार पर्याप्ति, १ हारीर पण

काय, ए पुजासित काय, ने ६ अन्य समय काल ॥ ६ नापा. १ मागधी नाषा, १ प्रा-कृत नापा, र संस्कत नाषा, ध शौरशेनी नापा, ए पैशाची नाषा, ने ६ अपन्नंश नाया॥ लमा, र सुलमा, र सुखम डःखमा, ४ डःखम सुलमा, ५ डःखमा, ने ६ डःखम डःख-मा ॥ उ छ्व्य. १ धर्मासि काय, १ अथर्मासित काय, १ आकाशास्ति काय, ४ जीवास्ति

प जीय दया पातवा माटे, ने ६ अत सलेपणाये शरीर ठाडवा माटे॥ पद्कारक १ क-नी, २ कार्य (कर्मे), १ कारण, ४ सप्रदान, ५ अपादान, ने ६ आधार॥ ठ प्रकारना दिय् क्षाये (कमे), व कारण, ध सप्रदान, ए ज्ञपादान, ने द ज्ञाधार ॥ ठ प्रकारना दिन् १ ज्यपो दिति ज्ञाहार, १ जर्भ दिशि०, १ पूर्व दिशि०, ध पश्चिमदिशि०, प उत्तर दिशिए, ने ६ वृद्धिण दिशिए ॥ समाकतमा ८ अकारमा माना समित प्रमेह्द मादिरने इस्तु मून हे १ था समिकत, प्रमेहद नगर्नु द्वार हे, १ था समिकित, प्रमेनु ना मून पायो है। ॥ श्रा समिकित, प्रमेने रहेवानो आवार हे, ५ था समिकित, प्रमेनु ना हा माटे, ने ६ गुन ष्यान करवा माटे ॥ साधु ३ कारणे आहार न करे १ थराषिक रोग आवे, १ मात्रापने उपसर्ग रूप कारणे, १ तहावर्ष राखवा माटे, ४ तप करवा माटे, दिहि।°, ने द दक्षिण दिखि ।। समक्षितनी छ प्रकारनी नावन। १ आ समक्षित प्रमित्प गृद्धु मूरा हे १ आ समक्षित, प्रमेहप नगरनु द्वार हे, १ आ समक्षित प्रमेहर मुविरनी १ राजाने कारणे, ४ ङ्गाति श्राविकने कारणे, ३ बलयत चोर तथा देवताने कारणे, ५ श्रदवीने विषे आजीविकाने कारणे, ने ६ माता। पिताने कारणे ॥ साधु व कारणे छाहार करे १ क्षुयानी वेदनाये, १ छाचार्याविकती चे गावच् करवाने छापे, १ इर्योसमिति शोधवा माटे, ॥ सयम पातवा माटे, ५ जीवितव्य र जन एउले पात्र ठे, ने ६ या समकित, धमैनो निधि ठे ॥ ठ प्रहारना स्थान १ न्ने ज्ञादिकने कारणे, ध देवताने कारणे, भावकना न खागार 🥇

ठ्य, ए स्याद् अस्ति अवक्तव्य, ६ स्याद् नास्ति अवक्तव्य, ने ७ स्याद् अस्तिनास्ति युग-स्मात् नय, ए अजीव नय, ६ मर्गा नय, ने ७ प्जाश्वाधा नय ॥ सात नरकनां नाम. करेलां आरिहंतनां चैत्य तेमने वे हाथ जोडी वंदन करवुं नहीं, १ पूर्वे कह्या तेमने नमस्कार करवो नहीं, १ तेमनी साथे वोलाज्या विना बोलवुं नहीं, ४ तेमनी साथे यारंवार बोलवुं नहीं, ५ तेमने अशनपानादि धर्मे बुद्धिए आपवुंनहीं,ने इतेमने गंध पुष्पादि मोकलवां नहीं। सप्त नंगी. १ स्याद् आसित, १ स्याद् नास्ति, १ स्याद् आसित नास्ति, ४ स्याद् अयक्त-पत् अवसब्य ॥ सात प्रय. १ आलोक प्रय, १ परलोक नय, १ आदान नय, ४ झक-रत्नप्रता, य शकेराप्रता, व वालुकाप्रता, ध पंकप्रता, ए ध्मप्रता, ६ तमःप्रता, , घमा, य वंशा, र सेता. ध अंजाए।, ए रिठा, ६ मघा, ने ७ माघवती ॥ तेनां सात र ने जीव नित्य हे, र ने जीव कर्मनो कर्ता हे, ध ने जीव पोताना करेतां कर्म प्रत्ये नोग वे, ए ने जीवने मोक हे, ने ६ ने जीवने मोक्तनो छपाय एटले कर्म रहित प्रवानुं हुई सायन हे ॥ ह प्रकारनी जतना. अन्यतीर्षि, अन्यतीर्थिना हेव, अने अन्यतीर्थिए गृहण बोल ७ मां.

ने छ तमस्तम प्रजा ॥ सात व्यत्तन १ जुवार, १ मास, १ मिदेश, ॥ वेदयानी सग, ५

ग्रान सिन्धि । श्रापामा सिन्धि, २ महिमा सिद्धि, ३ सपिमा सिन्धि, ४ गरिमा

वाल ए मो

सिंदि, ५ प्राप्ति सिंदि, ६ प्राकाम्य सिंदि, ७ ईशिरा सिंदि, ने 0

वाशहर

जाति मद, य कुन मद, श बल मद, ध कप मद, प तप मद, ६ श्रुत मद

६ नाम, ७ गोत्र, ने ७ जतराय कर्म

उ जान मद, ने छ

थात मद्

१ नेगम, १ सग्रह, २ ब्य

गरही सेवन ॥ सात नय

तैजसक, ६ झाशरकण,

स्नेहना नयथी.

अने, ज्ञुलाडिकनी

圳

तमुर्गात ॥ झायुष्य घटवाना सात प्रकार ास्तादिकता यातथी, ? अत्यत याहार करवाथी,

तमुद्द्यात, १ कपाय०, १ मरणातिक०, बहार, ध क्जुस्त्र, प् गच्ड, ष

पर्शपी, ने व खासोझास रुपवापी॥

परावातयी, ।

तमनिरूढ, ने ७ एवजूत ॥ सात समुद्धात ॥ १

ते जाय ॥ मू० के० ७ ॥ समिकतयारी संग करीजे, जव जय जीति मिटाय; मयाविजय सद्गुरु सेवायी, बोधिबीज सुख पाय ॥ मू० के० ए ॥ इति श्री सप्राय संपूर्णम् ॥ धारे वेज्ञ बनाय, शियाल सुत पिए। सिंह न होवे, शियालपणु नवि जाय ॥ मूण केण ॥॥ ते माटे मूरखयी द्यालगा, रहे ते सुखीया याय, जाबर नूमि बीज न होवे, उलहुं बीज





